देशभक्ति की कविताएं

सम्पादन
नरेंद्र सिंहा

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

(आश्विन–1907) अक्तुबर 1985

प्रकाशन विभाग

मूल्य 16 00

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली–110001 द्वारा प्रकाशित।

विक्रय केंद्र ● प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001
- कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर, बम्बई-400038
- 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069
- एल० एल० आडीटोरियम, 736 अन्नासलै, मद्रास 600002
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना 800004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड त्रिवेंद्रम 695001
- 10 बी० स्टेशन रोड, लखनऊ-226004
- स्टेट आर्किलाजिकल म्यूजियम बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन, हैदराबाद 500004

सम्पादन नरेंद्र सिन्हा

भारत सरकार मुद्रणालय, गंतोक द्वारा मुद्रित।

सम्पादकीय

हिंदी की राष्ट्रीय कविताओ का यह सकलन पाठको की सेवा में प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त हप एव सतोष का अनुभव हो रहा है। इसमें भारतेन्दु काल से आज तक के 112 कवियो की एक एक प्रतिनिधि रचना सकलित की गई है, जिससे हिंदी कविता की गत शताब्दी के उत्तरार्द्ध से आज तक की विकास यात्रा के विभिन्न पडावो का सकेत मिलता है।

लगभग 100 वप की इस लम्बी अवधि में जिन प्रमुख कवियो ने राष्ट्रीय रचनाए की, उनकी रचना की बानगी प्रस्तुत करने की तो हमारी कोशिश रही ही है, हमारी कोशिश यह भी रही है कि राष्ट्रीय स्वातत्र्य आदोलन के दौरान जो रचनाए अत्यत लोकप्रिय रही, यथासम्भव उनका समावेश हो जाए। हम यह तो दावा नही करते कि हम अपने इन दोनो उद्देश्यो को प्राप्त करने में पूरी तरह सफल रहे हैं लेकिन हमें इतना सतोष अवश्य है कि हम सकलन के लिए कुछ ऐसी रचनाए भी जुटा पाए है जो अपने समय में तो जनता का कण्ठहार बन गई थीं, लेकिन अब दुलभ हो चुकी है। इस क्रम में हमें यह भी पता चला कि 'अछूत की आह' कविता जो अब तक सवत्र स्वनामधन्य आलोचक स्व० आचाय रामचन्द्र शुक्ल के नाम से प्रकाशित होती रही है, वह वस्तुत किसी अन्य रामचन्द्र शुक्ल की रचना है। यह रचना सकलन मे शामिल की गई है तथा 'कवि-परिचय' में उपयुक्त स्थान पर रचनाकार का सक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

रचनाओं का क्रम रचयिता के जन्म-वर्ष के अनुसार रखा गया है। सभी कवियों—विशेषतः दिवंगत कवियों के जन्म-वर्ष तथा चित्र जुटा पाना अपने-आप में एक कठिन कार्य था। हमें संतोष है कि हम इसमें बहुत-कुछ सफल रहे हैं।

इस संकलन के प्रकाशन में हमें आचार्य क्षेमचन्द्र "सुमन" का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ है। आशा है यह संकलन हमारी युवा पीढ़ी के लिए विशेष रूप से प्रेरक सिद्ध होगा।

— नरेन्द्र सिन्हा

भूमिका

हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप और विकास को नापने जोखने के लिए हमें अठारहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रारभ भारतीय धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक नव जागरण के उस युग की ओर लौटना होगा जिसका अग्रदूत होने का श्रेय राजा राममोहन राय को प्राप्त है। राजा राममोहन राय से प्रारभ इस राष्ट्रीय पुनर्जागरण में केशवचन्द्र सेन, रामकृष्ण परमहस, स्वामी विवेकानन्द, लोकमान्य तिलक, स्वामी दयानन्द सरस्वती, एनी बेसेंट, सी० एफ० एण्ड्रूज आदि अनेक महापुरुषो ने अपने-अपने ढग से सहयोग देकर जागति का भैरव शख फूका। लेकिन इन सभी महानुभावो में, हिन्दी की दृष्टि से, स्वामी दयानन्द की भूमिका अत्यत महत्वपूर्ण है। स्वामी जी ने 1875 में बम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना करके पूरे देश, विशेषत उत्तर भारत में, सामाजिक तथा राजनीतिक जागृति की लहर दौडा दी। उनका जन्म यद्यपि गुजरात मे हुआ था, तथापि उन्होने राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी की महत्ता को स्वीकार कर इस भाषा को ही अपने धर्म प्रचार का माध्यम बनाया। वैसे, इससे भी पूर्व सन् 1857 की क्रांति के समय हिन्दी भाषा ही क्रांति की उद्घोषिका बनी थी, किन्तु आगे चलकर दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलकर हमारे देश के तत्कालीन साहित्यकारो और सुधारको ने हिन्दी को ही अपनी भाव-धारा के प्रकटीकरण का माध्यम बनाया। आर्यसमाज ने जहा समाज-सुधार के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कार्य किया वहा देश को विदेशी दासता के चगुल से मुक्त कराने में भी इसकी भूमिका कम महत्वपूर्ण नही रही। इसकी स्थापना के ठीक 10 वर्ष बाद 'भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस' की सस्थापना हुई, जिसके माध्यम से भारत को ब्रिटिश दासता से मुक्ति दिलाने हेतु 'राजनीतिक चेतना' का स्फुरण हुआ, किन्तु उसमें भी वह उग्रता नही थी जिसकी सकल्पना महर्षि दयानन्द

सरस्वती ने की थी और जिसका सूत्रपात सन् 1857 की क्रांति के समय मेरठ की पावन भूमि पर हुआ था।

जिन दिनों 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की संस्थापना हुई थी उससे पूर्व ही भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण की भूमिका बना दी थी और उसी वर्ष (सन 1885 में) उन्होंने इस असार संसार से विदा भी ले ली थी। उन्होंने जहां

"प्यारी अमी की कटोरिया सी
चिर जीवो सदा विक्टोरिया रानी'

जैसी राज भक्ति-परक रचनाएं की थी वहां भारत की जनता की दिन प्रति दिन होने वाली हीन दशा पर भी अपनी वेदना इस प्रकार अभिव्यक्त की थी

रोवहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई।
हा हा ! भारत-दुर्दशा न देखी जाई।।

× × ×

अंगरेज राज सुख-साज सजै सब भारी।
पै धन बिदेस चलि जात इहै अति ख्वारी।।

उन्होंने न केवल भारत की दुर्दशा पर आंसू बहाए थे, प्रत्युत समस्त देश वासियों का उद्बोधन भी इन शब्दों में किया था

जागो जागो रे भाई !
सोअत निसि दिन आयु गंवाई जागो जागो रे भाई।
अबहू चेति पयरि राखो किन, जो कछु बची बडाई।
फिर पछनाए कछु नहिं ह्वैहै, रहि जैहौ मुह बाई।।

भारतेंदु-काल का कवि जहां समाज की दीन-हीन दशा पर क्षुब्ध था वहां उनके परवर्ती काल के कवियों में उस चेतना ने और भी मुखर होकर देश को एक सर्वथा नई दिशा दी।

महर्षि दयानन्द ने जहा आर्यसमाज के माध्यम से देश में राजनीतिक चेतना को अकुरित किया था वहा भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के इस उद्घोष ने अपने परवर्ती कवियो को राष्ट्रीयता की वह परिभाषा दी थी, जिसके आलोक में देश के बहुमुखी विकास का द्वार उद्घाटित हो सके। भारतेन्दु ने जहा भारत का अनेक रूपो में देखा था वहा उनके बाद के कवियो ने 'राष्ट्र' और 'राष्ट्रीयता' को सही परिप्रेक्ष्य में देखकर 'राज भक्ति' को 'राष्ट्र भक्ति के रूप में जाचा परखा था। भारतेन्दु से पूर्व की 'राष्ट्रीयता' जहा धर्म, जाति और प्रदेश की परिधि तक सीमित थी वहा उनके बाद के कवियो ने उसे 'देश भक्ति' का मूल आधार माना था। जिस कविता में समग्र राष्ट्र की चेतना प्रस्फुटित हो वास्तव में वही राष्ट्रीय कही जा सकती है। हमारी इस धारणा का सही प्रतिफलन भारतेन्दु के परवर्ती कवि श्री श्रीधर पाठक की 'हिन्द वन्दना' नामक रचना मे इस प्रकार हुआ था

जय जयति सदा स्वाधीन हिन्द,
जय जयति जयति प्राचीन हिन्द।

भारत की वन्दना में लिखित इस कविता में पाठक जी ने जहा उसकी सास्कृतिक गरिमा के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की है वहा श्री मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी 'जय जय भारत माता' कविता मे पराधीनता के पाशविक पाश से मुक्ति पाने की अपनी अदम्य लालसा को इन पक्तियो मे प्रकट किया है

तेरे प्यारे बच्चे हम सब,
बन्धन में बहु बार पडे
जननी तेरे लिए भला हम,
किससे जूझे, कब न अडे ?
भाई भाई लडे भले ही,
टूट सका कब नाता ?
जय – जय भारत माता।

भारत राष्ट्र की वन्दना हिन्दी के कवियो ने जहा अनेक रूपो में की है वहा भारत के राजनीतिक क्षितिज पर महात्मा गाधी के उदय ने उसे और भी परिष्कृत तथा उन्नत किया। गाधीजी के 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' से प्रभावित होकर जहा अनेक कवियो ने जनता में स्वदेश प्रेम की भावना जगाई वहा देश के असख्य नवयुवको को बलि पथ का पथिक भी बनाया। गाधीजी के इस आन्दोलन से प्रभावित श्री रामनरेश त्रिपाठी ने भारतीय युवको की भावना को जहा इन पक्तियो में रूपायित किया

मै अमर हू, मौत से डरता नही
सत्य हू मिथ्या डरा सकता नही
मै निडर हू शस्त्र का क्या काम है—
म अहिंसक हू न कोई शत्रु है।

वहा गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' यह घोषणा करने से न चूके

हे माता वह दिन कब होगा
तुझ पर बलि-बलि जाऊगा।
तेरे चरण-सरोरुह में मैं
निज मन मधुप रमाऊगा ?
कब सपूत कहलाऊगा ?

सनेही' जी की इन भावना का पूर्णत प्रतिफलन 'एक सत्याग्रही वीर की प्रतिज्ञा' के रूप में श्री माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी कविता में इस प्रकार दिया ह

चलो, हम आहुति दे दें प्राण
न होगा कम यत्न बिन त्राण
करें कल्याण राष्ट्र निर्माण

ध्वनित हो वन्देमातरम गान
करेंगे तन मन धन बलिदान
सुदृढ तैंतीस कोटि सन्तान
पूर्ण हो विजय-प्रण भगवान
जपेंगे जय जय मन्त्र महान।

चतुर्वेदी जी ने जहां देश के युवकों को राष्ट्र की वेदी पर अपनी आहुति देने का पावन निमन्त्रण उक्त पंक्तियां में दिया है वहां अपनी 'पुष्प की अभिलाषा' नामक रचना में उस भावना को इस प्रकार प्रकट किया है

चाह नहीं मैं सुर-बाला के गहनों में गूथा जाऊं
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊं
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ू भाग्य पर इठलाऊं
मुझे तोड लेना वनमाली उस पथ पर देना तू फेंक
मातृभूमि पर शीश चढाने जिस पथ जायें वीर अनेक

चतुर्वेदी जी ने भारतीय युवकों की मातृभूमि पर शीश चढाने की इस भावना का अंकन 'पुष्प' के माध्यम से जिस प्रकार किया है, लगभग उसी प्रकार की कामना श्री जयशंकर प्रसाद की इन पंक्तियों में मुखरित हुई है

जियें तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष

इसी प्रकार कविवर सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने जहां 'भारती जय विजय करे' रचना लिखकर भारत माता की वन्दना की है वहां सुमित्रानन्दन पन्त ने उसे ग्राम-वासिनी के रूप में इस प्रकार चित्रित किया है

खेतों में फैला है श्यामल, धूल भरा मैला सा आंचल
गंगा-यमुना में आंसू जल, मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी।
भारत माता ग्राम-वासिनी।

प्रख्यात कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपनी 'भारतवर्ष हमारा है' नामक रचना में जो घोषणा की थी उससे तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति एवं वातावरण की यथातथ्य झाकी मिल जाती है। वे लिखते हैं

> कोटि कोटि कण्ठो से निकली, आज यही स्वर धारा है।
> भारतवर्ष हमारा है यह, भारतवर्ष हमारा है।।
> है आसन्न भूत अति उज्ज्वल, है अतीत गौरवशाली।
> औ छिटकी है वर्तमान पर, बलि के शोणित की लाली।।
> नव ऊषा सी विहस रही है, विजय हमारी मतवाली।
> हम मानव को मुक्त करेंगे, यही विधान हमारा है।।

मानव मुक्ति' की यह छटपटाहट श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' के काव्य में और भी उदग्रता से अभिव्यक्त हुई है। उन्होने तो यहा तक घोषणा कर दी

> सदियो की ठडी बुझी राख सुगबुगा उठी,
> मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है।
> दो राह समय के रथ का घर्घरनाद सुनो—
> सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।।

जहा दिनकर ने ब्रिटिश शासको को सिंहासन खाली करने की चेतावनी दी थी वहा श्री सोहनलाल द्विवेदी ने देश की बलिवेदी पर शीश चढाने वाले अगणित वीरो की भावना को इस प्रकार व्यक्त किया है

> हम मातभूमि के सैनिक है आजादी के मतवाले है।
> बलिवेदी पर हस हस करके, निज शीश चढाने वाले है।
> केसरिया बाना पहन लिया तब फिर प्राणो का भेद कहा ?
> जब बने देश हित सन्यासी, नारी-बच्चो का मोह कहा ?

जननी के वीर पुजारी ह, सवस्व लुटाने वाले ह।
इस मातृभूमि के सैनिक हैं, आजादी के मतवाले हैं॥

एक ओर श्री द्विवेदी जी जहा असख्य युवको को वलिवेदी पर शीश चढाने का निमत्रण देते हुए उन्हें केसरिया वाना पहना रहे थे वहा सुभद्राकुमारी चौहान भारतीय नारी की ऊर्जा को इस प्रकार प्रकट कर रही थी

सिंहासन हिल उठे, राजवशा ने भृकुटी तानी थी
बूढे भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी
दूर फिरगी को करने की सबने मन में ठानी थी

हमारे इन कविया ने भारत के स्वातत्र्य-सग्राम में अपनी प्रतिभा और कलम का पूण प्रयोग किया। जहा महात्मा गाधी के आह्वान पर समस्त देश ब्रिटिश शासन से लोहा लेने मे सलग्न था वहा हमारे कवि भी किसी से पीछे नही रहे और उन्होने देश के वातावरण को इस योग्य बनाया कि एक दिन अग्रेजा को भारत छोडकर जाना ही पडा।

स्वतत्रता के उपरात हमारे देश के नेताओ के सामने जहा अनेक समस्याए थी वही स्वतत्रता की रक्षा करने के लिए उन्हें देश को तैयार भी करना था। जहा देश में गरीबी भुखमरी, साम्प्रदायिकता तथा छूत छात आदि की अनेक विभीषिकाए मुह वाए खडी थीं वही विश्व मच पर भी भारत को अपना गौरव प्रतिष्ठित करना था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के इन 36 वर्षों में हमारे देश का जो बहुमुखी विकास हुआ है उसमें जहा हमारे राष्ट्र के नेताओ और उन्नायको का हाथ ह वहा हमारे कवि और साहित्यकार भी किसी से पीछे नही रहे। भारत की स्वतत्रता की प्राप्ति और उसके उपरात उसकी रक्षा के लिए देश की जनता को प्रेरणा एव प्रोत्साहन देने में हमारे कविया की प्रमुख भूमिका रही ह। उन्होने केवल प्रेम और श्रृगार

की ही रचनाए नही की प्रत्युत देश म जीवन, जागृति, बल तथा बलिदान की पावन भावनाओ का उद्बोधन देने में वे सदा सर्वदा अग्रणी रहे ।

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि भारत सरकार के प्रकाशन विभाग ने 'देशभक्ति' की रचनाओ का यह सकलन प्रकाशित करने का अभिनन्दनीय काय किया है। इस सकलन की कविताओ में जहा देश की स्वाधीनता के लिए किये गए अथक सघष की झाकी मिलती है वहा स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के देश के नव निर्माण का सही रूप भी देखने को मिल जाता है। इस सकलन की एक विशेषता यह भी है कि विभिन्न कालो और विचार-धाराओ में देश की स्वतन्त्रता तथा उसके उत्कष के लिए हिन्दी के कवियो की प्रतिभा किन किन रूपो म प्रस्फुटित हुई है, उसका सही स्वरूप हमे देखने को मिल जाता है। हमारे देश के राष्ट्रीय जागरण में जो-जो राजनीतिक मोड आए है यह सकलन उनका सही दपण है। सामाजिक, सास्कृतिक, शक्षिक, बौद्धिक और राजनीतिक चेतना के विभिन्न आयाम इन कविताओ में रूपायित हुए है। इन रचनाओं में जहा देश के असख्य शोषित, पीडित और दलित प्राणियो की मनोभावनाओ का चित्रण मिलेगा वहा देश की रक्षा के प्रति मर मिटने की अदम्य कामना तथा बलिदानी वीरो की गौरव गाथा भी पढने को मिलेगी। सामाजिक शोषण, छूत छात की भावना और साम्प्रदायिक अलगाव के प्रति गहन असन्तोष भी इन रचनाओ में पूणत प्रस्फुटित हुआ है।

इस सकलन की एक विशेषता यह भी है कि इसमें समाविष्ट रचनाओ के माध्यम से हमारे पाठक जहा भारतीय राष्ट्रीय जागरण के विभिन्न पडावो के दशन कर सकेंगे वहा इन रचनाओ के द्वारा हिन्दी के राष्ट्रीय काव्य की विकास यात्रा को भी वे भली भाति जान-समझ सकेंगे। इस सकलन में प्राय वे सभी रचनाए समाविष्ट की गई ह जो अतीत में हमारे स्वाधीनता-सग्राम की प्रेरणा बिन्दु रही थी और जो भारत के असख्य तरुणो के कण्ठ की भैरवी वाणी बनी थी। ऐतिहासिक उपादेयता की दृष्टि से भी इस सकलन का अपना एक विशेष महत्त्व है।

मुझे यह आशा ही नहीं, प्रत्युत पूर्ण विश्वास है कि यह संकलन जहाँ हमारे राष्ट्रीय काव्य की अमूल्य धरोहर सिद्ध होगा वहाँ देश की नई पीढ़ी इससे प्रचुर प्रेरणा भी ग्रहण करेगी।

अजय निवास, दिलशाद कालोनी,
शाहदरा, दिल्ली–110032

—क्षेमचन्द्र 'सुमन'

अनुक्रम

—1 Prod/ND/82

पृष्ठ

पृष्ठ

पृष्ठ

पृष्ठ

पृष्ठ

भारत दुर्दशा

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

रोवहु मब मिलि कै ग्रावहु भारत भाई ।
　　हा हा ! भारत दुदशा न देखी जाई ।।

मब के पहिले जेहि ईश्वर घन वल दीनो ।
　　सव के पहिले जेहि मम्य विघाता कीनो ।।

सब के पहिले जो रूप रग रस भीनो।
　　सव के पहिले विद्याफन निज गहि लीनो ।।

ग्रब सब के पीछे सोई परत लखाई ।
　　हा हा ! भारत दुदशा न देखी जाई ।।

ग्रब जह देखहु तहा दु खहि दु ख दिखाई ।
　　हा हा ! भारत दुदशा न देखी जाई ।।

लरि बदिक जन डुबाई पुस्तक सारी ।
　　करि वलह बुलाई जवन सैन पुलि भारी ।

तिन नासी बुधि बल विद्या धन बहु बारी ।
छाई अब आलस कुमति कलह अँधियारी ।।

भय अंध पंगु सब दीन हीन बिलखाई ।
हा हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई ।।

अँगरेज राज सुख साज सजे सब भारी ।
पै धन बिदेश चलि जात इहै अति ख्वारी ।।

ताहू पै महँगी काल रोग बिस्तारी ।
दिन दिन दूने दुख ईस देत हा हा री ।।

सब के ऊपर टिक्कस की आफत आई ।
हा हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई ।।

अब काल पड़ा है भारी

—बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

भागो भागा अब काल पडा है भारी ।
भारत पैं घेरी घटा विपत की कारी ।

सब गये बनिज ब्यापार इतै सौं भागी ।
उद्यम पौरुष नसि दिया वनाय अभागी ।।

अब बची खुची खेती हू खिसकन लागी ।
चारहु दिसि लागी है महगी की आगी ।।

सुनि चिल्लाए सब परजा भई भिखारी ।
भागा भागो अब काल पडा है भारी ।।

हम बनिज करैं पर उलटे हानि उठाव ।
हम उद्यम करके लागत भी नहिं पावैं ।।

हम खेती करके बेगि बिसार गवाव ।
औ करजा करि सरकारी जमा चुकाव ।।

फिर खाय कहा से यह नहिं जाय विचारी ।
भागो भागो अब काल पड़ा है भारी ।।

हम करैं नौकरी बहुत, तलब कम पाते ।
थे किसी तरह से अब तक पेट जिलाते ।।

इस महगी से नित एकादशी मनाते ।
लड़के बाले सब घर में चिल्लाते ।।

ह देखो हाहाकार मचो दिसि चारो ।
भागो भागो अब काल पड़ा है भारी ।।

अब नही यहा खाने भर को भी जुरता ।
नहिं सिर पर टोपी नही बदन पर कुरता ।।

है कभी न इसमें आधा चावल चुरता ।
नहिं साग मिले नहिं कन्दमूल का भुरता ।।

नहिं जात भूख की भई पीर सभारी ।
भागो भागो अब काल पड़ा है भारी ।।

विवादी बढ़े है यहां कैसे कैसे

—प्रतापनारायण मिश्र

विवादी बढे है यहा कैसे कैसे
'कलाम आते है दरमिया कैस कैसे"

बने पढ के गौराग भाषा द्विजाती ।
"मुरीदाने पीरे मुगा क्से कैसे

बसो मूखते देवि, आर्यों के जी में ।
'तुम्हारे लिये है मका कैसे कैसे' ।।

अनुद्योग आलस्य सतोप सेवा ।
'हमारे भी है मिहरबा कैसे कैसे" ।।

विधाता ने या मक्खियां मारने को ।
"बनाये है खुशरू जवा कैसे कैसे' ।।

अभी देखिये क्या दशा देश की हो ।
"बदलता है रग आसमा कसे कैसे" ।

है निगध इस भारती-वाटिका के ।
"गुलो लाल औ अरगवा कैसे कैसे' ।।

हमे वह दु खद हाय भूला हूँ जिसने ।
"तवाना किये नातवा कसे कैसे" ।।

प्रताप' अब तो होटल में निलज्जता के ।
"मजे लूटती है जवा कैसे कैसे ' ।।

दिन फेर पिता

—नाथूराम शकर शर्मा

द्विज वेद पढ़ै सुविचार बढ़ै बल पाय चढ़ै सब ऊपर को ।
अविरुद्ध रहै ऋजुपथ गहै परिवार कहे वसुधा भर को ।।
ध्रुव धम धर पर दु ख हरै तन त्याग तरै भवसागर को ।
दिन फेर पिता, बर दे सविता, कर दे कविता कवि "शकर" का ।।

विदुषी उपजैं क्षमता न तजैं व्रत धार भज सुकृती बर को ।
सधवा सुधर बिधवा उबरै सकलक करै न किसी घर को ।।
दुहिता न बिकै कुटनी न टिकै कुलबोर छिक तरस दर को ।
दिन फेर पिता, बर दे सविता, कर दे कविता कवि "शकर" को ।।

महिमा उमडे लघुता न लडे जडता जकडे न चराचर को ।
शठता सटके मुदिता मटके प्रतिभा झटके न समादर को ।
बिकसे विमला शुभ कम कला पकडे कमला श्रम के कर को ।
दिन फेर पिता बर दे सविता, कर दे कविता कवि "शकर' को ।।

मत जाल जलें छलिया न छले कुल फूल फलें तज मत्सर को ।
अघ दम्भ दबे न प्रपच फबें गुनमान नवें न निरक्षर को ।।
सुमरें जप से निरखें तप से सुरपादप से तुझ अक्षर को ।
दिन फेर पिता बर दे सविता, कर दे कविता कवि "शकर' को ।।

भारत गीत

—श्रीधर पाठक

जय जय प्यारा जग से न्यारा,
शोभित सारा देश हमारा
जगत मुकुट, जगदीश दुलारा
जग सौभाग्य सुदेश ।
जय जय प्यारा भारत-देश ।

प्यारा देश जय देशेश
जय अशेष सदय विशेष
जहाँ न संभव अघ का लेश
केवल पुण्य प्रवेश ।
जय जय प्यारा भारत-देश ।

स्वर्गिक शीश फूल पृथ्वी का
प्रेम मूल प्रिय लोकत्रयी का,
सुललित प्रकृति नटी का टीका

ज्यो निशि का राकेश ।

जय जय प्यारा भारत-देश ।

जय जय शुभ्र हिमाचल शृंगा,
कलरव निरत कलोलिनि गंगा,
भानु-प्रताप चमत्कृत अंगा,

तेज-पुंज तपवेश ।

जय जय प्यारा भारत देश ।

जग में कोटि-कोटि जुग जीवे,
जीवन-सुलभ अमी रस पीवे,
सुखद वितान सुकृत का सीवे,

रहे स्वतंत्र हमेश ।

जय जय प्यारा भारत-देश ।

3—1 Prod/ND/82

कर्मवीर

—अयोध्या सिह उपाध्याम 'हरिग्रोध'

देखकर जो विघ्न-बाधाग्रा को धबराते नही ।
भाग पर रह करके जो पीछे हैं पछताते नही ।।

काम कितना ही कठिन हो पर जो उकताते नही ।
भीड पडने पर भी जो चचल ह दिखलाते नही ।।

होते ह यक ग्रान में उनके बुरे दिन भी भले ।
मब जगह सब काल म रहते हैं वे फूले फले ।।

ग्राज जो करना है कर देते हैं उमको ग्राज ही ।
सोचते कहते ह जो कुछ कर दिखाते है वही ।।

मानते जी की ह सुनते हैं सदा सब की कही ।
जो मदद करते ह ग्रपनी इम जगत में ग्रापही ।।

भूल कर वे दूमरे का मुह कभी तकते नही ।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नही ।।

जो कभी अपने समय को यो बिताते हैं नही ।
काम करने की जगह बात बनाते ह नही ।।

आज कल करते हुए जो दिन गवाते है नही ।
यत्न करने में कभी जो जी चुराते ह नही ।।

बात है वह कौन जो होती नही उनके लिए ।
वे नमूना आप बन जाते है औरा के लिए ।।

गगन को छूते हुए दुगम पहाडा के शिखर ।
वे घने जगल जहा रहता है तम आठो पहर ।।

गजती जल-राशि की उठती हुई ऊची लहर ।
आग की भयदायिनी फैली दिशाग्रा में लवर ।।

ये कपा सकती कभी जिसके कलेजे को नही ।
भूल कर भी वह नही नाकाम रहता है कही ।।

चिलचिलाती धूप को जो चादनी देवें बना ।
काम पडने पर करे जो शेर का भी सामना ।।

हसते हसते जो चबा लेते ह लोहे का चना ।
"है कठिन कुछ भी नही" जिनके है जी मे यह ठना ।।

कोस कितने हू चलें पर वे कभी थकते नही ।
कौन सी है गाठ जिसको खोल वे सकते नही ।।

ठीकरी को वे बना देते ह सोने की डली ।
रेग को भी कर दिखा देते ह वे सुदर गली ।।

वे बबूला में लगा देते है चपे की कली ।
काक को भी वे सिखा देते ह कोकिल-काकली ।।

ऊसरो में हृ खिला देते अनूठे वे कमल ।
वे लगा देते है उकठे काठ मे भी फूल फल ।।

काम को आरभ करके या नही जो छोडते ।
सामना करके नही जो भूल कर मुह मोडते ।।

जो गगन के फूल बाता से वृथा नहि ताडते ।
सपदा मन से करोडो की नही जो जोडते ।।

बन गया हीरा उन्ही के हाथ से है कारबन ।
काच को करके दिखा देते हृ वे उज्ज्वल रतन ।।

पवतो को काट कर सडके बना देते ह वे ।
सैकडो मरुभूमि में नदिया वहा देते ह वे ।।

अगम जलनिधि-गभ में बेडा चला देते हृ वे ।
जगलो में भी महा मगल रचा देते है वे ।।

भेद नभतल का उन्होने है बहुत बतला दिया ।
ह उन्होने ही निकाली तार की सारी क्रिया ।।

काय-थल को वे कभी नहि पूछते "वह है कहा" ।
कर दिखाते हृ असम्भव को वही सभव यहा ।।

उलझनें आकर उन्हे पडती है जितनी ही जहा ।
वे दिखाते है नया उत्साह उतना ही वहा ।।

डाल देते हृ विरोधी सैकडा ही अडचने ।
वे जगह से काम अपना ठीक करके ही टलें ।।

जो रुकावट डालकर हावे कोई पवत खडा ।
तो उसे देते हैं अपनी युक्तियो से वे उडा ।।

बीच में पडकर जलधि जो काम देवे गडबडा ।
तो बना देगे उसे वे क्षुद्र पानी का घडा ।।
वन खगालेगे करेगे व्योम मे बाजीगरी ।
कुछ अजब धुन काम के करने की उनमे है भरी ।।
सब तरह से आज जितने देश ह फूले फले ।
बुद्धि, विद्या, धन विभव के हैं जहा डेरे डले ।।
वे बनाने से उन्ही के बन गये इतने भले ।
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतो के पले ।।
लोग जब ऐसे समय पाकर जनम लेंगे कभी ।
देश की औ जाति की होगी भलाई भी तभी ।।

मातृ-भूमि-वन्दना

—सत्यदेव परिव्राजक

ऐ मात भूमि तेरे चरणा मे सिर नवाऊ,
मैं भक्ति भेंट अपनी तेरे चरण में लाऊ ।

माथे पै तू हो चन्दन छाती पे तू हो माला,
जिह्वा में गीत तू हो म तेरा नाम गाऊ ।

जिस से सुपूत उपजे श्रीराम कृष्ण जैसे,
उस तेरी धूलि का मै निज शीश पै चढ़ाऊ ।

मानी समुद्र जिस की धूली का पान करके,
करता है मान तेरे उस पैर को मनाऊ ।

वे देश मान वाले चढ कर उतर गये सब,
गोरे रहे न काले तुझको ही एक पाऊ ।

सेवा में तेरी सारे भेदा को भूल जाऊ
वह पुण्य नाम तेरा प्रतिदिन सुनू सुनाऊ ।

तेरे ही काम आऊ तेरा ही मन्त्र गाऊ
मन और देह तुझ पर बलिदान मैं चढ़ाऊ ।

भारतभूमि हमारी

—माधव शुक्ल

भारतभूमि हमारी भाई भारतभूमि हमारी ।।

ग्रौर न काई इस मन्दिर का हो सकता ग्रधिकारी,
भारतवासी ही हम इसके रक्षक ग्रौर पुजारी ।
भाई भारतभूमि हमारी ।।

ग्राज जो यह तुम देख रहे हो महले ग्रौर ग्रटारी,
लगा रक्त का गारा इसमें तन की इंट हमारी ।
भाई, भारतभूमि हमारी ।।

तन मन देकर हमने सजायी यह सुन्दर फुलवारी,
फूल सूंघ लो पर न ताडना मर्जी बिना हमारी ।
भाई, भारतभूमि हमारी ।।

जग सर बिच यह नील कमल सम विकसित मुनि-मन हारी,
हम तिसके मधु पीवनहारे कारे भ्रमर सुखारी ।
भाई, भारतभूमि हमारी ।।

रत्नवती इस वसुन्धरा के हम ही भण्डारी,
'माधव' इस यशुमति के सुत हम कृष्ण, गोप, हलधारी ।
भाई, भारतभूमि हमारी ।।

जग भारत का जय-गान करो

—गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'

बन जाय उदार विचार सभी
अनुदार विचार न लाये कभी ।
श्रुति माद भरे शुचि कम करे
'नवरत्न' अपूव उमग धरें ।।

यह आलम फेक रसातल म
पुरुपाथ करे जल मे, थल मे ।
जगदीश्वर जीवन दान करो,
जग भारत का जय-गान करो ।।

सुखकारक सु दर साज धरें,
हरि सम्मुख भेद विचार हरे ।
महके "हम भारत के सुत ह"
नवरत्न' मिलें बस मेल करें ।।

द्विज वेद विचार प्रचार करे,

अपने अपने सब काम करें।

जगदीश्वर जीवन दान करो,

जग भारत का जय-गान करो ॥

हम स्वदेश के प्राण

—गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'

प्रिय स्वदेश है प्राण हमारा,
हम स्वदेश के प्राण ।

आखो म प्रतिपल रहता ह,
हृदयो मे अविचल रहता है
यह है सबल, सबल है हम भी
इसके बल से बल रहता है,

और सबल इसको करना है,
करके नव निर्माण ।
हम स्वदेश के प्राण ।

यही हमें जीना मरना है,
हर दम इसका दम भरना है,
सम्मुख अगर काल भी आये
चार हाथ उससे करना ह,

इसकी रक्षा धम हमारा,
यही हमारा त्राण ।
हम स्वदेश के प्राण ।

जन्म दिया माता-सा जिसने

—मदन द्विवेदी 'गजपुरी'

जन्म दिया माता-सा जिसने किया सदा लालन पालन ।
जिसके मिट्टी जल से ही है रचा गया हम सब का तन ।।

गिरिवर गण रक्षा करते हैं उच्च उठा के शृंग महान ।
जिसक लता द्रुमादिक करते हमको अपनी छाया दान ।।

माता केवल बाल-काल मे निज अकम में धरती हैं ।
हम अशक्त जब तलक तभी तक पालन पोषण करती ह ।।

मात भूमि करती है मेरा लालन सदा मृत्यु पर्यन्त ।
जिसके दया प्रवाह का नहि होता सपने में भी अन्त ।।

मर जाने पर कण देहा के इसमें ही मिल जाते ह ।
हिन्दू जलते यवन इसाई दफन इसी मे पाते ह ।।

ऐसी मातृभूमि मेरी है स्वर्गलोक से भी प्यारी ।
जिसके पद कमलो पर मेरा तन मन धन सब बलिहारी ।।

हमारा प्यारा भारतवर्ष

—लोचनप्रसाद पाण्डेय

हमारा प्यारा भारतवर्ष ।
आदि सभ्यता सद्म, पुण्य का पद्म, विश्व आदर्श ।।

राम-राज-सुख-सेतु, सगर-कृति केतु, प्रजा का हर्ष ।
सच्छासन की सृष्टि, शान्ति सद्वृष्टि, आर्य उत्कर्ष ।।

स्वतन्त्रता की खान, जाति अभिमान, ज्ञान भण्डार,
ऋषि-समाज की, शुभ सुराज की, भूमि शील शृंगार ।।

रवि प्रताप का कवि कलाप का केन्द्र, प्रकृति छवि धाम,
शिव-सुवेश का बल विशेष का देश-तीर्थ अभिराम ।।

दीनबन्धु का दयासिन्धु का प्रेम निकुंज विशाल,
बल निर्बल का, शासन खल का, विश्व सखा गोपाल ।।

मातृभूमि

—मथिलीशरण गुप्त

नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है,
सूर्य चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।
नदियां प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं,
बन्दीजन खग वृन्द, शेष फन सिंहासन है।

करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस देश की।
हे मातृभूमि, तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।

निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है,
शीतल-मन्द-सुगन्ध पवन हर लेता श्रम है।
षड् ऋतुओं का विविध दृश्ययुत अद्भुत क्रम है
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है।

शचि सुधा सींचता रात में, तुझ पर चन्द्र प्रकाश है।
हे मातृभूमि, दिन में तरणि, करता तम का नाश है।

सुरभित, सुन्दर, सुखद सुमन तुम पर खिलते ह,
भाति भाति के सरस, सुधोपम फल मिलते हैं।
ओषधिया ह प्राप्त एक से एक निराली,
खाने शोभित कही धातु वर रत्नो वाली।

जो आवश्यक होते हमे, मिलते सभी पदार्थ हैं।
हे मातभूमि, वसुधा धरा, तेरे नाम यथार्थ हैं।

दीख रही है कही दूर तक शैल श्रेणी।
कही धनावलि बनी हुई है तेरी वेणी।
नदिया पैर पखार रही ह बनकर चेरी,
पुष्पा से तरु राजि कर रही पूजा तेरी।

मदु मलय वायु मानो तुझे, चन्दन चारु चढा रही।
हे मातभूमि, किसका न तू सात्विक भाव बढा रही ?

क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है,
सुधामयी वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है।
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुखहर्त्री है,
भयनिवारिणी शान्तिकारिणी, सुखकर्त्री है।

हे शरणदायिनी देवि तू, करती सबका त्राण है।
हे मातभूमि, सन्तान हम, तू जननी, तू प्राण है।

गगा मांग रही है मस्तक
जमना माग रही है सपने

—माखनलाल चतुर्वेदी

बूढो की क्या बात युगो की तरुणाई के दिन आए ह ।
चटटानो खदका, पहाडो की खाई के दिन आए हैं ।।

गगा माग रही है मस्तक जमना माग रही है सपने ।
आज जवानी स्वय टटोले, सिर, हथेलिया अपने अपने ।।

कितने दिन से खडा अकेला अपने बागो का यह माली ।
आज सिद्ध करना ही होगा, नही जवाहर कभी अकेला ।।

चलो सजाओ सैन्य, समय की भरपाई के दिन आए है ।
आज प्राण देने के युग की तरुणाई के दिन आए ह ।।

भारतवर्ष

—जयशंकर प्रसाद

हिमालय के आंगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार,
उषा ने हँस अभिनन्दन किया, और पहनाया हीरक हार।
जगे हम लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक,
व्योम-तम-पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।

विमल वाणी ने वीणा ली कमल कोमल कर में सप्रीति,
सप्त स्वर सप्तसिन्धु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम-संगीत।
बचाकर बीज रूप से सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय का शीत
अरुण केतन लेकर निज हाथ वरुण पथ में हम बढ़े अभीत।

सुना है दधीचि का वह त्याग हमारी जातीयता विकास,
पुरन्दर ने पवि से है लिखा अस्थि-युग का मेरा इतिहास।
सिन्धु सा विस्तृत और अथाह एक निर्वासित का उत्साह,
दे रही अभी दिखाई भग्न मग्न रत्नाकर में वह राह।

4—1PROD/ND/82

किसी का हमने छीना नही, प्रकृति का रहा पालना यही,
हमारी जन्मभूमि थी यही, कही से हम आये थे नहीं।
जातियो का उत्थान-पतन, आधियां, झडी, प्रचड समीर,
खड़े देखा, झेला हसते, प्रलय में पले हुए हम वीर।

चरित के पूत, भुजा मे शक्ति, नम्रता रही सदा सम्पन्न,
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न।
हमारे सचय म था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव,
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा म रहती थी टेव।

वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान।
वही है शांति वही ह शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-सतान।
जिये तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे, यह हर्ष,
निछावर कर दे हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।

वह देश कौन सा है ?

—रामनरेश त्रिपा

मनमोहनी प्रकृति की जो गोद में बसा है ।
सुख स्वर्ग सा जहा है वह देश कौनसा है ।।

जिसका चरण निरतर रतनेश धो रहा है ।
जिसका मुकुट हिमालय वह देश कौनसा है ।।

नदिया जहा सुधा की धारा बहा रही है ।
सीचा हुआ सलोना वह देश कौनसा है ।।

जिसके बडे रसीले फल कद नाज मेवे ।
सब अग मे सजे हैं वह देश कौनसा है ।।

जिसमें सुगध वाले सुदर प्रसून प्यारे ।
दिन रात हम रहे है वह देश कौनसा है ।।

मैदान गिरि वनो में हरियालिया लहकती
आनदमय जहा है वह देश कौनसा है

जिसके अनत धन से धरती भरी पडी है ।
ससार का शिरोमणि वह देश कौनसा है ।।

कामना

—ठाकुर गोपालशरण सिंह

हमे चाहिए सुख न तनिक भी, दुख ही दुख ये प्राण सहें ।
व्यथित हृदय म बस करुणा के भाव-स्रोत ही सदा बहे ॥

घणा नही हो हमे किसी से, सभी जनी से प्यार रहे ।
कोलाहल विहीन नित अपना, सूना ही ससार रहे ॥

यदि जग हमसे रहे रुष्ट भी तो भी हमें न रोष रहे ।
हो न महत्व-मनोरथ मन में लघुता में सन्तोष रहे ॥

परम तपाकुल इन नयनो मे पावन प्रेम प्रवाह रहे ।
केवल यही चाह ह उर म कभी न कोई चाह रहे ॥

कोई भी विपत्ति आ जावे हृदय कभी भयभीत न हो ।
कोई भी जीवन का सकट, सकट हमें प्रतीत न हो ॥

चाहे इस ससार-समर म, कभी हमारी जीत न हो ।
किन्तु हृदय से दूर हमारे यह जीवन सगीत न हो ॥

जयजयकार

—चंडीप्रसाद 'हृदयेश'

जयति-जय जन्म भूमि, जननी !

तेरे पद नख चारु चन्द्रमणि मंडित मौलि जलेश्वर का,
तेरे काश्मीर-कुंकुम-वर्ण अंकित अंग महेश्वर का ।
धन्य धन धुरी धर्म धमनी ।। जयति जय० ।।

श्यामल मलय विचल अचल तुव मचले श्याम गहे कर में
पुण्य पयोधर पय पियूप में पला प्रेम मानस-सर में ।
कथित कमनीय कीर्ति करनी ।। जयति-जय० ।।

तेरे मानस विकच कमल में कांतिमयी कमला सजती,
तेरी कोमल कुंज-कुटी में कविता की वीणा बजती ।
अखिल अवतारों की अवनी ।। जयति-जय० ।।

तेरे गुहा मुखों में ब्राह्मण ब्रह्म नाद को कर ध्वनित,
तेरे सुख सौभाग्य-गगन में सत्य-सूर्य हो शीघ्र उदित ।
द्वेष दुख-दंभ-दुरित दलनी ।। जयति-जय० ।।

अछूत की आह

—रामचन्द्र शुक्ल

एक दिन हम भी किसी के लाल थे।
आंख के तारे किसी के थे कभी ।।

बूंद भर गिरता पसीना देखकर,
था बहा देता घड़ों लोहू कोई ।।

देवता देवी अनेकों पूजकर,
निजला रह कर कई एकादशी ।।

जन्म के दिन फूल की थाली बजी,
दुःख की रातें कटी सुख दिन हुआ ।।

प्यार से मुखड़ा हमारा चूम कर,
स्वर्ग सुख पाने लगे मातापिता ।।

हाय हमने भी कुलीनों की तरह।
जन्म पाया प्यार से पाले गये ।।

जो बचे फूले फले तब क्या हुआ
कीट से भी नीचतर माने गये ।।

जन्म पाया पूत हिन्दुस्तान में ।
अन्न खाया औ यहीं का जल पिया ।।

धर्म हिन्दू का हमें अभिमान है
नित्य लेते नाम हैं भगवान का ।।

पर अजब इस लोक का व्यवहार है ।
न्याय है संसार से जाता रहा ।।

श्वान छूना भी जिन्हें स्वीकार है ।
हैं उन्हें भी हम अभागों से घृणा ।।

जिस गली से उच्च कुल वाले चलें
उस तरफ चलना हमारा दण्ड्य है ।।

धर्मग्रन्थों की व्यवस्था है यही
या किसी कुलवान का पाखण्ड है ।।

हम अछूतों से बताते छूत हैं ।
कर्म कोई खुद करें पर पूत हैं ।

हैं सगों को ये पराया मानते,
क्या यही स्वामी तुम्हारे दूत हैं ।।

शासको से मागते अधिकार हैं
पर नही अन्याय अपना छोडते ।

प्यार का नाता पुराना तोड कर,
है नया नाता निराला जोडते ।।

नाथ तुमने ही हमे पैदा किया ।
रक्त मज्जा मास भी तुमने दिया ।

ज्ञान दे मानव बनाया फिर भला
क्या हमे ऐसा अपावन कर दिया ।।

जो दयानिधि कुछ तुम्हे आये दया,
तो अछूतो की उमडती आह का

यह असर होवे कि हिन्दुस्तान मे,
पाव जम जावे परस्पर प्यार का ।।

शहीदो की चिताओ पर

—जगदम्बा प्रसाद मिश्र 'हितैषी'

उरूजे कामयाबी पर कभी हिन्दोस्ता होगा ।
रिहा सय्याद के हाथो से अपना आशियां होगा ।।

चखाएगे मजा बर्बादिये गुलशन का गुलचीं को ।
बहार आजाएगी उस दम जब अपना बागबा होगा ।।

वे आये दिन की छेड अच्छी नही ऐ खजरे कातिल ।
पता कब फैसला उनके हमारे दरमियां होगा ।।

जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे वतन हर्गिज ।
न जाने बाद मुर्दन मै कहा और तू कहा होगा ।।

वतन की आबरू का पास देखे कौन करता है ।
सुना है आज मक्तल मे हमारा इम्तहा होगा ।।

शहीदो की चिताओ पर जुडेंगे हर बरस मेले ।
वतन पर मरने वालो का यही बाकी निशा होगा ।।

कभी वह दिन भी आयेगा जब अपना राज देखेगे ?
जब अपनी ही जमीं होगी और अपना आसमा होगा ।।

जय हिन्द

—सियारामशरण गुप्त

जय जय भारतवर्ष हमारे, जय-जय हिन्द हमारे हिन्द,
विश्व-सरोवर के सौरभमय प्रिय अरविन्द, हमारे हिन्द !
तेरे सोता में अक्षय जल, खेतों में है अक्षय धान
तन से, मन से श्रम विक्रम से हैं समर्थ तेरी संतान !
सबके लिए अभय है जग में जन-जन में तेरा उत्थान,
बैर किसी के लिए नहीं है प्रीति सभी के लिए समान।
गंगा-यमुना के प्रवाह है अमल अनिन्ध हमारे हिन्द,
जय-जय भारतवर्ष हमारे जय-जय हिन्द, हमारे हिन्द !
तेरी चक्र-पताका नभ में ऊंची उड़े सदा स्वाधीन
परम्परा अपने वीरों की शक्ति हमें दे नित्य नवीन।
सबका सुहित हमारा हित है सार्वभौम हम सार्वजनीन
अपनी इस आसिन्धु धरा में नहीं रहेंगे होकर हीन।
ऊंचे और विनम्र सदा के हिमगिरि विन्ध्य हमारे हिन्द
जय-जय भारतवर्ष हमारे जय-जय हिन्द हमारे हिन्द !

भारती वन्दना

—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

भारति, जय, विजय करे
कनक शस्य-कमल धरे !

लंका पदतल-शतदल,
गर्जितोर्मि सागर जल
धोता शुचि चरण-युगल
स्तव कर बहु अर्थ भरे !

तरु-तृण वन-लता वसन,
अंचल मे खचित सुमन,
गंगा ज्योतिजल-कण
धवल धार हार गले !

मुकुट शुभ्र हिम-तुषार
प्राण प्रणव आकार
ध्वनित दिशाए उदार,
शतमुख शतरव मुखरे !

झंडा-अभिवादन

—श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'

झंडा ऊंचा रहे हमारा ।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा ।

सदा शक्ति बरसाने वाला
प्रेम-सुधा सरसाने वाला
वीरों को हरषाने वाला,
मातृभूमि का तन मन सारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा ।

स्वतंत्रता के भीषण रण में,
लखकर जोश बढ़े क्षण क्षण में
कांपे शत्रु देखकर मन में
मिट जावे भय संकट सारा झंडा ऊंचा रहे हमारा ।

इस झंडे के नीचे निर्भय,
हो स्वराज्य जनता का निश्चय,
बोलो भारत माता की जय
स्वतंत्रता ही ध्येय हमारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा ।

ग्राम्रो प्यारे वीरो आग्रा,
देश जाति पर बलि-बलि जाम्रो,
एक साथ सब मिलकर गाम्रो,
प्यारा भारत देश हमारा, भडा ऊचा रहे हमारा ।

इमकी शान न जाने पावे,
चाहे जान भले ही जावे,
विश्व विजय करके दिखलावे,
तब होवे प्रण पूण हमारा, भडा ऊचा रहे हमारा ।

विप्लव-गायन

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए
प्राणों के लाले पड़ जाए
त्राहि-त्राहि रव नभ में छाए
नाश और सत्यानाशों का—
धुआंधार जग में छा जाए,
बरसे आग जलद जल जाए
भस्मसात भूधर हो जाए
पाप पुण्य सदसद् भावों की
धूल उड़ उठे दायें बायें
नभ का वक्षस्थल फट जाए—
तारे टूक टूक हो जाए
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल-पुथल मच जाए।

माता की छाती का ग्रमृत—
मय पय काल कूट हो जाए,
ग्राखो का पानी सूखे,
वे शोणित की घूटें हो जाए,

एक ग्रार कायरता कापे
गतानुगति विगलित हा जाए
ग्रधे मूढ विचारा की वह
ग्रचल शिला विचलित हा जाए

ग्रौर दूसरी ग्रोर कपा देने
वाला गजन उठ धाए,
ग्रन्तरिक्ष में एक उसी नाशक
तर्जन की ध्वनि मडराए

कवि कुछ ऐसी तान सुनाग्रो,
जिससे उथल-पुथल मच जाए ।

नियम ग्रौर उपनियमो के ये
बधन टूक-टूक हो जाए
विश्वम्भर की पोषक वीणा
के सब तार मूक हो जाए,

शान्ति-दड टूटे उस महा
रुद्र का सिंहासन थर्राए
उसकी श्वासोच्छ्वास दाहिका,
विश्व के प्रागण में घहराए

5—1 Prod/ND/82

नाश ! नाश !! हा महानाश !!! की
प्रलयकरी आखे खुल जाए
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल-पुथल मच जाए।

सावधान ! मेरी वीणा में,
चिनगारिया आन वैठी है,
टूटी हैं मिजराबें अगुलिया
दोनो मेरी ऐठी हैं।

कठ रुका है महानाश का
मारक गीत रुद्ध होता है
आग लगेगी क्षण में, हृत्तल
में अब क्षुब्ध युद्ध होता है,

झाड और झखाड दग्ध है—
इस ज्वलत गायन के स्वर से
रुद्ध गीत की क्रुद्ध तान है
निकली मेरे अन्तरतर से !

कण कण में है व्याप्त वही स्वर
राम रोम गाता है वह ध्वनि,
वही तान गाती रहती है
कालकूट फणि की चिंतामणि,

जीवन ज्योति लुप्त है—अहा !
सुप्त हैं सरक्षण की घडिया
लटक रही ह प्रतिपल में इस
नाशक सरक्षण की लडिया।

चकनाचूर करो जग को, गूज
ब्रह्माण्ड नाश के स्वर से ,
रुद्ध गीत की क्रुद्ध तान है
निकली मेरे अतरतर से !

दिल का मसल मसल मैं मेंहदी
रचता आया हू यह देखो,
एक एक अगुलि परिचालन
म नाशक ताडव का पेखो !

विश्वमूर्ति ! हट जाओ ! ! मेरा
भीम प्रहार सहे न सहेगा
टुकडे टुकडे हो जाओगी
नाशमात्र अवशेष रहेगा ,

आज देख आया हू—जीवन
के सब राज समझ आया हू ,
भ्रू विलास में महानाश के
पोषक सूत्र परख आया हू ,

जीवन गीत भूला दो—कठ,
मिला दो मृत्यु गीत के स्वर से
रुद्ध गीत की क्रुद्ध तान है
निकली मेरे अन्तरतर से ।

युवक !

—उदयशकर भट्ट

ममय के सभी साथ जीवन बदलते
समय का बदलता हुआ तू चला चल !

कि भर आत्म विश्वास हर सास में तू
उपा के लिए हास हर श्रास मे तू ।
उडा दे सभी त्रास उच्छ्वास मे तू
बदल दे नरक के सभी दश्य पल में
बना दे अमत विश्व का सब हलाहल ।

समय के सभी साथ जीवन बदलते
समय को बदलता हुआ तू चला चल !

निराशा तिमिर में रुका है नही तू
न तूफान म भी भुका ह कभी तू
जगत् चित्र की तूलिका हैं सही तू
तुझे विश्व मदिरा पिलाये भला क्या
स्वय विश्व को प्राण दे औ जिला चल ।

समय के सभी साथ जीवन बदलते
समय का बदलता हुआ तू चला चल !

निशा में तुझे चांद ने पथ दिखाया
प्रलय मेघ ने बिजलियां का बुनाया
थके प्राण का सिंह का स्वर पिलाया
धरा ने बिछा दिल, नगा ने उठा सिर,
बनाया तुझे, तू नया जग बना चल ।

समय के सभी साथ जीवन बदलते
समय का बदलता हुआ तू चला चल !

भारत-गीत

—सुमित्रानन्दन पंत

जय जन भारत जन-मन अभिमत
जन गण तंत्र विधाता !
गौरव भाल हिमालय उज्ज्वल
हृदय हार गंगा जल
कटि विन्ध्याचल, सिन्धु चरण तल
महिमा शाश्वत गाता !

हरे खेत लहरे नद निर्झर
बीच जीवन शोभा उर्वर,
विश्व कर्म रत कोटि बाहु कर

प्रथम सभ्यता ज्ञाता, साम ध्वनि
जय नव मानवता
सत्य अहिंसा दाता !

जय है, जय है, जय है शाति अधिष्ठाता ।

प्रयाण तूर्य बज उठे,

पटह् तुमुल गरज उठे,

विशाल सत्य सैन्य, लौह भुज उठे !

शक्ति स्वरूपिणि, बहु बल धारिणि वदित भारत माता,

धम चक्र रक्षित तिरग ध्वज अपराजित फहराता !

जय हे जय है, जय है अभय, अजय, त्राता !

महाराजा कुअर सिंह

—मनोरजन प्रसाद सिंह

मस्ती की थी छिडी रागिनी, आजादी का गाना था ।
भारत के कोन-कोने में, होता यही तराना था ।।
उधर खडी थी लक्ष्मी बाई और पेशवा नाना था ।
इधर बिहारी वीर बाकुडा खडा हुआ मस्ताना था ।।
अस्सी बर्षों की हड्डी में जागा जोश पुराना था ।
सब कहते ह कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

नस नस म उज्जन वश का बहता रक्त पुराना था ।
भोजराज का वशज था, उसका भी राजघराना था ।।
बालपने से ही शिकार म उसका विकट निशाना था ।
गाला गोली तेग कटारी यही वीर का बाना था ।।
उसी नीव पर युदध बुढापे में भी उसने ठाना था ।
सब कहते ह कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

राम अनुज जग जान लखन ज्यो उनके सदा सहायी थे ।
गोकुल म बलदाऊ के प्रिय जैसे कुअर कन्हाई थे ।।
वीर श्रेष्ठ आल्हा के प्यारे ऊदल ज्यो सुखदाई थे ।
अमर सिंह भी कुअर सिंह के वैसे ही प्रिय भाई थे ।।
कुअर सिंह का छोटा भाई वैसा ही मस्ताना था ।
सब कहते ह कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

देश देश मे व्याप्त चहू दिशि उसकी सुयश कहानी थी।
उसके दया धम की गाथा सब को याद जबानी थी।।
रोबीला था वदन और उसकी चौडी पेशानी थी।
जग जाहिर जगदीशपुर मे उसकी प्रिय रजधानी थी।।

वही कचहरी थी, आफिस था, वही कुअर का थाना था।
सब कहते ह कुअर सिंह भी वडा वीर मर्दाना था।।

बचपन बीता खेल कूद मे और जवानी उद्यम मे।
धीरे धीरे कुअर सिंह भी आ पहुचे चौथेपन मे।।
उसी समय घटना कुछ ऐसी घटी देश के जीवन मे।
फल गया विद्वेश फिरगी प्रति सहसा सब के मन म।।

खौल उठा सन सत्तावन मे सबका खून पुराना था।
सब कहते हैं कुअर सिह भी वडा वीर मर्दाना था।

बगाले के वारकपुर ने आग द्राह की सुलगाइ।
लपटे उसकी उठी जाग से दिल्ली आ मेरठ धाई।।
काशी उठी लखनऊ जागा धूम ग्वालियर में छाई।
कानपुर म और प्रयाग म खडे हो गये बलवाई।।

रण चडी हुकार कर उठी शत्रु हृदय थर्राना था?
सब कहते ह कुअर सिंह भी वडा वीर मर्दाना था।।

सुन कर के आह्वान, समर मे कूद पडी लक्ष्मी बाई।
स्वतन्त्रता की ध्वजा पेशवा ने विठूर मे फहराई।।
खोई दिल्ली फिर कुछ दिन का वापस मुगला ने पाई।
घर घर करन लगे फिरगी उनके सर शामत आई।।

महाराजा कुअर

मस्ती की थी छिडी रागिनी, आजादी क
भारत के कोने कोने मे होता यही
उधर खडी थी लक्ष्मी बाई, और पेशव,
इधर बिहारी वीर बाकुडा खडा हुआ र

अस्सी वर्षों की हडडी मे जागा
सब कहते ह कुअर सिह भी वडा

नस नस म उज्जैन वश का बहता रक
भोजराज का वशज था, उसका भी रा
बालपने से ही शिकार मे उसका विकट
गोला गोली तेग कटारी यही वीर का

उसी नीव पर युद्ध बुढापे मे
सब कहते ह कुअर सिह भी वड

राम अनुज जग जान, लखन ज्यो उनके स
गोकुल मे बलदाऊ के प्रिय जैसे कुअर
वीर श्रेष्ठ आल्हा के प्यारे ऊदल
अमर सिह भी कुअर सिह के वैसे ही

कुअर सिह का छोटा भाई
सब कहते ह कुअर सिह भी

कुछ क्षण में अंग्रेज फौज का वहा न शेष निशाना था।
सब कहते हैं कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था॥

आरा पर तब हुई चढाई, हुआ कचहरी पर अधिकार।
फैल गया तब देश-देश मे कुअर सिंह का जय जय कार॥
लोप हो गई तब आरा से बिल्कुल अंग्रेजी सरकार।
नही जरा भी होने पाया मगर किसी पर अत्याचार॥

भाग छिपे अंग्रेज किले मे, सब लुट चुका खजाना था।
सब कहते है कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था॥

खबर मिली आरा की तो, आयर बक्सर से चढ धाया।
विकट तोपखाना था, सग में फौज था काफी लाया॥
देश द्रोहियो का भी भारी दल था उसके सग आया।
कब तक टिकते कुअर सिंह आरे से उखड गया पाया॥

अपने ही जब बेगाने थे, उल्टा हुआ जमाना था।
सब कहते हैं कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था॥

हुआ युदध जगदीशपुर मे मचा वहा पूरा घमसान।
अमर सिंह का तेज देखकर दुश्मन दल भी था हैरान॥
महाराज डुमराव वही थे ज्या मुगलो म राजा मान।
अमर सिंह झपटा तेजी से लेकर इनपर नग्न कृपाण॥

झपटा जसे मानसिंह पर वह प्रताप सिंह राणा था।
सब कहते ह कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था॥

हौदे में थे महाराज, पड गई तेग की खाली वार।
नाक कट गई पीलवान की हाथी भाग चला बजार॥
अमरसिंह भी बीच सैन्य से निकल गया सबको ललकार।
दादा जी थे चले गये फिर लडने की थी क्या दरकार॥

काप उठे अग्रेज कही भी उनका नही ठिकाना था ।
सब कहते हैं कुअर सिंह भी बडा वीर मदाना था ।।

आग क्रांति की धधक उठी पहुची पटने मे चिनगारी ।
रणोन्मत्त यादधा भी करने लगे युदध की तैयारी ।।
चन्द्रगुप्त के वशज जागे करने मा की रखवारी ।
शेरशाह का खून लगा करने तेजी से रफतारी ।।

पीर अली फासी पर लटका वीर बहादुर दाना था ।
सब कहते ह कुअर मिह भी वडा वीर मर्दाना था ।।

पटने का अग्रेज कमिश्नर टेलर जी मे घबडाया ।
चिट्ठी भेज जमीदारा को उसने घर पर बुलवाया ।।
बुद्धि भ्रष्ट थी हुई और गाखो पर था पर्दा छाया ।
कितना ही का जेल दिया और फासी पर भी लटकाया ।।

कुअर सिह के नाम किया उसने जारी परवाना था
सब कहते ह कुअर मिह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

कुअर सिंह ने साचा जब उनके मुशी की हुई तलाश ।
दगाबाज अब हुए फिरगी इनका जरा नही विश्वास ।।
उसी समय पहुचे विद्राही दानापुर से उनके पास ।
हाथ जोड कर बोले वे सरकार आप की ही है आस ।।

सिंहनाद कर उठा केसरी उसे समर म जाना था ।
सब कहते ह कुअर सिंह भी बडा वीर मदाना था ।।

गगा तट पर अद्ध रात्रि का हुई लडाई जोरा से ।
रणान्मत्त हा देसी सनिक उलझ पडे जब गोरा से ।।
शूय दिशाए काप उठी तव बदूका के शोरा से ।
लेकिन टिके न गारे भागे प्राण बचा कर चारा स ।।

कुछ क्षण में अंग्रेज फौज का वहा न शेष निशाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

आरा पर तब हुई चढाई, हुआ कचहरी पर अधिकार।
फैल गया तब देश-देश मे कुंअर सिंह का जय जय कार ।।
लोप हो गई तब आरा से बिल्कुल अंग्रेजी सरकार।
नहीं जरा भी होने पाया मगर किसी पर अत्याचार ।।

भाग छिपे अंग्रेज किले में, सब लुट चुका खजाना था।
सब कहते हैं कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

खबर मिली आरा की तो, आयर बक्सर से चढ धाया।
विकट तोपखाना था, संग में फौजें था काफी लाया ।।
देश द्रोहियो का भी भारी दल था उसके संग आया।
कब तक टिकते कुंअर सिंह आरे से उखड गया पाया ।।

अपने ही जब बेगाने थे, उल्टा हुआ जमाना था।
सब कहते ह कुंअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

हुआ युदध जगदीशपुर मे मचा वहा पूरा घमसान।
अमर सिंह का तेज देखकर दुश्मन दल भी था हैरान ।।
महाराज डुमराव वहीं थे, ज्यो मुगलो म राजा मान।
अमर सिंह झपटा तेजी से लेकर इनपर नग्न कृपाण ।।

झपटा जसे मानसिंह पर वह प्रताप सिंह राणा था।
सब कहते ह कुंअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

हौदे मे थे महाराज, पड गई तेग की खाली वार।
नाक कट गई पीलवान की हाथी भाग चला बेजार ।।
अमरसिंह भी बीच सैन्य से निकल गया सबको ललकार।
दादा जी थे चले गये फिर लडने की थी क्या दरकार ।।

पड़ा हुआ था शून्य महल, जगदीशपुर वीराना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

राजा कुंअर सिंह जा पहुंचे अतरालिया के मैदान।
आ पहुंचे अंग्रेज उधर से, हुआ परस्पर युद्ध महान॥
हटा वीर कुछ कौशल पूर्वक झपट पड़ा फिर बाज समान।
भाग चले मिलमैन बहादुर बैलशकट पर लेकर प्राण॥

आकर छिपे किले के अन्दर उनका प्राण बचाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

विजयी राजा कुंअर सिंह तब आजमगढ़ पर चढ़ आया।
कर्नल डेम्स फौज ले संग में उससे लड़ने को आया॥
किन्तु कुंअर सिंह के साथ तनिक भी नहीं समर में टिक पाया।
भागा वह भी गढ़ के अन्दर करके प्राणों की माया॥

आजमगढ़ में कुंअर सिंह का फहरा उठा निशाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

चले बनारस, तब कैनिंग के जी में घबराहट छाई।
अस्सी वर्षों के इस बूढ़े ने अजीब आफत ढाई॥
लार्ड मार्क के संग फौजें सन्मुख समर में आई।
किन्तु नहीं टिक सकी देर तक उनने भी मुंह की खाई॥

छिपा दुर्ग में सेनापति उसका भी वहीं ठिकाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

आगे बढ़ते चले कुंअर, था ध्यान लगा झांसी की ओर।
सुनी मृत्यु लक्ष्मी बाई की लौट पड़े तब बढ़ना छोड़॥
पीछे से पहुंचा लगड, थी लगी प्राण की मानो होड़।
गाजीपुर के पास पहुंच कर, हुआ युद्ध पूरा घनघोर॥

विजय हाथ थी कुअर सिंह के किसको प्राण गवाना था ।
सब कहते हैं कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

डगलस आकर जुटा उधर से, लेकर के सेना भरपूर ।
शत्रु सैन्य था प्रबल और सब ओर घिर गया था वह शूर ।।
लगातार थी लडी लडाई थे थक कर सब सैनिक चूर ।
चकमा देकर चला बहादुर दुश्मन दल था पीछे दूर ।।

पहुची सेना गगा तट उस पार नाव से जाना था ।
सब कहते हैं कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

दुश्मन तट पर पहुच गये जब कुअर सिंह करते थे वार ।
गोली आकर लगी बाहु मे दाया हाथ हुआ बेकार ।।
हुई अपावन बाहु जान बस, काट दिया लेकर तलवार ।
ले गगे, यह हाथ आज तुझको ही देता हू उपहार ।।

वीर मात का वही जाह नवी को माना नजराना था ।
सब कहते ह कुअर सिंह भी बडा वीर मदाना था ।।

इस प्रकार कर चकित शत्रु दल, कुअर सिंह फिर घर आये ।
फहरा उठी पताका गढ पर दुश्मन बेहद घबराये ।।
फौज लिये ली ग्रैंड चले, पर वे भी जीत नही पाये ।
विजयी थे फिर कुअर सिंह अग्रेज काम रण मे आये ।।

घायल था वह वीर किन्तु आसान न उसे हराना था
सब कहते है कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

यही कुअर सिंह की अन्तिम जय थी और यही अन्तिम सग्राम ।
आठ महीने लडा शत्रु से बिना किये कुछ भी विश्राम ।।
घायल था वह वृद्ध केसरी, थी सब शक्ति हुई बेकाम ।
अधिक नही टिक सका और वह वीर चला थककर सुरधाम ।।

पडा हुआ था शून्य महल, जगदीशपुर वीराना था।
सब कहते हैं कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था॥

राजा कुअर सिंह जा पहुचे, अतरौलिया के मदान।
आ पहुचे अग्रेज उधर से, हुआ परस्पर युद्ध महान॥
हटा वीर कुछ कौशल पूवक, झपट पडा फिर बाण समान।
भाग चल मिलमन बहादुर बैलगाड़ी पर लेकर प्राण॥

आकर छिपे किले के अन्दर, उनका प्राण बचाना था।
सब कहते हैं कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था॥

विजयी राजा कुअर सिंह तब आजमगढ पर चढ आया।
कनल डेम्स फौज ले सग म, उसमे लडने को आया॥
किन्तु कुअर सिंह के साथ तनिक भी नही समर म टिक पाया।
भागा वह भी गढ के अन्दर करके प्राणो की माया॥

आजमगढ मे कुअर सिंह का फहरा उठा निशाना था।
सब कहते ह कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था॥

चले बनारस, तब कनिंग के जी म घबराहट छाई।
अस्सी वर्षों के इस बूढे ने अजीब आफत ढाई॥
लाड माक के सग फौज सम्मुख समर म आई।
किन्तु नही टिक सकी देर तक उनने भी मुह की खाई॥

छिपा दुग मे सेनापति उसका भी वही ठिकाना था।
सब कहते ह कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था॥

आगे बढते चले कुअर था ध्यान लगा झासी की ओर।
सुनी मृत्यु लक्ष्मी बाई की लौट पडे तब बढना छोड॥
पीछे से पहुचा लगड थी लगी प्राण की मानो होड।
गाजीपुर के पास पहुच कर, हुआ युद्ध पूरा घनघोर॥

विजय हाथ थी कुअर सिंह क किसको प्राण गवाना था ।
सब कहते है कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

डगलस आकर जुटा उधर से, लेकर के सेना भरपूर ।
शत्रु सैन्य था प्रबल और सब ओर घिर गया था वह शूर ।।
लगातार थी लडी लडाई थे थक कर सब सैनिक चूर ।
चकमा देकर चला बहादुर, दुश्मन दल था पीछे दूर ।।

पहुची सेना गगा तट उस पार नाव से जाना था ।
सब कहते है कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

दुश्मन तट पर पहुच गये जब कुअर सिंह करते थे वार ।
गोली आकर लगी बाहु मे दाया हाथ हुआ बेकार ।।
हुई अपावन बाहु जान बस काट दिया लेकर तलवार ।
ले गगे, यह हाथ आज तुझको ही देता हू उपहार ।।

वीर मात का वही जाह्नवी को मानो नजराना था ।
सब कहते ह कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

इस प्रकार कर चकित शत्रु दल कुअर सिंह फिर घर आये ।
फहरा उठी पताका गढ पर दुश्मन बेहद घबराये ।।
फौज लिये ली ग्रैन्ट चले, पर वे भी जीत नही पाये ।
विजयी थे फिर कुअर सिंह अग्रेज काम रण मे आये ।।

घायल था वह वीर किन्तु आसान न उसे हराना था
सब कहते है कुअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था ।।

यही कुअर सिंह की अन्तिम जय थी और यही अन्तिम सग्राम ।
आठ महीने लडा शत्रु से बिना किये कुछ भी विश्राम ।।
घायल था वह वद्ध केसरी, थी सब शक्ति हुई बेकाम ।
अधिक नही टिक सका और वह वीर चला थककर सुरधाम ।।

तब भी फहरा रहा दुर्ग पर उसका विजय निशाना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था॥

बाद मृत्यु के अंग्रेजों की फौज वहाँ गढ पर आई।
कोई नहीं वहाँ था, थी महलों में निर्जनता छाई॥
किन्तु शत्रु ने शून्य भवन पर भी प्रतिहिंसा दिखलाई।
देवालय विध्वंस किया और देव मूर्तियाँ गिरवाईं॥

दुश्मन दल की दानवता का कुछ भी नहीं ठिकाना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी बडा वीर मर्दाना था॥

स्तवन

—मोहनलाल महतो 'वियोगी'

देश !

हे जीवनधन !

हे हृदयेश !

हे देश, हमारे प्यारे देश !

दुखिया के नयनो के तारे,

परमपूज्य, सर्वस्व हमारे,

हम अनन्य है भक्त तुम्हारे,

तुम तो हो प्राणेश !

देशो के सिरताज देश !

हे देश !

निराधार के हे आधार,

हे जीवन तन्त्री के तार,

युग युग गाने से भी तेरा

होता नहीं सुयश-सगीत

कभी नि शेष ।

हे देश हमारे प्यारे देश !

प्रथम प्रभात यहीं देखा था हमने आखे खोल

गाया यही स्नेह का गान

कर्म क्षेत्र में यहीं लड रहे हैं हे दयानिधान !

यही हैं चाह——

यहीं से हो अन्तिम प्रस्थान !

शांति, शौर्य, विद्या, तप के हे पुण्य स्थान !

हमारे प्यारे देश !

हे देश !

अहो कर्म-कोलाहल से मुखरित,

साम-गान की स्वर सुरसरि से पूत,

तुम्हारा सुन विराट आह्वान

उठा हमारा लज्जानत

अवर

अटल सत्य से डटे हुए ह

पालन को तेरा पवित्र

सुख,

तू ही है सम्मान ।
तू ही है उदार दाता
तू ही है कल्याण ।

तुझ पर ही होती ह हमारी साधनाए शेष ।

तीन लोक से प्यारे देश
देश, हमारे प्यारे देश !

हे महान् !
शक्तिमान् !
हो तेरा प्रचड उत्थान,
देवर्षि, भारती बजाकर विपची निज
गाते ह अहर्निश तुम्हारा स्तवन गान,
कैसे अवगाहन तव यश रत्नाकर का— —
कर सकता है इस "वियोगी" का स्वल्प ज्ञान !
हे देश !

जग के अत पट पर अकित
तेरा प्रलयकर वेश
हे देश !

स्वगभूमि से अधिक स्तुत्य है यह दासो का देश
हे देश !
हे भारतवप हमारे देश ।

6—1 Prod/ND/82

मातृ-भू शत-शत बार प्रणाम

—भगवतीचरण वर्मा

ऐ अमरो की जननी, तुझको शत शत बार प्रणाम
मात भू, शत-शत बार प्रणाम।

तेरे उर म शायित गाधी बुद्ध, कृष्ण औ राम,
मातृ भू शत शत बार प्रणाम।

हिमगिरि मा उन्नत तव मस्तक
तेरे चरण चूमता सागर
श्वासो में है वेद ऋचाए
वाणी में है गीता का स्वर।

ऐ मसति की आदि तपस्विनि, तेजस्विनि अभिराम
मात भू शत शत वार प्रणाम।

हरे भरे है खेत सुहाने
फल-फूलो मे युत वन उपवन,

तेरे अन्दर भरा हुआ है,
खनिजों का कितना व्यापक धन।

मुक्त हस्त तू बांट रही है सुख-सम्पति धन धाम।
मातृ भू शत शत बार प्रणाम।

प्रेम-दया का इष्ट लिए तू,
सत्य अहिंसा तेरा संयम,
नयी चेतना, नयी स्फूर्ति-युत
तुममें चिर विकास का है क्रम

चिर नवीन तू, जरा मरण से मुक्त, सबल उद्दाम
मातृ भू शत शत बार प्रणाम।

एक हाथ में न्याय-पताका
ज्ञान-दीप दूसरे हाथ में
जग का रूप बदल दे हे मां
कोटि-कोटि हम आज साथ में

गूंज उठे जय हिन्द नाद से सकल नगर औ' ग्राम
मातृ भू शत शत बार प्रणाम।।

वीरो का कैसा हो वसत !

—सुभद्रा कुमारी चौहान

वीरा का कैसा हो वसत ?

आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार-बार
प्राची-पश्चिम भू नभ अपार
सब पूछ रहे ह दिग दिगन्त
वीरा का कैसा हो वसत ?

फूली सरसों ने दिया रग
मधु लेकर आ पहुचा अनग
वसु वसुधा पुलकित अग अग
है वीर वेश में किन्तु कन्त
वीरा का कैसा हो वसन्त ?

गलबाही हो, या हो कृपाण
चल चितवन हो या धनुप बाण
हो रस विलास या दलित त्राण

अब यही समस्या है दुरत
वीरो का कसा हो वसत ?

भर रही कोकिला इधर तान
मारू बाजे पर उधर गान
है रग और रण का विधान

मिलन आये है आदि अत
वीरो का कसा हो वसत ?

कह द अतीत अब मौन त्याग
लके ! तुझम क्या लगी आग
ए कुरक्षेत्र ! अब जाग जाग

बतला अपने अनुभव अनत
वीरो का कसा हो वसत ?

हल्दीघाटी के शिलाखड
ए दुग सिहगढ क प्रचड
राणा ताना का कर घमड

दो जगा आज स्मृतिया ज्वलत
वीरो का कसा हो वसत ?

उठो सोने वालो !

—यशोधर शुक्ल

उठो सोने वालो सवेरा हुआ है ।
वतन के फकीरो का फेरा हुआ है ।।

उठो अब निराशा निशा खो रही है
सुनहली-सी पूरब दिशा हो रही है
उषा की किरण जगमगी हो रही है
विहगों की ध्वनि नींद तम धो रही है,

तुम्हें किसलिए मोह घेरा हुआ है ।
उठो सोने वालो सवेरा हुआ है ।।

उठो बूढ़ो बच्चो वतन दान मांगो
जवानो नयी जिन्दगी ज्ञान मांगो,
पड़े किसलिए देश उत्थान मांगो,
शहीदों से भारत का अभिमान मांगो,

धरा में, दिलों में, उजेला हुआ है ।
उठो सोने वालो सवेरा हुआ है ।।

उठा दविया वक्त खोने न दा तुम
जगें तो उन्हें फिर स सोने न दा तुम,
बाई फूट के बीज बाने न दा तुम,
कही देश अपमान होने न दा तुम,

घडी शुभ महूरत का फेरा हुआ है।
उठो सोने वालो सवेरा हुआ है।

हवा क्राति की आ रही ले उजाली,
बदल जाने वाली है शासन प्रणाली,
जगो देख लो मस्त फूलो की डाली,
सितारे भगे आ रहा अशुमाली,

दरख्तो पे चिडियो का फेरा हुआ है।
उठो सोने वालो सवेरा हुआ है।।

वेदी पर फिर से टेर हुई

—छल बिहारी दीक्षित 'कण्टक'

उठ जाग जाग, साये सपूत
वेदी पर फिर से टेर हुई।
पलक उघार बाहर निहार
जीवन बिखरा है दर हुई।
कब से सोया सुधबुध बिसार,
मा देख रही है राह खडी।
उठ और अधिक सोना हराम
तेरी है सब को चाह बडी।
गूजी ह घर घर में पुकार,
भारत मा के अरमान चला।
बज रहा बिगुल, सज रहे वीर,
मिटने मनचले जवान चला।।
ऊठ गई रात, विकसा प्रभात
ऊषा का नव अनुराग जगा।

सदियों का साया त्याग देख,

बूढ़े भारत का भाग जगा ।

नस नस मे उमड़ा नवल जोश,

जीवन की ममता छाड़ चले ।

हिलमिल वेदी की ओर आज,

देखो पैंतीस करोड़ चले ।

है खुला सामने स्वर्ग द्वार,

जूझने सिंह संतान चला ।

बज रहा बिगुल, सज रहे वीर,

मिटने मनचले जवान चलो ।।

उठ बूढ़ी आखो के चिराग,

भीषण रणभेरी घहर रही ।

कर मा का दूध हलाल लाल,

यौवन हिलार फिर लहर रही ।

चल कमर बाध, वर्दी सभाल

साहस कमाल के काम दिखा ।

यह अमर समर है धुआधार,

वीरो मे बढ कर नाम लिखा ।

गादी के धन, घर के सुहाग,

हाथा पर लेकर जान चला ।

बज रहा बिगुल, सज रहे वीर,

मिटने मनचले जवान चला ।।

बम, एक बार फिर ताल ठोक

भूला नूतन इतिहास मिले ।

धरणी धसके, गिरि चूर-चूर

सागर सहमे आकाश हिले ।

दल के दल तरुण समाज साज,

खेलें खुल कर हुंकार उठे ।

वीरों का वह बलिदान देख

आँखें मलता समार उठे ।

गूंजे युग युग तक अमर गीत

बूढे स्वदेश की शान चला ।

बज रहा बिगुल, सज रहे वीर,

मिटने मनचले जवान चला ॥

पूजा गीत

—सोहनलाल द्विवेदी

वदना के इन स्वरो में एक स्वर मेरा मिला लो,

वदिनी मा का न भूला,

राग में जब मत्त झूलो,

अचना के रत्न कण में एक कण मेरा मिला लो,

जब हृदय का तार बोले

शृंखला के बद खोले,

हो जहा बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो ।

अगस्त-क्रान्ति का गीत

—जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

दृढ निश्चय की हुई घोषणा गूंज उठा जिससे जग सारा—
'ह स्वतन्त्र सब भारतवासी, भारतवर्ष स्वतन्त्र हमारा !"

किसके आगे हाथ पसारे, कौन हमे है देने वाला !
अपनी छिनी हुई आजादी भारत खुद ही लेने वाला !

हमने निज अधिकार प्राप्ति के प्रण से पशुबल को ललकारा !
ह स्वतन्त्र सब भारतवासी भारतवर्ष स्वतन्त्र हमारा !

नर-नारी बच्चे बच्चे ने समझा—वह आजाद हुआ है।
मुक्ति-भावना से घर घर में एक नया आह्लाद हुआ ह !

मिलने को स्वतन्त्र देशा म हुआ उठ खडा भारत प्यारा !
ह स्वतन्त्र सब भारतवासी भारतवर्ष स्वतन्त्र हमारा !

दृढ निश्चय के बाद हमारे हाथो म अब आजादी ह !
टूटे बन्धन, मिटी गुलामी, खत्म ममय की बरबादी है !

नई जिन्दगी नया वतन अब, नए विचारा की ह धारा !
ह स्वतन्त्र सब भारतवासी, भारतवर्ष स्वतन्त्र हमारा !

चेतना का स्वर

—केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'

मेघा के आगे समुद्र आंधियां तिमिर दुर्धर्ष था,
आवर्तन व्यावर्तन के हिलकोरों का संघर्ष था,
सभी ओर वज्रस्फुलिंग, प्रज्ज्वलित सागर मेखला
निकला ऋषि अमरत्व तेज ले वह तो भारतवर्ष था।

पथ में जहां शिलाखंडों पर शोणित बहा प्रकाश का
कालपुरुष ने वहां लिखा अध्याय प्रथम इतिहास का,
अम्बर पट पर विद्युत की रेखा जाती जो कौंध है,
वह अमेट उत्सर्ग ऋचा है विजय ध्वज विश्वास का।

मैं अलक्ष्य कब, लक्ष-लक्ष जब मेरे शब्द पुकारते,
मैं अचिह्न कब, तारा से जब मेरे चिह्न निहारते,
आ मेरे उच्छवास ! तनिक तू छू दे सिन्धु अधीर है
देखूं कैसे वह्नि विशिख पृथ्वी पर स्वर्ग उतारते।

खंडित वज्र हुआ था जब वह लग्न खड़ा था द्वार पर,
जैसे वातावर्त खड़े रहते सागर के ज्वार पर,

मैने कहा नियति से, तू पावा मे पायल बाध ले,
तुझे नाचना है मेरी ज्वाला के उपसहार पर ।

मुझसे पूछो, मै बतलाऊ वह तारो का खेत है
वहा एक गगा बहती है, कही न सैकत रेत है,
चद्र-सूय दो महाकाव्य मैने ह लिखे सनेह से
अतरिक्ष का हर अक्षर मेरे पथ का सकेत है ।

शिला खड पर विटप छाह दूधिया चादनी आकती,
शाखाओ पर झुकी वायु घूघट के पट से झाकती,
पथ सोया है कण-कण म अनखुली कहानी बाध कर,
नीरवता अधखिले पत्र पर शब्द सजल कुछ टाकती ।

कभी कभी बेहोशी दृगपट पर चित्र उतारती
कभी-कभी मूच्छना स्वय सना का रूप सवारती,
कभी-कभी जीवन से दो क्षण दान मरण ही मागता,
कभी कभी कपित लौ पर मदिर संभालती आरती ।

स्वग तैरता है समुद्र की चचल चपल हिलोर पर,
एक अनछुई रश्मि प्रतीकित हर हिलोर की कोर पर
परिधि रहित सौदय चूर कर गघ न पीता ज्योति को,
स्वप्न बाटता कवि के चेतन मन के अपलक छोर पर,

राह भूल कर आज स्वय को सृष्टि रही है भूल सी,
देखो तो चचल समीर पर सास झुकी है फूल सी
गीतो के पल्लव दल में लेता नवीन अगडाइया
गीता की सीमा के आगे पृथ्वी उडती धूल सी ।

एक वदना ऊपा की पलका से पथ बुहारती,
एक साघना सध्या की बातो से पथ सवारती,
एक चेतना मध्यरात्रि की सासो में स्वर फूकती,
एक अचना भाषा बनती, एक सजना भारती ।

रण-विदा

—महादेवी वर्मा

मा! जीवन अंजलि मे मेरे तपण हित कुछ अर्पित फूल ।
उन्हे करू क्या ? चढा दिया, लो, चरणो की लेने दो धूल ।।

हृदय-द्वार हो गये बंद, कोने मे जब क्रंदित अनुराग ।
अरे सिखाना है जग को जीने का सच्चा राग विराग ।।

इस नि सीम गगन के अदर, कभी न होगा उल्कापात ।
फिर न देखने में आवेगा, बधिको का भीषण उत्पात ।।

हा जाने दो नतन अघ का, बस मॉ ! है यह अन्तिम वार
दे देती आहो पर तेरी चण्डी को जग का अधिकार ।

झुलस न जायें हृदय-कुसुम, सुठि वितरण करते रहें सुगध ।
सौरभ लालुप अलि का मजुल भावो से ही कर दें अध ।।

गूज उठे यह चतुष्पाश्व मे, गर्वीला मन निभय नाद ।
बलि हो जाऊँगी मा हित, मा ! ऐसा दे तू आशीर्वाद ।।

मैंने कहा नियति से, तू पावो म पायल बाध ले,
तुझे नाचना है मेरी ज्वाला के उपसहार पर ।

मुझसे पूछो, मैं बतलाऊ वह तारो का खेत ह,
वहा एक गगा बहती है, कही न मरुत रेत है,
चन्द्र-सूय दो महाकाव्य मने ह लिखे सनेह से,
अतरिक्ष का हर अक्षर मेरे पथ का सकेत है ।

शिला खड पर विटप छाह दूधिया चादनी आकती,
शाखाओ पर झुकी वायु घूघट के पट से झाकती,
पथ सोया है कण-कण म अनखुली कहानी बांध कर,
नीरवता अधखिले पत्र पर शब्द सजल कुछ टाकती ।

कभी कभी बेहोशी दृगपट पर चित्र उतारती,
कभी-कभी मूच्छना स्वय सना का रूप सवारती,
कभी-कभी जीवन से दो क्षण दान मरण ही मागता,
कभी-कभी कपित लौ पर मदिर संभालती आरती ।

स्वग तैरता है समुद्र की चचल चपल हिलोर पर
एक अनछुई रश्मि प्रतीक्षित हर हिलोर की कोर पर,
परिधि रहित सौदय चूर कर गध न पीता ज्योति का,
स्वप्न बाटता कवि के चेतन मन के अपलक छोर पर,

राह भूल कर आज स्वय को सृष्टि रही ह भूल सी,
देखो तो चचल समीर पर सास झुकी है फूल सी
गीता के पल्लव दल में लेता नवीन अगडाइया,
गीतो की सीमा के आगे पथ्वी उडती धूल सी ।

एक वदना ऊषा की पलको से पथ बुहारती,
एक साधना सध्या की बातो से पथ सवारती,
एक चेतना मध्यरात्रि की सासो में स्वर फूकती
एक अर्चना भाषा बनती, एक सजना भारती ।

रण-विदा

—महादेवी वर्मा

मा! जीवन-अंजलि म मेरे तपण हित कुछ अर्पित फूल ।
उन्ह करू क्या ? चढ़ा दिया, लो, चरणा की लेने दो

हृदय-द्वार हो गये बंद, कोने मे जब क्रंदित अनुराग ।
अरे सिखाना है जग को जीने का सच्चा राग विराग ।।

इस नि सीम गगन के अंदर, कभी न होगा उल्कापात ।
फिर न देखने में आवेगा, बधिको का भीषण उत्पात ।।

हो जाने दो नतन अघ का बस मां ! है यह अन्तिम वा
दे देती आहो पर तेरी चण्डी को जग का अधिकार ।

मुलस न जाये हृदय-कुसुम, सुठि वितरण करते रहें सुगध
सौरभ-लोलुप अलि को मजुल भावो मे ही कर दें अध ।

गूंज उठे यह चतुष्पाश्व मे, गर्वीला मन निभय नाद ।
बलि हो जाऊँगी मां हित, मा ! ऐसा दे तू आशीर्वाद ।।

आजादी का गीत

—हरिवशराय 'बच्चन'

हम ऐसे आजाद हमारा झडा है बादल ।

चाँदी सोने, हीरे, मोती से सजती गुडियाँ,
इनसे आतकित करने की बीत गई घडियाँ,
इनसे सज धज बठा करते जो ह कटपुतले
हमने तोड अभी फेंकी हैं बेडी हथकडियाँ,
परपरा गत पुरखो की हमने जाग्रत की फिर से
उठा शीश पर रक्खा हमने हिम किरीट उज्ज्वल !
हम ऐसे आजाद हमारा झडा ह बादल !

चादी, सोने, हीरे, मोती से सजवा छाते,
जो अपने सिर धरवाते थे वे अब शरमाते,
फूल कली बरसाने वाली टूट गई दुनिया
वज्रो के वाहन अम्बर में निभय घहराते,

इन्द्रायुध भी एक बार जो हिम्मत से ओढे,
छत्र हमारा निर्मित करते साठ कोटि करतल !
हम ऐसे आजाद हमारा झडा है बादल !

चाँदी, सोने, हीरे, मोती से सज सिहासन
जो बैठा करते थे उनका खत्म हुआ शासन
उनका वह सामान अजायबघर की अब शोभा
उनका वह अभिमान महज इतिहासो का वर्णन,
नही उसे छू कभी सकेंगे शाह लुटेरे भी,
मस्त हमारा भारत माँ की गोदी का शाद्वल !
हम ऐसे आजाद हमारा झडा है बादल !

चाँदी सोने, हीरे, मोती का हाथो मे दड,
चिन्ह कभी था अधिकारो का अब केवल पाखण्ड
समझ गई अब सारी जगती क्या सिंगार क्या शक्ति
कर्मठ हाथो के अन्दर ही बसता तेज प्रचण्ड,
जिधर उठेगा महासृष्टि होगी या महा प्रलय,
स्फूरित हमारे राजदड में साठ कोटि भुज-बल !
हम ऐसे आजाद हमारा झडा है बादल !

7—1PROD/ND/82

जौहर

—श्यामनारायण पाण्डेय

ग्राज तक किसने ग्रनल की, भूख की ज्वाला बुझायी ?
जो चला ज्वाला बुझाने बुझ गया पत भी गँवायी
लाल लाल कराल जीभा, का निकाल बढा रही थी
ग्रग्नि की हिलती शिखाएँ प्रलय पाठ पढा रही थी।

ग्राज इस नरमेध मख में, बाल—केलि दुलार स्वाहा !
धधकती जलती चिता में मा बहन के प्यार स्वाहा !
साथ ग्राहुति में ग्रनल के, मेदिनी के भोग स्वाहा !
लो पिता—माता—प्रिया के, योग ग्रौर वियोग स्वाहा !
मदिरो के दीप स्वाहा ! राजमहल—विभूति स्वाहा !
ग्राज कुल की रीति पर ला नीति भूपित भूति स्वाहा !
ग्रमर वभव से भरे इस ज्वाल मे घर द्वार स्वाहा !
ग्रान-बान सतीत्व पर लो, ग्राज कुल परिवार स्वाहा !

रक्षा-बंधन

—हरिकृष्ण 'प्रेमी'

बहन बाँध दे रक्षा-बंधन मुझे समर में जाना है ।
भव के घन-गर्जन में रण का भीषण छिड़ा तराना है ।
दे आशीष, जननि के चरणों में यह शीश चढ़ाना है ।
बहन, पोंछ लें अश्रु गुलामी का यदि दुःख मिटाना है ।।

अन्तिम बार बाँध ले राखी
कर ले प्यार आखिरी बार—
मुझको, जालिम ने फाँसी की
डोरी कर रक्खी तैयार ।।

रक्षा रक्षा कायरता से, मर मिटने का दे वरदान ।
हृदय रक्त से टीका कर दे, दे मस्तक पर लाल निशान ।।
वह जीवन का स्रोत आज कर भरे मानस में संचार ।
अचल रहूँ मैं देख समर में रिपु की बिजली-सी तलवार ।।

अपना शीश कटा जननी की
जय का मार्ग बनाना है ।
बहन, बाँध दे रक्षा-बंधन
मुझे समर में जाना है ।

जिसने लाखा ललनाओ थे पाछ दिये मिर के सिदूर ।
गडा रहा कितनी कुटियाग्रा के दीपो पर ग्राँखें क्रूर ॥
वज्र गिराकर कितने कोमल हृदय कर दिये चकनाचूर ।
उस पापी की प्याम बुझाने, बहन जा रहे लाखा शूर ॥

मत्यु विटप की शाखा पर म,
डाल हिंडाला झूलूगा ॥
दा पींगा में ग्रमर लाक की
ग्रतिम सीढी चूमूगा ॥

बहन, शीश पर मेरे रख दे स्नेह-सहित ग्रपना शुभ हाथ ।
कटने के पहले न झुके यह ऊचा रहे गव के साथ ॥
उम हत्यारे ने कर डाला, ग्रपना सारा देश ग्रनाथ ।
ग्राश्रयहीन हुई यदि तू भी, ऊँचा होगा तेरा माथ ॥

दीन भिखारिन बनकर तू भी
गली गली फेरी देना—
'उठो व धुग्रो, विजय-वधू को
वरो, तभी निद्रा लेना ॥"

ग्राज सभी देते ह ग्रपनी बहना को ग्रमूल्य उपहार ।
मेरे पास रखा ही क्या है ग्राखो के ग्रासू दा चार ॥
ला दो चार गिरा दूँ, ग्रागे ग्रपना ग्राचल विमल पसार ।
तू कहती है—"ये मणियाँ ह, इन पर न्योछावर ससार ॥

बहन बढा दे चरण कमल मै
ग्रतिम बार उन्ह लूँ चूम
तेरे शुचि स्वर्गीय स्नेह के,
गमर नशे मे लू ग्रब झूम ॥

भारतीय सेना का प्रयाण-गीत

—रामधारीसिंह 'दिनकर'

जाग रहे हम वीर जवान
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

हम प्रभात की नई किरण हैं, हम दिन के आलोक नवल ।
हम नवीन भारत के सैनिक, धीर वीर, गंभीर अचल ।
हम प्रहरी ऊँचे हिमाद्रि के, सुरभि स्वर्ग की लेते हैं ।
हम हैं शांति दूत धरणी के, छाँह सभी को देते हैं ।
वीरप्रसू माँ की आँखों के हम नवीन उजियाले हैं ।
गंगा, यमुना हिन्द महासागर के हम रखवाले हैं ।

तन, मन, धन तुम पर कुर्बान,
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

हम सपूत उनके जो नर थे, अनल और मधु के मिश्रण ।
जिनमें नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन ।
एक नयन संजीवन जिनका एक नयन था हलाहल ।

जितना कठिन खड्ग था कर में उतना ही अंतर कोमल ।
थर थर तीनों लोक कांपते थे जिनकी तलवारों पर ।
स्वर्ग नाचता था रण में जिनकी पवित्र तलवारों पर ।

हम उन वीरों की सन्तान,
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

हम शकारि विक्रमादित्य हैं अरि दल को दलने वाले ।
रण में जमीं नहीं दुश्मन की लाशों पर चलने वाले ।
हम अर्जुन, हम भीम, शान्ति के लिए जगत में जीते हैं ।
मगर, शत्रु हठ करे अगर तो, लहू वक्ष का पीते हैं ।
हम हैं शिवा प्रताप रोटियाँ भले घास की खायेंगे ।
मगर, किसी जुलमी के आगे, मस्तक नहीं झुकायेंगे ।

देंगे जान, नहीं ईमान,
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

जियो जियो अय देश ! कि पहरे पर ही जगे हुए हैं हम !
वन, पर्वत हर तरफ चौकसी में ही लगे हुए हैं हम !
हिन्द सिन्धु की कसम, कौन इस पर जहाज ला सकता है ?
सरहद के भीतर कोई दुश्मन कैसे आ सकता है ?
पर की हम कुछ नहीं चाहते अपनी किन्तु बचायेंगे ।
जिसकी उँगली उठी, उसे हम यमपुर को पहुँचायेंगे ।

हम प्रहरी यमराज समान,
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

बढ़े चलो

—पद्मकांत मालवीय

चले चला, बढ़े चला, बढ़े चला, चले चला ।
प्रचंड सूर्य-ताप से न तुम जलो, न तुम गलो ।।

हृदय से तुम निकाल दो अगर हो पस्त हिम्मती ।
नहीं है खेल मात्र ये, ये जिन्दगी है जिन्दगी ।
न रक्त है, न स्वेद है न हर्ष है न खेद है
ये जिन्दगी अभेद है, यही तो एक भेद है ।
समझ के सब चले चलो कदम कदम बढ़े चलो ।।

पहाड़ से चली नदी रुकी नहीं कहीं जरा ।
गई जिधर उधर किया जमीन को हरा भरा ।
चली समान रूप से, जमीन का न ख्याल कर
मगन रही निनाद में, जमीन पर पहाड़ पर ।
उसी तरह चले चला, उसी तरह बढ़े चला ।।

जलाओ दिल के दाग से बुझे दिला के दीप को।
जो दूर ह उन्हें भी खींच लो जरा समीप को।
सहो जमीन की तरह, डरो न आसमान से,
जलो तो आन बान से, बुझो तो एक शान से।
अखंड-दीप से जलो, सदा-बहार से खिलो।

बिना पिये रहे नशा न चढ़के वो उतर सके।
जुनून वह सवार हो कि जा न उम्र भर सके।
वो काम तुम करो यहाँ, जो दूसरा न कर सके।
कोई तुम्हारी शान से, न जी सके न मर सके।
समीर से चले चलो, समीर से बहे चलो ॥

जागरण गीत

—कमला चौधरी

लोरी गान न गाना जननी, अवसर नहीं सुलाने का
गान जागरण के माँ गाओ, आया समय जगाने का ।।

लक्ष्मण राम कहाँ सोए हैं, जन जन में उन्हें जगाओ,
टेर कहो हनुमान वीर से आ चीनी लंका ढाओ ।
कहो कृष्ण से चक्र सुदर्शन ले समर क्षेत्र में जाओ
एक नहीं लाखों अर्जुन को फिर धर्म-युद्ध सिखलाओ ।

आया समय समर में फिर से कर्मयोग दुहराने का
गान जागरण के माँ गाओ, आया समय जगाने का ।।

अर्जुन कर्ण, भीम दुर्योधन, अब लड़ें न भाई भाई
कौरव पांडव मिल कर जूझें, यह घर की नहीं लड़ाई ।
देवासुर संग्राम, चीन ने भारत पर की चढ़ाई,
भीष्म पितामह का प्रण जागे बल पौरुष की प्रभुताई

आज महाभारत जागा, और समर राजपूताने का,
गान जागरण के माँ गाओ, आया समय जगाने का ।।

जाग उठ राणा प्रताप सौ भारत की नई जवानी,
विकराल काल सी वीर शिवा की जागे पुन भवानी।
त्याग गुरु गोविन्द का जागे उठ खड़े सिक्ख बलिदानी,
बन्दा बैरागी, गोरा बादल शूर वीर क्षत्राणी।

देश प्रेम की ज्वाला भड़के समय खड्ग खड़काने का,
गान जागरण के मा गाम्रो, आया समय जगाने का ॥

सन् सत्तावन की क्रांति जगे, फिर युद्ध ठने घमसानी,
चौहान, मराठा नाना टापे, लक्ष्मीबाई मर्दानी।
गांधी की आंधी फिर जागे, उठ पड़े वीर बलिदानी
वीर भगतसिंह आजाद साहसी औ सुभाष सेनानी।

आज सुनहरा मौका आया, नाम अमर कर जाने का,
गान जागरण के मा गाम्रो, आया समय जगाने का ॥

रक्त पुकार रहा पुरखो का, सुनो शहीदा की वानी
फिर इतिहास बदलता करवट, फिर माँग रहा कुर्बानी।
माँ का आंचल खींच रहा है कुटिल चीन अभिमानी
किंचित भाग न जाने देना, यह धरती है बलिदानी॥

विजय जवाहर फिर से पाए, अवसर हाथ बटाने का,
गान जागरण के मा गाम्रो, आया समय जगाने का ॥

नवीन का स्वागत

—कलक्टर सिह 'केसरी

नवीन कठ दो कि म नवीन गान गा सकूँ
स्वतन्त्र देश की नवीन आरती सजा सकूँ

नवीन सृष्टि का नया विधान आज हो रहा
नवीन आसमान में विहान आज हो रहा
खुली दसो दिशा खुले कपाट ज्योति-द्वार के—
विमुक्त राष्ट्र-सूय भासमान आज हो रहा
युगात की व्यथा लिए अतीत आज सो रहा
दिगत म वसत का भविष्य बीज बो रहा
सुदीघ क्राति झेल खेल के ज्वलत आग से—
स्वदेश बल सजा रहा कडी थकान खो रहा

प्रबुद्ध राष्ट्र की नवीन व दना सुना सकूँ
नवीन बीन दो कि म अगीत गीत गा सकूँ ।

नये समाज के लिये नवीन नींव पड चुकी
नये मकान के लिए नवीन इंट गड चुकी
सभी कुटुम्ब एक, कौन पास कौन दूर हैं
नये समाज का हरेक व्यक्ति एक नूर है
कुलीन जो उसे नहीं गुमान या गरूर है
समर्थ शक्तिपूर्ण जो किसान या मजूर है
भविष्य-द्वार मुक्त है बढे चलो चले चलो
मनुष्य बन मनुष्य से गले गले मिले चलो
समान भाव के प्रकाशवान् सूर्य के तले
समान रूप-गंध फूल फूल से खिले चलो
पुरान पथ में खडे विरोध वर भाव के—
त्रिशूल को दले चलो बबूल को मले चलो
प्रवेश पर्व है स्वदेश का नवीन वेश में—
मनुष्य बन मनुष्य से गले गले मिले चलो ।

नवीन भाव दो कि मैं नवीन गान गा सकूँ
नवीन देश की नवीन अर्चना सुना सकूँ ।

संभलते रहेंगे

—शिशुपाल सिंह 'शिशु'

उमंगे लिये जोश जैसे कि पहले,
उबलते रहे थे—उबलते रहेंगे ।
समय आ पड़े जिस तरह शान से हम,
निकलते रहे थे—निकलते रहेंगे ।

रहम की न खायेंगे ऐसी कसम भी,
कि कोई हम क्रूर—कायर बताये ।
मगर निर्दयी भी न ऐसे बनेंगे,
कि कोई हमें क्रूर डायर बताये ।
रहम का रहेगा सदा साथ मरहम,
मगर हाथ में तेज नश्तर भी होंगे ।
महारोष में होश जसे कि पहले,
सभलते रहे थे—सभलते रहेंगे ।

निमन्त्रण सरल हास का तो,
लिये हाथ में फूल आगे बढ़ेंगे ।
चुनौती मिलेगी कुटिल भौंह की तो,
लिये हाथ में शूल आगे बढ़ेंगे ।
लिये चन्द्र का तोष है आँख दाँयी
लिये सूय का रोष है आँख बायी ।
बदलते रहे थे—बदलते रहेंगे ।

प्रकृति से हमें जो मिला बल उसे हम
सदा निबलों की समझते हैं थाती ।
इसी से किसी चोट खाये हुए की
दशा देख कर आँख है तिलमिलाती ।
तवारीख से कोई ले ले गवाही
हमारे ही ज्वालामुखी के तपन से
अहंकारियों के दिमागों के गूदे,
पिघलते रहे थे—पिघलते रहेंगे !

हमें शास्त्र में काम केवल यही है,
व्यवस्थाएँ कोई अधोगति न पायें
सरोकार केवल यही शस्त्र से है
कि हठधर्मिया शिर न अपना उठायें
सतोगुण रजोगुण के क्षेत्रों की सीमा
हमारे ही प्रहरी रखाते रहे हैं
हमीं बुद्धि के, शक्ति के सगमों पर
टहलते रहे थे—टहलते रहेंगे ।

हमें नात है उन गरीबों की दुर्गति
कि जो दर्द के साथ उठते रहे हैं
हमें नात है उन गरीबों की हालत
कि जो अश्रु के साथ गिरते रहे हैं

मगर इस दिशा के प्रमुख कारणों को
कुबेरों का हम आज समझा रहे हैं
हमारे महावीर सोने के सूरज
निगलते रहे थे—निगलते रहेंगे ।

शख ध्वनि

—आरसीप्रसाद सिंह

मातृभूमि के पहरेदारो, हिमवानो, तुम जागो तो।
आसमान को छूने वाले पाषाणो, तुम जागो तो।
तुम जागो तो, नव भारत के जन-जन का जीवन जग जाये।
तुम जागो तो, जन्मभूमि की माटी का कण-कण जग जाये।
तुम जागो तो, जग का आँगन दीपा से जगमग हो जाये।
बैरी के पैरा के नीचे से धरती डगमग हो जाये।
युग-तरुणाई ले अगडाई, तूफानो, तुम जागो ता।
मातभूमि के पहरेदारो, हिमवानो, तुम जागो तो।
खेत खेत में सोना बरसे, आगन आगन मे मोती।
शिखर शिखर पर नयी किरण की आज सरस वर्षा होती।
नव उमग जागे प्राणा में, स्वर नवीन हुकार उठे।
जन भारत वनराज जाग कर आज विमुक्त दहाड उठे।
कर जागे करवाल जगे, ओ दीवानो तुम जागो तो।
मातृभूमि के पहरेदारो, हिमवाना, तुम जागो तो।

तुम जागो, तो मानसरोवर जाग उठे, कैलाश जगे।
बमभोले प्रलयंकर शंकर का ताण्डव उल्लास जगे।
भारत वासी का तन जागे, तन में यौवन रक्त जगे।
मन्दिर का भगवान जगे, औ देवालय का भक्त जगे।

ओ अजेय उन्नत भारत के अरमानो, तुम जागो तो।
मातभूमि के पहरेदारो, हिमवानो, तुम जागो तो।

बोलो, बोलो, एक बार फिर पुरुष सिंह, तुम शाक्य उठो।
महावीर औ चन्द्रगुप्त, लो धनुष, वीर चाणक्य उठो।
वीर सिकन्दर के मद मदन कारी जय पुरूराज उठो।
यवणा हूणा और शका के विजयी विक्रम आज उठो।

आ अशोक की धर्मशिला लिपि, चट्टानो, तुम जागो तो।
मातभूमि के पहरेदारो, हिमवानो तुम जागो तो।

तुम जागो तो, जगे अजन्ता और एलोरा की वाणी।
वैशाली नालन्दा जागे कला भारती कल्याणी।
ऋषि मुनियों की त्याग-तपस्या पुण्य त्रिवेणी-तीर जगे।
जलियावाला बाग जगे और साबरमती हिलोर जगे।

देश प्रेम की दीपशिखा के परवानो, तुम जागो तो।
मातभूमि के पहरेदारो हिमवानो, तुम जागो तो।

तुम जागो तो, पौरुष जागे, मधुमय मेरा देश जगे।
भाग्य देवता ग्राम ग्राम का ब्रह्मा विष्णु महेश जगे।
हल जागे, हलवाहा जागे, धरती जगे किसान जगे।
वन जागे जागे वनदेवी, खेत जगे, खलिहान जगे।

उठो पलासी, पानीपत के मैदानो, तुम जागो तो।
मातृभूमि के पहरेदारो, हिमवानो, तुम जागो तो।
जागो, युग-परिवर्तनकारी, ओ इतिहास बदलने वालो।
उदयाचल के तुंग भाल पर उषा किरण से जलने वालो।
ओ पवित्र गंगाजल-पायी, कावेरी-तट वासी जागो।
ओ भारत के सन्त महात्मा, ओ गृहस्थ संयासी जागो।
कालकूट प्रिय मृत्युंजय की मस्तानो तुम जागो तो।
मातृभूमि के पहरेदारो, हिमवानो तुम जागो तो।

8—1 Prod/ND/82

राष्ट्र को जीवन दान करो

—भवानी प्रसाद तिवारी

जीत मरण को, वीर, राष्ट्र को जीवन दान करो
समर-खेत के बीच, अभय हो मगल-गान करो

भारत माँ के मुकुट छीनने आया दस्यु विदेशी
ब्रह्म-पुत्र के तीर पछाडो, उघड जाय छल वेषी
जन्मसिद्ध अधिकार बचाओ सह अभियान करो
समर-खेत के बीच, अभय हो मगल-गान करो

क्या विवाद में उलझ रहे हो ? हिंसा या कि अहिंसा ?
कायरता से श्रेयस्कर है—छन्न प्रतिकारी हिंसा
रक्षक शस्त्र सदा वन्दित है द्रुत सन्धान करो
समर खेत के बीच अभय हो, मगल गान करो

कालनेमि ने कपट किया पवनज ने किया भरोसा
साक्षी है इतिहास विश्व में किसका कौन भरोसा

है, विजयी विश्वास । 'ग्लानि' का अभ्युत्थान करो
ममर-खेत के बीच, अभय हो, मगल गान करो

महाकाल की पाद-भूमि है, रक्त सुरा का प्याला
पीकर प्रहरी नाच रहा है देश प्रेम मतवाला
चलो, चलो रे हम भी नाचें, नग्न कृपाण करो
समर-खेत के बीच, अभय हो मगल गान करो

आज मृत्यु से जूझ राष्ट्र को जीवन दान करो
रण-खेतो के बीच, अभय हो मगल गान करा ।

शहीद-गीत

—रामगोपाल 'रुद्र'

जगमगा रहा दिया मजार पर !
एक ही दिया सनेह से भरा,
प्रेम का प्रकाश, प्रेम से धरा,
झिलमिला हवा को तिलमिला रहा,
ज्योति का निशान जो हिला रहा,
मुस्कुरा रहा है अन्धकार पर !
यह मजार है किसी शहीद का,
दर्शनीय था जो चाँद ईद का
देश का सपूत था, गुमान था,
सत्व का स्वरूप, नौजवान था
जो चला किया सदा दुधार पर !
देश का दलन, दुसह दुराज वह
वे कुरीतियाँ, दलित समाज वह

वे गुलामिया जो पीसती रही
वे अनीतियाँ जा टीसती रही,

वह दमन का चक्र अश्रुधार पर।

देख आँखा मे लहू उतर गया
पख चैन के कोई कुतर गया,
धधक उठी आग अग अग मे
खौल उठा विष उमग उमग मे,

चल पडा अमर, अमर पुकार पर।

वह जिधर चला, जवानियाँ चलीं,
बाढ की विकल रवानिया चली,
नाश की नई निशानिया चली
इन्कलाब की कहानियाँ चलीं,

फूल के चरण चले अँगार पर।

दम्भ का जहा-जहा पडाव था,
सत्य से जहाँ जहा दुराव था
वह चला कि अग्निबाण मारता,
पाप की अटा अटा उजाडता,

वज्र बन गिरा, गिरे विचार पर।

आज देश के उसी सपूत की,
राष्ट्र के शहीद अग्रदूत की,
शान्ति की मशाल जा लिये चला,
क्रान्ति के कमान जा किये चला

लौ जगा रहा दिया मजार पर।

नवीन

—गोपालसिंह नेपाली

तुम कल्पना करो नवीन कल्पना करो
तुम कल्पना करो

अब घिस गई समाज की तमाम नीतियाँ
अब घिस गई मनुष्य की अतीत रीतियाँ
है दे रही चुनौतियाँ तुम्हें कुरीतियाँ
निज राष्ट्र के शरीर के सिंगार के लिए
तुम कल्पना करो नवीन कल्पना करो
तुम कल्पना करो

जंजीर टूटती कभी न अश्रु धार से
दुख दर्द दूर भागते नहीं दुलार से
हटती न दासता पुकार से, गुहार से
इस गंग-तीर बैठ आज राष्ट्र शक्ति की
तुम कामना करो किशोर, कामना करो
तुम कामना करो

जो तुम गये, स्वदेश की जवानियाँ गई
चित्तौर के 'प्रताप' की कहानियाँ गई
आजाद देश-रक्त की रवानियाँ गई
अब सूय चन्द्र से समृद्धि ऋद्धि सिद्धि की
तुम याचना करो दरिद्र, याचना करो
तुम याचना करो

, जिसकी तरग लाल है अशान्त सिन्धु वह
जो काटता घटा प्रगाढ वक्र इन्दु वह
जो मापता समग्र सृष्टि दृष्टि बिन्दु वह
वह है मनुष्य जो स्वदेश की व्यथा हरे
तुम यातना हरो मनुष्य, यातना हरो
तुम यातना हरो

तुम प्राथना किये चले, नही दिशा हिली
तुम साधना किये चले, नही निशा हिली
इस आत दीन देश की न दुर्दशा टली
अब अश्रु दान छोड आज शीश दान से
तुम अचना करो अमोघ अचना करो
तुम अचना करो

आकाश ह स्वतन्त्र है स्वतन्त्र मेखला
यह शृग भी स्वतन्त्र ही खडा, बना, ढला
है जल प्रपात काटता सदैव शृखला
आनन्द शोक जन्म और मृत्यु के लिये
तुम योजना करो स्वतन्त्र योजना करो
तुम योजना करो

फिर महान बन!

—नरेन्द्र शर्मा

फिर महान बन, मनुष्य !
फिर महान बन !

मन मिला अपार प्रेम से भरा तुझे
इसलिए कि प्यास-जीव-मात्र की बुझे,
विश्व है तृषित, मनुष्य, अब न बन कृपण !
फिर महान बन !

शत्रु को न कर सके क्षमा प्रदान जो,
जीत क्या उसे न हार के समान हो ?
शूल क्या न वक्ष पर बनें विजय-सुमन !
फिर महान बन !

रोशनआरा

—नर्मदा प्रसाद खरे

शबनम एकाएक कि जैसे बनी धधकता अंगारा,
सीने से बम बाँध, टैंक से टकरायी रोशनआरा।

इन्सानी चालों के भीतर दुष्ट भेडिये बैठे थे,
बारूदी ताकत की दम पर अहंकार से ऐंठे थे।

सरे ग्राम नापाम बमों से नर-संहार मचाते थे,
माताओं की अस्मत लुटती, बेटे भूने जाते थे।

ऐसे दृश्य देखकर अपने मन प्राणों को धिक्कारा,
मरने को तैयार हो गई बिना झिझक रोशनआरा।

महाकाल सा टैंक सामने आगे बढता आता था
बेगुनाह बच्चा-बूढों को छाती दलता जाता था।

सत्यनाशी दृश्य देखकर उबल पडी वह नव बाला,
पल में अन्तर की चिनगारी भडकी बन भीषण ज्वाला।

बिजली सी टूटी दुश्मन पर, ठगा रहा गया हत्यारा,
एक नया इतिहास लिख गयी तेजमयी रोशनआरा।

शौर्यमयी एसी बेटी को दुनिया भूल न पायेगी,
उसकी गौरव-गाथा गाकर फूली नहीं समायेगी।

सिद्ध हुई सच्ची सपूतिनी देश प्रेम की दीवानी
हम सब उसको याद करेंगे भर कर आखा में पानी।

आजादी के लिए मौत का हस कर उसने स्वीकारा,
बलि पथ में आलोक भर गई, बलिदानी राशनआरा।

दीपक मन्द न हो

—बालकृष्ण राव

दीप मन्द न हो
मार्ग का दीपक मन्द न हो !
खोल द्वार यदि देवालय ही स्वयं निर्मन्त्रित करता
हर्षित होता, किन्तु उपासक सोच सोच कर डरता
फिर से बन्द न हो
द्वार वह फिर से बन्द न हो ।
छिपे न शशि, अलसाई पलकें झिप न जायें तारों की,
बने निशा ही स्वयं कल्पना दिन के शृंगारों की,
जब अभिनन्दन हो
सूर्य का जब अभिनन्दन हो ।
लक्ष्य दूरतर हुआ, कठिनतर हुई विषम वन वीथी,
श्रान्त पथिक ने किन्तु एक बस यही प्रार्थना की थी
दीपक मन्द न हो
मार्ग का दीपक मन्द न हो !

स्फटिक प्रश्न

—भवानीप्रसाद मिश्र

हाश मुश्किल चीज है
वह इन दिनों मुश्किल से टिकता है
मै अभी बेहोश हूँ दिख रहे है या मुझे
उडते हुए घन जो बरसना भूलकर
आषाढ भर उडते रहे है
होश शायद खो दिया है इन घनो ने
क्योकि घन आषाढ के बाहोश हो तो बरसते है
और मेरे देश के वन-बाग सब कुछ सरसते है
घन नही बरसे न सरसे बाग-बन
हाय रे बेहोश जग बेहोश घन
होश मुश्किल चीज है
बेहोशियो के बीच से कैसे खिचेगा
और हिंदुस्तान का वन बाग सब कुछ
किस तरह फिर से सिंचेगा

किन्तु यह तो प्रश्न भर है
कोई यह मत समझ लेना
मुझे उत्तर चाहिए इस प्रश्न का
पूछ भर लेता हूं मैं तो हवा से मानो
कि मन में जब कभी कुछ प्रश्न उठते हैं

सुबह होती है, धुआं उठता है घर के छप्परों से गांव में
और जुम्बिश एक घर से निकल पड़ने के लिए
आकर समा जाती है मेरे पांव में
पांव मेरे जिस दिशा में गति लहरते हैं
वह दिशा उत्तर नहीं होती कभी, वह प्रश्न होती है
प्रश्न की आदत मुझे हो गई है
तृषा उत्तर की अभी खो गई है
जिन्दगी मेरी समूची प्रश्न है
प्रश्न मेरा तीव्रतर होता चले बेहोशियों के बीच भी यह लालसा है
लोग सुनकर प्रश्न मेरा सोच में पड़ जायें, यह क्या काल-सा है

प्रश्न मेरे प्रश्न भर पैदा करें अभी उत्तर की नहीं है लालसा
होश मुश्किल चीज है, प्रश्न होंगे चारसू से जब निरंतर
हवा पूछेगी पवन पूछेगी पूछेंगे उजड़ते खेत
जब नदी पूछेगी, पूछेगी पहाड़ी
और पूछेगी उठा कर सिर गगन तक निपट फैली रेत
तब समेटेंगे बिखरते होश ये आपाद घन
और तब सरसेंगे मेरे देश के उजड़े हुए ये बाग-वन

प्रश्न चारो ओर से आओ, उठो बेचैन मेरे प्रश्न
चारो ओर से आओ कि यह क्या हो रहा है
उठो जैसे कि कोई चाँद उठता है गगन में
उठो जैसे कि कोई गान उठता है पवन में
उठो जैसे कोई बीमार उठता है

उठो जैसे लहर का ज्वार उठता है
उठो जैसे कुतूहल की घडी मे घूघट उठे हो
उठो जैसे आग लगने पर लबालब घट उठे हो
उठो जैसे पट उठें हो देखकर पानी
उठो जैसे हो उठी भयभीत की वाणी
उठो जैसे उठे प्रभु का हाथ
उठो मेरे प्रश्न सुख के साथ
चाँद में बीमार में घूघट में पट में
आग में पानी में ज्वाला में लपट में
उठो मेरे प्रश्न चारो ओर मे
उठो रे उठ कर पुकारो जोर से
क्या हो रहा है
कौन है जो सो रहा है नीद सुख की

आग जब घर म लगी है
कौन है जो बुझाने बढता नही है
कौन है जो और भडकाना जरूरी समझता है आग को
कौन है जो एक सुविधा समझता है जल रहे इस आग को

कौन है जो सोचता है
रोटियाँ सेंकेंगे भड़के आग
कौन है वह कौन है वह प्रश्न मेरे जाग
जागो प्रश्न मेरे देश को घेरे रहो बन कर कवच
तुम फिको ऐसे कि जैसे फिक रहा हो स्फटिक पत्थर स्वच्छ

गोफन से निकल कर
टूट जाए मुह गलत उत्तर न निकले ।

मातृ-वन्दना

—विद्यावती 'कोकिल'

भारत माता तुम्हें प्रणाम ।

अपनी चल जल धाराओ से है श्री शोभित,
फलापन्न घन उद्यानो से आभामडित,

आनन्दोर्मिल पवनो से अपनी चिर शीतल,
पुलकित, प्रमुदित, कपित वन शस्यो से श्यामल ।

दोलित तरु शाखाओ औ रजतिम शिखरो पर
चन्द्रप्रभा के सपनो की महिमा वाणीतर

विचित्राभ मुकुलित वन वैभव से आभूषित,
हम इन मगलमय सरसिज चरणो पर आश्रित
हे मृदु हासिनि, हे मितभाषिणि भारत माता तुम्हें प्रणाम ।

चमकी जब तलवारें सत्तर कोटि करो में,
वे गूज उठी हुकारे सत्तर कोटि उरो में,

कौन तुम्हें तब कहता दीना और मलीना,
कौन तुम्हें तब कहता अकमण्य, बलहीना,

पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन छोर छोर तक,
देश देश में दारुण नाम तुम्हारा व्यापक,

महती दीपमचिता सुशक्तिया की स्वामिनि,
और हमारी हो तुम माँ, रानी, वरदायिनि,
परम रक्षिके, परम पालिके भारत माता तुम्हे प्रणाम ।

जिसने दिया न कभी डालने अरि को डेरा,
जल की, थल की सीमाओं से सदा खदेड़ा

फिर फिर कर ली अपनी भूमि स्वतंत्र दुलारी
उसके चरणों में अर्पित सब प्रगति हमारी

तुम्ही परा प्रज्ञा हो नियम विधान तुम्ही हो
तुम्ही हृदय औ आत्मा, जग की प्राण तुम्ही हो

यम पर भी जय पाने वाली हृदय शक्ति हो,
दिव्य प्रेम हो और प्राण की परम भक्ति हो
काल अर्गला, प्रीति विह्वला भारत माता तुम्हे प्रणाम ।

तुम्ही हाथ की नाडी और नसों का बल हो,
तुम माथे का चदन आँखों का काजल हो,

और तुम्ही आकर्षण, सुन्दरता केवल हो,
काया को सुख शैया, आत्म निलय प्राजल हो,

जनम-जनम के मेरे पातक का गंगाजल
मेरी सब कायरता हित गीतामृत उज्ज्वल,

9—1Prod/ND/82

मंदिर की सारी दिव्य मूर्तियों में अविचल,
मिलती एक तुम्हारी ही तो झाँकी झलमल,
हे देवना हे मन्नग्ना भारत माता तुम्हें प्रणाम ।

तुम दुगा हो, कुल पूज्या हो, सबकी रानी,
शत्रुमर्दिनी और शांति की खड्ग वाहिनी,

और तुम्हीं कमलासीना माता लक्ष्मी हो,
औ सहस्र स्वरलहरी जननी सरस्वती हो,

दूर्वादल श्यामल तन शोभे अतुलनीय हो
आत्मा की अमला आभे, तुम अद्वितीय हो,

दो हमको अब जननी अपनी पावन श्रुति दो,
दो हमको जननी अपनी निस्सीमा धृति दो,
हे शुद्धा, शुभ्रा, परिपूर्णा भारत माता तुम्हें प्रणाम ।

अपनी चल जल धाराओं से है श्री शोभित,
फलाप्रद धन उद्यानों से आभामंडित,

अरण्यवेशी मरकतवेशी किरण झलरित,
उन्नत भाल हिमालय आत्म प्रभा से ज्योतित,

संस्कृति का कण कण है जिसकी स्मिति से दीपित,
जन जन का अंतर जिसकी ममता से प्रमुदित

औ समुद्र धोता है जिसके चरण कमल नित,
सेवा में सत्तर करोड़ है सदा उपस्थित,
हे महीयसी हे गरीयसी भारत माता तुम्हें प्रणाम ।

दोना हाथो अन्न वस्त्र बरसानेवाली,
निज वाणी से प्रेम सुधा सरसानेवाली,

सब देशो से प्यारी हमको, सबसे न्यारी,
परम माधुरी, परम सुन्दरी जगत दुलारी,
हे अभिरामा, विद्युददामा, जनम जनम के तुम्हे प्रणाम ।

खून की मांग

—रामश्वर प्रसाद गुप्त 'कुमार हृदय'

खून चाहिये हमें बाढ पर आती हुई जवानी का,
खून चाहिये हम नाश पर गाती हुई जवानी का,
खून चाहिये हमे आग सी जलती हुई जवानी का,
खून चाहिये हमें प्रम पर पलती हुई जवानी का ।।

आज खून की माग हुई है हँसते हुए जवानो से,
आज खून की माग हुई है बलि-पथ के दीवाना से ।
आज खून मागा है हमने बेकारो बेहालो से
आज खून मागा है हमने बेदर बेघर वालो से ।।

बदे की यह माग-कमडल आज खून से भरदो यारो ।
सिर पर बाधे कफन खडा हूँ खुश फकीर को करदो यारो ।।

बूद बद के रक्तदान से गगा खूनी धारा हो,
कण कन रक्तदान से उजला नभ का मगल तारा हो ।
इतना खून बहे जो धो दे दौलत के अभिशापा को
इतना खून बहे जो धो दे सम्राटा के पापो को ।।

रक्तदान इतना हो जिसमे प्लासी का मदान जगे,
रक्तदान इतना हो जिसम सत्तावन का गान जगे,
रक्तदान इतना हो जिसमे दिल्ली का ईमान जगे
रक्तदान इतना हो जिसमें फिर से हिंदुस्थान जगे ।।

एक बात है एक माग है मरघट आज जगा दे यारो ।
सर पर बाधे कफन खडा हूँ चलो कि आग लगा दे यारो ।।

इज्जत का उत्साह नही है आज खून पावन बरसे,
दिल मे यश की चाह नही ह प्रलय नीर आँगन बरसे ।
जर जमीन की चाह नही है आज खून का घन बरसे,
दौलत की परवाह नही है आज लाल सावन बरसे ।।

युग का प्यासा खडा हुआ हूँ मगल घट यह भर दो यारो ।
सिर पर बाधे कफन खडा हूँ खुश फकीर का कर दो यारो ।।

आज खून की माग हुई है प्यासो का नेता जागा,
आज लाल आशा पनपी है भूखा का नेता जागा ।
दिल्ली से आवाज उठी है गूगा का नेता जागा,
आज दूर रगून शहर मसूवा का नेता जागा ।।

सदेसा लेकर आया हूँ बलि-पथ मेरे सग उतर लो ।
सिर पर बाधे कफन खडा हूँ आज वतन के लिए उभर लो ।।

वही देश है मेरा

—शम्भुनाथ 'शेष'

वही देश है मेरा।
वेद ऋचाओं से गूँजा है जिसका अम्बर नीला।
जहाँ राम घनश्याम कर गये, युग युग अद्भुत लीला।
जहाँ बाँसुरी बजी ज्ञान की, जागा स्वर्ण सवेरा।

वही देश है मेरा।
जहाँ बुद्ध ने सत्य अहिंसा का था अलख जगाया।
गुरु नानक ने विश्व प्रेम का, राग जहाँ सरसाया।
मेरे-तेरे का भेद भाव का, मन से मिटा अँधेरा।

वही देश है मेरा।
जहाँ विवेकानन्द सरीखे, हुए तत्व के ज्ञानी।
रामतीर्थ के अधरों पर थी, जिसकी अमर कहानी।
जिसके कण-कण में लेता है, सूरज नित्य बसेरा।

वही देश है मेरा।

ऋद्धि, सिद्धि, विद्या, बल, वैभव, जिससे जीवन पाते।
जिसकी पावन गौरव गाथा, 'शेष' भारती गाते।
जिसके अंचल मे जीवन है, नव सुषमा का डेरा।
वही देश है मेरा।

जहाँ उदय होकर नित सूरज, दिन मे करे उजाला।
जहाँ रात का चन्दा मामा, भरे अमृत का प्याला।
जहाँ उषा नित स्वर्ण बिखेरे, रात लुटाये मोती।
जहाँ फूल-से तारो की नित, सभा गगन मे होती।
जहाँ बसन्त आदि छः ऋतुएँ करें वर्ष भर फेरा।
वही देश है मेरा।

उत्तर जिसके पर्वत राज हिमालय की शोभा रे।
औ, दक्षिण में सागर जिसके, निशिदिन चरण पखारे।
सतलुज, गगा ब्रह्मपुत्र की, जहा बह रही धारा।
गोदावरी, नर्मदा, कृष्णा का क्रीडा स्थल प्यारा।
जिसका पावन तट ऋषियो का, रहा ज्ञान का डेरा।
वही देश है मेरा।

जिसकी माटी सोना उगले, धरती जीवन देती।
जिसके हली अन्न के दाता, न्यारी जग से खेती।
कामधेनु-सी गाय जहाँ नित, अमृत हमें पिलाती।
जहाँ कृष्ण की माखन-चोरी, अब तक मन हुलसाती।
जहाँ किसान नाचते—गाते, सदा बाधकर घेरा।
वही देश है मेरा।।

भाई-भाई नही लड़ेगे

—पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

वनी एक ही मिट्टी से हैं हम दोना की काया,
मालिक एक, रहीम-राम बन जिसने हम लुभाया ।
सागर एक, सघन घन बनकर देता हमको पानी,
हिलता दाना के हित, एक धरा का अचल धानी ।
वायु एक ही बहती है हम दोना की श्वासा मे,
एक अग्नि प्रज्वलित सदा, दोना के निश्वासो में ।
घिरे हुए ह एक दशावधि से हम दोना भाई
एक गगन के तले सुरक्षित, जीवन की निधि पाई ।
हिमगिरि एक हमारा दाना के गारव का लेखा
एक गग की धारा, हम दोना के यश की रेखा मे ।
एक देश की प्रकृति की छटा कि जो दाना के मन का भाती
एक देश की महिमा से फूली दोनो की छाती ।

नही विरोध कही भी हममें, हम दाना ह एक,
भाई भाई नही लडेगें यही हमारी टेक ।

एक शत्रु ह, बेधे जिसने, हम दोना के सीने,
शोषक एक, बहाए हमने जिसके लिए पसीने ।
एक वधिक है, जिसने हमसे लाल हमारे छीने,
हत्यारा है एक, नही देता जा हमका जीने ।
व्यापारी ह एक, कि जिसने हम दोना को लूटा,
एक गुलामी, जिसके कारण भाग्य हमारा फूटा ।
एक जहालत है, जिससे हम दोना को है लडना,
एक गरीबी, जिसे मिटाकर हमको आगे बढना ।
मजहब का है भूत एक बस, जिसको मार भगाना,
साहस की है ज्योति एक बस, जिसका आज जगाना ।
आजादी है एक, कि जिस पर लगी हमारी आखे,
साध एक है, मुक्त देश मे खुले हमारी पाँखें ।

हमें लडाने वालो, सुन लो, ध्येय हमारा एक,
भाई भाई नही लडेंगे, यही हमारी टेक ।

अज्ञात शहीदों के प्रति

—रामेश्वर शुक्ल 'अचल'

देश प्रेम के ओ मतवालो ! उनको भूल न जाना ।
महा प्रलय की अग्नि साध लेकर जो जग में आये ।
विश्व बली शासन के भय जिनके आगे मुरझाये ॥
चले गये जो शीश चढ़ाकर अर्घ्य लिए प्राणों का ।
चलें, मजारों पर हम उनके आज प्रदीप जलायें ॥
टूट गई बंधन की कड़ियाँ स्वतन्त्रता की बेला ।
लगता है मन आज हमें कितना अवसन्न अकेला ॥
पन्थ चिरन्तन बलिदानों का विप्लव ने पहिचाना ।
देश प्रेम के ओ मतवालो ! उनको भूल न जाना ॥
जीत गये हम जीता विद्रोही अभिमान हमारा ।
प्राणदान विक्षुब्ध तरंगों को मिल गया किनारा ॥
उदित हुआ रवि स्वतन्त्रता का व्योम उगलता जीवन ।
आजादी की आग अमर है घोषित करता कण-कण ॥

कलिया के अधरा पर पलते रहे विलासी कायर ।
उधर मृत्यु पैरा से बाधे रहा जूझता यौवन ॥

उम शहीद यौवन की सुधि हम क्षण भर को न
उसके पग चिन्हो पर अपने मन के मानी वारें

झम्मा तूफानो ने जिस दृढता का लोहा माना ।
देश प्रेम के आ मतवालो ! उनको भूल न जाना ॥

जिन्हें देखकर स्वय नाश भय से कातर हो जात
जिनके आगे पशुता का सिर झुकता, छन ढह

करता था उपहास प्रति चरण जिनका दण्ड दमन का
डरते थे तूफान, न जिनसे पशुबल हाड नगाता ॥

चला कर हम उनकी ज्वाला का फिर से आव
उनकी सुधि की ज्योति जला कर करे उन्ही व

उन्ही प्राणवीरो की बलि को जीवन-त्योहार बनाना
देश प्रम के ओ दीवालो ! उनका भूल न जाना ॥

जग करता आह्वान वारुणी का वे विष अपना
दुनिया सुख की भीख मागती वे सवस्व लुटाते

रहती उनमें शक्ति धरा का वभव ठुकराने की ।
मिट्टी का लघु गात लिए वे लपटा में लहराते ॥

आततताइयो को विचलित करती उनकी हुकारें
प्राण फकती चलती मर्दों मे उनकी ललकारें ।

इन मीनारों की नींवों में उनकी सांसें सोईं ।
नेतृत्व की जड़ें गयी उनके लहू से धोईं ॥
आजादी का भवन उठ रहा उनके उत्सर्गों पर ।
जिसकी ईंट ईंट में उनकी कुर्बानी गाथें गाईं ॥
आज चलो हम उनके घर घर साध्य 'प्रदीप' जलायें ।
उनके खूं से सिंचे पथों पर, गलियों में मंडरायें ॥
पूरा हुआ न अभी हमारा प्रतिहिंसा का बाना ।
देश प्रेम के ओ मतवालो! उनको भूल न जाना ॥

माँ की पूजा का दिन आया

—तारा पांडे

माँ की पूजा का दिन आया ।
हम हैं स्वतंत्र, हम हैं उन्नत,
जीवन का गीत सुनाएँगे ।
वीरों के पद चिन्हों पर नित
श्रद्धा के सुमन चढ़ाएँगे ।

हमने आजादी को पाया ।
माँ की पूजा का दिन आया ।

राणा प्रताप औ वीर शिवा,
साहस में झाँसी की रानी ।
बच्चों में भर दे वीर भाव
भारत में हों सच्चे ज्ञानी ।

वरदान मिला है मन भाया ।
माँ की पूजा का दिन आया ।

बापू का गौरव छाया है
भारत माता के कण कण में
उनका तप उनकी त्याग कथा
भर गई विश्व के जन-जन में ।

प्राणों ने उन का गुण गाया ।
माँ की पूजा का दिन आया ।

नमामि मातु भारती

—गोपाल प्रसाद व्यास

हिमाद्रि तुंग शृंगिनी
त्रिरंग रंग रंगिनी
नमामि मातु भारती
सहस्र दीप आरती!

समुद्र पाद पल्लवे
विराट विश्व-वल्लभे
प्रबुद्ध बुद्ध की धरा
प्रणम्य है वसुन्धरा!

स्वराज्य-स्वावलम्बिनी
सदैव सत्य संगिनी
अजेय, श्रेय मण्डिता
समाज शास्त्र पण्डिता!

अशोक चक्र-संयुते
समुज्ज्वले समुन्नते
अनाश मुक्ति मन्त्रिणी
विशाल लाभ-लक्षिणी ।

अपार शस्य-सम्पदे
अजस्र श्री पदे-पदे
शुभकरे प्रियम्वदे
दया-क्षमा वशवदे ।

मनस्विनी तपस्विनी
रणस्थली यशस्विनी
कराल काल-कालिका
प्रचण्ड मुण्ड-मालिका ।

अमोघ शक्ति धारिणी
कराल कष्ट-वारिणी
अदैन्य मन्त्र दायिका
नमामि राष्ट्र नायिका ।

रणभेरी

—अशोकजी

रणभेरी बज रही, वीरवर पहनो केसरिया बाना ।
आज हिमालय के मस्तक पर बबर शत्रु सवार हुआ।
आज हमारी मातृभूमि पर दस्यु चीन का वार हुआ
धोखे से कर घात हमारे ऊपर दुश्मन गाज रहा,
हमें पद-दलित करने को वह अपना दल बल साज रहा,

उठो, सँभालो शस्त्र, हमें है युद्ध भूमि में डट जाना
रणभेरी बज रही, वीरवर पहनो केसरिया बाना ।

रौंद रहे माता की छाती आज आततायी पामर,
जननी तुम्हें पुकार रही है चलो हिंद के नर-नाहर,
जिस जननी ने जन्म दिया है अपना दूध पिलाया है
जिसकी गोदी में पल कर हम सबने जीवन पाया है

आज उसी की लाज बचाने हमको है रण में जाना
रणभेरी बज रही वीरवर, पहनो केसरिया बाना ।

आज देश पर सकट भारी, समय नही अब सोने का
दुश्मन घर में घुस आया है एक न पल अब खोने का,

10—1 Prod/ND/82

भारत माता के पुत्रों का अग्नि परीक्षण होना है,
देखें कौन निकलता पीतल कौन निकलता सोना है ।

मा का दूध पुकार रहा है हमें समर में है जाना,
रणभेरी बज रही वीरवर, पहनो केसरिया बाना ।

उधर हमारे भाई जूझें बर्फीली चट्टानो पर,
इधर बठ हम नाचें गायें झूमें मादक तानो पर ।
उधर हजारा शीश कटे, हिमवान लहू से लाल हुआ
इधर हमें क्या चार बूंद भी देना रक्त मुहाल हुआ ?

नही नही हा उठा देश का बच्चा बच्चा दीवाना
रणभेरी बज रही वीरवर, पहनो केसरिया बाना ।

आज कृष्ण ने कुरुक्षेत्र में फिर से शख बजाया है ।
गीता का सदेश अमर यह फिर से हमें सुनाया है ।
उठो नजय, युद्ध करो, छोडो अब असमजस सारा,
उठो, उठाओ अस्त्र, तुम्हें है क्रूर शत्रु ने ललकारा ।

धम युद्ध है छिडा धम है इसमें जाकर खप जाना,
रणभेरी बज रही वीरवर, पहनो केसरिया बाना ।

तुम्हे शपथ राणा प्रताप की अपना शीश झुकाना मत,
तुम्हें आन हैं वीर शिवा की पीछे कदम हटाना मत,
गुरु गोविंद पुकार रहे है बढो वीर सब बलिदानी,
चलो, शत्रु को मार भगाओ कहती झासी की रानी,

महावीर उस्मान ब्रिगेडियर तुम्हें पुकारे मरदाना,
रणभेरी बज रही वीरवर पहनो केसरिया बाना ।

वरदान माँगूँगा नही

शिवमगल सिंह 'सुमन'

यह हार एक विराम ह
जीवन महा-सग्राम है
तिल तिल मिटूँगा पर दया की भीख म लूँगा नहा
वरदान मागूँगा नही

स्मति सुखद प्रहरा के लिए
अपने खण्डहरो के लिए
यह जान लो मैं विश्व की सम्पत्ति चाहूँगा नही
वरदान मागूँगा नही

क्या हार में क्या जीत मे
किंचित नही भयभीत म
सघष पथ पर जो मिले यह भी सही वह भी सही
वरदान मागूँगा नही

लघुता न अब मेरी छुओ
तुम हो महान बने रहो
अपने हृदय की वेदना मैं व्यथ त्यागूगा नही
वरदान मागूँगा नहीं

चाहे हृदय को ताप दो
चाहे मुझे अभिशाप दो
कुछ भी करो कतव्य पथ से किन्तु भागूँगा नही
वरदान मागूँगा नहीं।

क्रान्ति-दिवस

—क्षेमचन्द्र 'सुमन'

बलिदानी वीरो की स्मृति के अर्चन का अवसर आया ।
पुलक मिली प्राणो को अनुपम, थिरक उठी जन-मन काया ।

आज 'बहादुरशाह जफर' के प्राणो का चेतना मिली
'सतावन' की दीप शिखा के शलभो की वेदना खिली
'झासीवाली' भी पुलकित है अपनी वज्र कहानी ले
'कानपूर' के 'शाह पेशवा' की गाथा बलिदानी ले
बुन्देले हरबोलो' का यश सौरभ चहुदिशि है छाया ।
बलिदानी वीरो की स्मति के अर्चन का अवसर आया ।

आज उठा अगडाई लेकर 'जलिया वाला बाग' अमर
आज डटा बलिदानी 'साबरमती' अक का शान्ति समर
आज उछलते 'पेशावर' के 'मरण-काड के बलिदानी
आज मचलती 'बयालीस' के बलि वीरो की पेशानी
आज 'बारडोली' औ 'दाडी कूच' नया दिन है लाया ।
बलिदानी वीरो की स्मृति के वदन का अवसर आया ।

आज 'चन्द्रशेखर', बिस्मिल' और 'भगतसिंह' के गान जगे
रासबिहारी', 'अमीचन्द' 'अशफाक' शेर के प्राण जगे
करते गान स्वतन्त्र देश का 'यतीन्द्र' के मान जगे
मदन ढींगडा उधमसिंह' के आजादी से प्राण पगे
खुदीराम', 'राजेन्द्र लाहिड़ी का मन चुप चुप मुसकाया।
बलिदानी वीरों की स्मृति के, चिन्तन का अवसर आया।

'अलीपुर', चौरीचौरा' औ 'बंग भंग' की घटनाएं
'कामागाटामारू' औ 'आष्टीचिमूर' की ललनाएं —
अब भी जीवित हैं भारत के कण-कण में वे इठलाती
'बलिया' के गौरव की गाथा हुए विनंदित हैं गाती
तात्या टोपे 'वीर कुंवर' का खून अरे हैं रंग लाया।
बलिदानी वीरों की स्मृति के अर्चन का अवसर आया।

आज उमडता है 'अजनाला' लिये हृष का पारावार –
आज उछलती है 'रावी' औ 'सतलज की पावन जल धार
आज मचलता सिंगापुर का द्वीप' शहीदों का ले प्यार
आज गूंजता जन गण-मन में प्रिय 'सुभाष' का जय-जयकार
आज 'शिवालक 'विंध्याचल उत्तंग हिमालय' ठहराया
बलिदानी वीरों की स्मृति के, वन्दन का अवसर आया।

'गांधी' और जवाहर' का सपना क्या है अब पूर्ण हुआ ?
'तिलक', गोखले का आयोजन क्या सचमुच सम्पूर्ण हुआ ?
बालक वृद्ध युवा सब ही जन आज अनूठा प्रण ठानें
'मेरठ' की बलिदानी भू को अपना गुरु गौरव मानें
अमर वीर 'मंगल पाण्डे से सबने उद्बोधन पाया।

बलिदानी वीरों की स्मृति के अर्चन का अवसर आया।
पलक मिली प्राणों को पावन, थिरक उठी उर मन-काया।

ग्रौर कल
सशय,
चिता की ग्रग्नि में चिन्ता सरीखी
ग्राखिरी समिधा हविष की भेट देकर
पार जो उतरा,
कि तुम इस पार से क्या ताकते,
झडे गिरा दो
बीच मे तूफान गुजरा जा रहा है ।
खाक यह,
इकरार पर जो मौत का सौदा पटा,
बाजार मे है गम जिसकी साख,
उसकी राख की इन ऐंठना का
एक जीवित सत्य
जो रस्सी कभी था
ग्राज भी है ।
खून यह गाढा,
किसी तलवार का बेढाल जिसने चूम डाला,
यह विजय माला
जवा के फूल की ग्रर्थी लगा
खुद मिट गइ
पर खून का धब्बा
नए गुल में नया रग ला रहा,
झडे उठा ला,
राह वह बतला रहा, बतला रहा है ।

तरुणाई के गीत

—सुमित्रा कुमारी सिन्हा

तरुणाई है नाम सिन्धु की उठती लहरों के गर्जन का ।
चट्टानों से टक्कर लेना लक्ष्य बने जिनके जीवन का ।।

विफल प्रयासों से ही दूना वेग भुजाओं में भर जाता ।
जोड़ा करता जिनकी गति से नव उत्साह निरन्तर नाता ।।

पर्वत के विशाल शिखरों सा—यौवन उसका ही है अक्षय ।
जिसके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार सदा लय ।।

अचल खड़े रहते जो ऊँचा, शीश उठाये तूफानों में ।
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में ।।

वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर ।
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चल कर ।।

आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरुणाई ।
नये जन्म की श्वास तुम्हारे अन्दर जगकर है लहराई ।।

आज विगत युग के पतझर पर तुमको नवमधु मास खिलाना ।
नवयुग के नव जीवन पृष्ठों पर नूतन इतिहास लिखाना ।।

उठो राष्ट्र के नव यौवन तुम दिशा दिशा का सुन आमन्त्रण ।
जगो देश के प्राण जगा दो नये प्रात का नया जागरण ।।

आज विश्व को यह दिखला दो हममें भी जागी तरुणाई ।
नई किरण की नयी चेतना में हमने भी ली अगडाई ।।

राष्ट्रीय विकास की सही दिशा

—जानकी वल्लभ शास्त्री

सन्ध्या की धूमिल छाया का पथ नहीं अभिलाषी !
मुक्ति, मरण, विश्राम न मांगे जीवन का विश्वासी !!
आशा औ विश्वास प्रगति के दो अश्रान्त चरण है,
नत उन्नत में घनीभूत पथ शायी तिमिर-हरण है,
झिलमिल चिलमिल ज्योति क्षितिज की निकट निकटतर होती,
धरती का आंचल भर देते आसमान के मोती,
साध्य दीप में दिप उठता है कनकगात जब प्रात
झरने के अविरल झरने में सिंधु मिलन की बात,
दुख भुजग के भीषण फन पर सुख की मणि की आभा,
दुगम गिरि निजन कानन का आनन कैतव-गाभा
कण-कण के सचय का विस्मय है सागर अविनाशी !
मुक्ति, मरण, विश्राम न मांगे जीवन का विश्वासी !!
ये रतनारे मेघ, पवन के झांके सुरभि-पखारे
माह निशा के शेष प्रहर के टिमटिम करते तारे
ऐसे में उच्छवास-श्वास का गहराता-सा कुहरा ?

अपनी परिछाई पर भूरे अन्धकार का पहरा ?
नहीं-नहीं, स्वर्णिम किरणो से सुधा धार ढलने दो,
जडीभूत, रीते अन्तर मे ज्योति ज्वाल जलने दो,
रूप निरावृत्त ढक जाने दो धूपित प्राण वसन से,
सूखी शाखें सज जाने दो पल्लव मुकुल, सुमन से,
युग पर युग बीते अबतो का लेने करवट काशी !
मुक्ति, मरण विश्राम न मागे जीवन का विश्वासी !!
पुण्य पुरातन का, नूतन का नय-नैपुण्य मिले तो,
पकज पाटल के कदम कांटे सम भाव खिले तो !
पीछे चढे लुनाई पहले की काई तो कट ले
शान्ति-यक्षिणी रण चण्डी की सुलभा उलझी लट ले,
दिशाकाशव्यापी विकास की फिर सुषमा निखरेगी,
कश्मीरी केसर-कुकुम की सुरधुन धार झरेगी !
पत्र पुरा मे फूट पडेगी प्राणो की मादकता,
कुज-कुज में गुजित होगी गानो की व्याकुलता !
पिक के कण्ठ काकली अटकी, अभी चातकी प्यासी !
मुक्ति, मरण, विश्राम न मागे जीवन का विश्वासी !!
धरती सींची, पुष्ट खाद दी, बीज नए हैं बोए,
खेतो में गानेवाला क्या खलिहानो में गोए ?
यत्र नियन्त्रित करते उच्छृखल बहने वाला को,
देते दृढ आवास खोखला में रहने वाला को
स्वप्न प्रात के लगे चमकने पथराई आखो में
उड चलने की नई उमगें मुडी-तुडी पाँखो मे
दु ख सह सह कर प्राप्त हुआ जो वह सुख सदा सलोना
श्रम-कण जिसका रूप निखारे वह हैं सुरभित सोना !
भग्न हृदय—मन्दिर मे विहँसी ज्योतिमय प्रतिमा-सी !
मुक्ति मरण, विश्राम न माँगे जीवन का विश्वासी !!

ऐ इन्सानो, ओस न चाटो !

—गजानन माधव मुक्तिबोध

आंधी के झूले पर झूलो !
आग बबूला बनकर फूलो !

कुरबानी करने को झूमो !
लाल सबेरे का मुह चूमो !

ऐ इंसानो, ओस न चाटो !
अपने हाथों पर्वत काटो !

पथ की नदिया खींच निकालो !
जीवन पीकर प्यास बुझालो !

रोटी तुमको राम न देगा !
वेद तुम्हारा काम न देगा !

जो रोटी का युद्ध करेगा !
वह रोटी को आप वरेगा !

मुक्ति-दिवस

—चिरजीत

सपने सत्य नही होते पर सपना सत्य हमारा,
मुक्त हुए चालीस कोटि-जन तोड विदेशी कारा,
आत्मराज्य का जन्म सिद्ध अधिकार राष्ट्र ने पाया !

मुक्ति दिवस मुसकाया !

पूर्व दिशा मे उदित उषा की केसर भरी गुलाली
जगमग हिमगिरि आभा, लहलह खेतो की हरियाली
आज प्रकृति ने स्वय तिरगा गौरव ध्वज फहराया !

मुक्ति दिवस मुसकाया !

नश समर में गाधी-वाणी बनी हमारी गीता
सत्य अहिसा का व्रत लेकर हमने पशु-बल जीता
अपनी अमर विजय से हमने जग को पथ दिखलाया !

मुक्ति दिवस मुसकाया !

आहुतिया औ बलिदाना की बीती रात अन्धेरी,
बुझे दीप के पास जले परवाना की है ढेरी
अमर शहीदो की स्मृतियो से आज हृदय भर आया !
मुक्ति दिवस मुसकाया !

निशि के अन्तिम रक्त प्रहर से निकला किरणो वाला,
पीछे विगत सुनहला, आगे शुभ भविष्य उजियाला
खोकर भी क्या खोया हमने, हमने तो है पाया !
मुक्ति दिवस मुसकाया !

केतु तिरगा भू अम्बर पर सागर पर लहराये
भारत भाग्य हिमालय जग मे कभी न झुकने पाये
फिर न कभी स्वातन्त्र्य सूय पर पडे रात की छाया !
मुक्ति दिवस मुसकाया !

क्रान्ति गीत

—कृष्णदा

न मोह भ्रम
न दुःख न गम,
न रुक न थम,
बढ़ा कदम,
उठा अलम,
अतीत हो रहा अदृश्य,
जगमगा रहा भविष्य।

क्रान्तिदूत
शान्तिदूत
तप पूत
है सपूत
त्यागभूत।

आज देख वर्तमान
स्फूर्तिपूर्ण औ सप्राण।

आज सकल
देश विकल,
भ्रान्ति विफल,
क्रान्ति सफल,
किए चल ।

हे शहीद, हे स्वतन्त्र,
फूँक फूँक अग्निमंत्र ।

अग्निपथ
धूम्रश्लथ,
कष्ट अकथ,
हो न विपथ,
यही शपथ ।

हे अजेय वीर अटल
विप्लवी तरुण निकल ।

11—1 PROD/ND/82

यह दिया जले

—शम्भुनाथ सिंह

द्वार-द्वार पर अमंद यह दिया जले।
मुक्त द्वार हों न बंद, यह दिया जले।

सत्य बन असत्प्रवाह में
बन प्रकाश तिमिरराह में
अमृतधार मृत्यु-दाह में

नव तव रस रूप गंध स्पर्श शब्द ले
प्राण प्राण बीच यह अमर प्रभा पले।

क्रांति को सतत पुकारता
शान्ति को मगर दुलारता
स्वप्न सत्य के सँवारता

विश्व हित नवीन मुक्ति का संदेश ले
किरण-पंख पर प्रकाश विहग उड़ चला।

दीप-दीप से गले लगे ।
एक रंग में सभी रंगे,
भेद-नीति से सभी जगें ।

एक स्नेह धार कोटि दीप में ढले ।
एक हो अनेक अन्धकार के छले ।

तम की दीवार तोड़ कर,
बन्ध दुर्निवार तोड़ कर,
मुक्त ज्योति की उठे लहर ।

गृह वन गिरि सिन्धु धार में, गगन तले
देश काल से अखण्ड यह दिया जले ।

बिगुल बज रहा आजादी का

—रामचन्द्र द्विवेदी 'प्रदीप'

बिगुल बज रहा आजादी का, गगन गूँजता नारों से ।
मिला रही है, आज हिंद की मिट्टी नजर सितारों से ।
एक बात कहनी है लेकिन आज देश के प्यारों से ।
जनता से नेताओं से फौजों की खड़ी कतारों से ।

कहनी है एक बात हम इस देश के पहरेदारों से ।
सम्हल के रहना अपने घर में छिपे हुए गद्दारों से ।
झाक रहे हैं अपने दुश्मन अपनी ही दीवारों से ।
सम्हल के रहना

ऐ भारत-माता के बेटो, सुनो समय की बोली को ।
फैलाती जो फूट यहाँ पर दूर करो उस टोली को ।
कभी न जलने देना फिर से भेदभाव की होली को ।
जो गाँधी को चीर गई थी याद करो उस गोली को ।।
सारी बस्ती जल जाती है, मुट्ठी भर अंगारों से ।
सम्हल के रहना

जागा तुमको बापू की जागीर की रक्षा करनी है।
जागो साथ्रा सागा की तस्वीर की रक्षा करनी है।
ग्रभी ग्रभी जा बनी है उम तस्वीर की रक्षा करनी ह।
हाशियार! हाशियार तुमका ग्रपने कश्मीर की रक्षा करनी है।
ग्राती है ग्रावाज यही मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारा स।
गम्हुन में रहता

तोड़ काल-कारण की कारा,
चिर गतिमय ज्यों चचल पारा,
चले खीचते दिग्दिगत में एक अजय रेखा सी।
यह जनगण का महासिंधु है
क्षमताओं का मिलन विन्दु है,
यह अजस्र धारा मानव की,
मानव के समस्त गौरव की,
भव की अनुपम विभूतियों की यह अशेष प्रतिमा-सी।
शख शख श्वासो के स्वर में,
ज्यों विराट सगीत एक है,
भारत के सारे जनगण की
हार एक है, जीत एक है,
निज अखण्ड एकता लिए, जागें अनत विश्वासी।
मानवता की मुक्ति-कामना
करती है आह्वान तुम्हारा,
आकुल हैं ससार देखने को
महान् अभियान तुम्हारा,
महामुक्ति के अभय मत्र से शाश्वत विश्व विकासी।
तिमिरग्रस्त भव को ज्योतिमय!
क्या प्रकाश का दान न दोगे?
कोटि कोटि जन्मो के बदले,
एक बार बलिदान न दोगे?
मुक्ति-लक्ष्य को प्राप्त करो हे चिर अकाम सन्यासी।

जागे भारतवासी

—रामदयाल पाण्डेय

जागें, जागें भारतवासी ।
सत्य साधना में युग-युग की, चिर अखंड अविनाशी ।
जागें जग के पुरुष पुरातन,
भव के अरुणोदय के कारण,
अंधकार में चिर प्रकाश बन,
अलख जगाने वाले वन-वन,
सिंधु सिंधु में, गुहा गुहा में प्रथम प्रकाश प्रकाशी ।
पिण्डो में ब्रह्माण्ड विधाता,
ब्रह्माण्डो के कण-कण ज्ञाता,
अणु अणु की विभुक्ति के दाता,
जीवन के अनन्त व्याख्याता,
मनु की, मुनियो को संतति जो, चिर बिबलिदान-लासी ।
कौन कहे इतिहास तुम्हारा ?
तुम हो प्रथम क्रांति की धारा,

तोड़ काल-कारण की कारा
चिर गतिमय ज्यों चचल पारा ,
चले खीचते दिग्दिगत में एक अजय रेखा सी ।
यह जनगण का महासिंधु है,
क्षमताओ का मिलन बिन्दु है ,
यह अजस्र धारा मानव की ,
मानव के समस्त गौरव की ,
भव की अनुपम विभूतियो की यह अशेष प्रतिमा-सी ।
शख-शख श्वासो के स्वर में ,
ज्यों विराट सगीत एक है ,
भारत के सारे जनगण की
हार एक है, जीत एक है ,
निज अखण्ड एकता लिए, जागें अनन्त विश्वासी !
मानवता की मुक्ति-कामना
करती है आह्वान तुम्हारा ,
आकुल है ससार देखने को
महान् अभियान तुम्हारा ,
महामुक्ति के अभय मत्र से शाश्वत विश्व-विकासी ।
तिमिरग्रस्त भव को ज्योतिमय !
क्या प्रकाश का दान न दोगे ?
कोटि कोटि जन्मो के बदले,
एक बार बलिदान न दोगे ?
मुक्ति-लक्ष्य को प्राप्त करो हे चिर अकाम सन्यासी ।

बापू

—भरत व्यास

जो बल था उनकी वाणी म बल वह नही हथौडो में
बडो-बडो मे ढूढा, पर ना गाधी मिला करोडो मे।

वह धोती, वह घडी, लकुटिया
चुनी हड्डियो का ढाचा
जिसमे ढली आत्मा यह
वह था विशेप विधिवत साचा
कम खाले अरु करे अधिक
जो कम बैठे और अधिक चले
कम ले जो विश्राम—कि
जिसके दिन का सूरज नही ढले
ऐसा मनुष्य इकाई में ह—कहा खोजते जोडा में ?

2

बाल न बाका हुआ किंचित
चालीस कोटि आबादी का

आजादी को यहां घेर कर
लाया धागा खादी का
भौतिक बल के बलवानों ने,
निबल का बल तब परखा
जब अबाध गति से घर घर में
घूमा गाधी का चरखा
धार छिपी तलवारों की थी, उन तकली के तोड़ों मे।

3

काव्य लिखे क्या कवि,
जब मिलता प्राण नहीं गाधी का
शब्द अनेकों पर गाधी राग
प्राण मिले बस आधी का
उसकी बोली में गोली थी
उसके मन में धन का नाद
जब वह बोला इन्किलाब
तो जनता बोली जिन्दाबाद
कोटि कोटि पग चले कटकों में, शूलों मे, रोड़ों में।

4

दुबल सी साधारण काया
किन्तु असाधारण माया
एक मन्त्र से जनता जागी
चली साथ बन पद छाया
नमक दायिनी धरती थी जब
कर कानूनों से जकडी
दो टांगें बन के विराट
चल पडी हाथ में ले लकडी
उस गति में जो वेग भरा था, वेग नही वह घोडों मे।

दो चिनगारी

—हसकुमार तिवारी

दुनिया फूस बटोर चुकी है, अब दो मैं चिनगारी दूगा ।
नैनो की गगा-जमना में आँचल बहुत भिगोए तुमने ।
दिल की कब्रगाह पर आशा-दीपक बहुत जुगोए तुमने
अब तूफान सास का, फिर दो आखे रतनारी मैं दूँगा ।

तोप शाति का जहर पिला कंकाल तुम्ही लोगो ने पाला ।
दया दान को मान धम कगाल तुम्हीं लोगा ने पाला ।
अब जीने का मूल मत्र मरने की लाचारी मैं दूँगा ।

तुम अमृत के प्यासे, खोया पाया हुआ दूध भी किंचित ।
तुम्हें स्वग की साध, हो गए अपनी मिट्टी से भी वचित ।
जियो-मरो, इसान बनो धरती पर, यह बारी मैं दूँगा ।

शूल धूल मानव के मत्थे, फूल चढा धरती के उपर ।
श्वास गिन दिए देवलोक को आसू गिरा दिए दो भू पर ।
उस गीली मिट्टी से गढ ज्वालामय नर-नारी मैं दूँगा ।

5

किसी सिपाही ने उस जैसी
शात लडाई नही लडी
ना कोई 'ऐटम बम' छूटा
ना कोई बारूद झडी
असहयोग सत्याग्रह, सत्य-
अहिंसा के लेकर हथियार
'बन्देमातरम' मत्र बोल कर
किया राष्ट्र का रथ तैयार
ध्वजा तिरगी उडी गगन में
'भारत छोडो' बोल दिया
और जवाब के पहले ही
माता का बधन खोल दिया
कैसी थी वह विजय गजना—उसके 'भारत छोडो' में।

6

अमृत का घट दिया राष्ट्र को
राष्ट्र पिता ने जहर पिया
हृदय रक्त से स्वतत्रता को
सबसे पहला तिलक किया
और अतिम प्रहार को भी
हसकर छाती पर थाम लिया
काम बना तब कर्मयोगि ने
राम राम का नाम लिया
ऐसा अनुपम चमत्कार, इतिहास देखता थोडा में।

दो चिनगारी

—हंसकुमार तिवारी

दुनिया फूस बटोर चुकी है, अब दो मैं चिनगारी दूंगा ।
नैनों की गंगा-जमना में आंचल बहुत भिगोए तुमने ।
दिल की कब्रगाह पर आशा-दीपक बहुत जुगोए तुमने
अब तूफान सांस का, फिर दो आंखें रतनारी मैं दूंगा ।

शोष शांति का जहर पिला कंकाल तुम्हीं लोगों ने पाला ।
दया-दान को मान धर्म कंगाल तुम्हीं लोगों ने पाला ।
अब जीने का मूल मंत्र मरने की लाचारी मैं दूंगा ।

तुम अमृत के प्यासे, खोया पाया हुआ दूध भी किंचित ।
तुम्हें स्वर्ग की साध, हो गए अपनी मिट्टी से भी वंचित ।
जियो-मरो, इन्सान बनो धरती पर, यह बारी मैं दूंगा ।

शूल धूल मानव के मत्थे, फूल चढ़ा धरती के ऊपर ।
श्वास गिन दिए देवलोक को आंसू गिरा दिए दो भू पर ।
उस गीली मिट्टी से गढ़ ज्वालामय नर-नारी मैं दूंगा ।

राष्ट्र मेरा

—सरस्वती कुमार 'दीपक'

राष्ट्र मेरा
शान्ति विहगो का रहा है
युगो से मजुल बसेरा ।
राष्ट्र मेरा ।

कर्म बल का थल पुरातन,
धर्म जिसका सत-सनातन,
जातियां, सह-पातिया सी—
एकता का नवल नन्दन,
रवि सजाता है,जहा नित—
नव विकासो का सवेरा ।
राष्ट्र मेरा ।

युद्ध से जो दूर रहता,
प्रीति पथ पर डटा रहता ,
जो पराया के लिए नित
युगो से क्या क्या न सहता

ओ ससार स्वय तुमने विधि का बाधा, मदिर में डाला।
घुटने टेक, नवाकर माना, फिर अपने को भी दे डाला।
अब खुद ही विधि बन जाने की जो हिम्मत हारी, मैं दूँगा।

छाई क्षितिज-छोर पर लाली, आया हो तूफान देख ला।
खडे पेड सा गिरा उखडकर सारा अभी जहान देख लो।
गिरी जहाँ वो बना राख दे, वह पवि को सहार म दूँगा।

राष्ट्र मेरा

—सरस्वती कुमार 'दीपक'

राष्ट्र मेरा
शान्ति विहगो का रहा है
युगो से मजुल बसेरा ।
राष्ट्र मेरा ।

कर्म बल का थल पुरातन,
धर्म जिसका सत-सनातन,
जातियां, सह-पातिया सी—
एकता का नवल नन्दन,
रवि सजाता है जहा नित—
नव विकासो का सवेरा ।
राष्ट्र मेरा ।

युद्ध से जो दूर रहता,
प्रीति पथ पर डटा रहता ,
जो पराया के लिए नित
युगो से क्या क्या न सहता

गगन ने हो मगन, जिसकी—
गोद में कचन बिखेरा
देश मेरा

भारती को सब दुलारे,
दृगो के हैं सभी तारे,
क्रान्तिया का बल मिला—
कब, राष्ट्र-सरिता के किनारे
हरित आँचल से डगर का—
शूल है जिसने सकेरा ।
देश मेरा ।

राष्ट्र मेरा अचना है,
जग-जननि की वदना है,
राष्ट्र मेरा, कोटि-कोटि की—
मनोहर प्राथना है,
बुझे 'दीपक' जगा, करता—
दूर, क्षितिजो का अँधेरा ।
राष्ट्र मेरा ।

पन्द्रह अगस्त

—गिरिजा कुमार माथुर

आज जीत की रात
पहरुए सावधान रहना !
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना !
प्रथम चरण है नये स्वर्ग का
है मंजिल का छोर
इस जन मन्थन से उठ आई
पहली रत्न हिलोर
अभी शेष है पूरी होनी
जीवन-मुक्ता डोर
अभी शेष है मिटने को
दुःखों की अन्तिम कोर
ले युग की पतवार
बने अम्बुधि महान रहना !
पहरुए सावधान रहना !!

विषम श्रृंखलाएँ टूटी है
खुली समस्त दिशाएँ
ग्राज प्रभंजन बनकर चलती
युग बंदिनी हवाएँ
प्रश्न चिन्ह बन खड़ी हो गई
ये सिमटी सीमाएँ
ग्राज पुराने सिंहासन की
टूट रही प्रतिमाएँ
उठता है तूफान,
इन्दु तुम दीप्तिमान रहना
पहरुए सावधान रहना ।।

ऊँची हुई मशाल हमारी
ग्रागे कठिन डगर है ।

शत्रु हट गया लेकिन उनकी
छायाग्रो का डर है
शोषण से मृत है समाज,
कमजोर पुराना घर है,
किंतु ग्रा रही नई जिंदगी
यह विश्वास ग्रमर है,
जन गंगा में ज्वार
लहर तुम सावधान रहना ।
पहरुए, सावधान रहना ।।

उद्बोधन

—प्रयागनारायण त्रिपाठी

जाग उठो, जाग उठो
मेरे देश देवता !

जन-जन म स्नेह-दृष्टि
वण-वण में शौर्य-सृष्टि
माग उठो, माग उठो
मेरे देश-देवता !

जडता, नराश्य, क्लान्ति,
वायरता भीति, भ्रान्ति
त्याग उठो, त्याग उठो
मेरे देश-देवता

जीवन के स्पदन म
अभिनव युग वदन में
पाग उठो, पाग उठा
मेरे देश-देवता !

जाग उठो, जाग उठो
मेरे देश-देवता !

12—1 PROD/ND/82

भारतवासी

—निरकारदेव 'सेवक'

हम बगाली, हम पजाबी, गुजराती मदरासी ह
लेकिन हम इन सबसे पहिले केवल भारतवासी ह ।

हमें सत्य के पथ पर चलना
पुरखो ने सिखलाया है,
हम उस पर ही चलते आये
हैं जो पथ दिखलाया है ।
हम सब सीधी सच्ची बातें करने के अभ्यासी है
हम सब भारतवासी है ।

हम अपने हाथो में लेकर
अपना भाग्य बनाते ह
मेहनत करके बजर धरती
से सोना उपजाते है ।
पत्थर को भगवान बना दें हम ऐसे विश्वासी है
हम सब भारतवासी है ।

वह भाषा हम नही बोलते
वैर भाव सिखलाती जो
कौन समझता नही बाग मे
बैठी कोयल गाती जो ।
जिसके अक्षर भरे प्रेम से हम वह भाषा भाषी है
हम सब भारत वासी है ।

बीत न जाए बहार

—बलवीर सिंह 'रंग'

बीत न जाए बहार मालियो, मधुवन की सौगंध !
अधखिले उपवन की सौगंध
व्यथ की सीमाओं में बंद
करो मत सुख की सुलभ बयार
करेंगे सहन किस तरह सुमन
तुम्हारा यह अनुचित व्यवहार
दबे न क्षीण पुकार मधुकरो गुंजन की सौगंध !
निहगा नन्दन की सौगंध
पराजित बल के बल से
कभी न होगा अपराजित इन्सान,
करेगी भूखी-प्यासी धरा
शांति की सोम सुरा का पान
उतर न जाए खुमार गायियो, यौवन की सौगंध !
सृजन संजीवन की सौगंध

वाटिका को कर सकती ध्वस्त
तुम्हारी तनिक भयानक भूल
देखती नन्दन वन के स्वप्न
कटकाकीर्ण पथ की धूल
पथ के बना न भार पथियो, कण कण की सौगन्ध ।
आज के क्षण-क्षण की सौगन्ध ।

माँ, तेरी गोद में

—-मदनमोहन व्यास

ओ माँ,
समस्त सृष्टि को
तुम्हीं दृष्टि देती
ममता से आर्द्र हो
करती कृपा की वृष्टि,
अपने शिशु अग जग को
उँगली का सम्बल दे
रेंगना सिखाती हो,
दुग्धामृत-तृप्त को
शक्तिमत बनाती हो,
धाता को रचना की,
विष्णु को सुरक्षा की
शङ्कर को संहृति की
महा शक्ति देती हो
स्नेहमयि,

वाणी का कवच धार-
देव-गुरु गर्वित हुए
दैत्य-गुरु शुक्राचार्य
असुर-संघ-पूजित हुए
रत्नाकर वाल्मीकि
वाग्मी, कवीन्द्र हुए
गौतम, कणाद, कण्व
पाणिनि, पतंजलि
शाकटायन, कात्यायन
ग्रन्थनिर्माता बने,
बादरायण व्यास ने—
वेदों का विभाग किया,
पुराणों का निर्माण किया,
याज्ञवल्क्य, ऋष्यशृंग,
भरद्वाज, आस्तीक,
देवल, जाबालि आदि
वाक्कवच से रक्षित—
पूज्य-मान्य ऋषि हुए,
विद्याधिष्ठातृ देवि,
गूंगा वह कालिदास
तुम से वाक् शक्ति पा
बोलना सीख गया
खुल गये बुद्धि-रन्ध्र
खुल गये हृदय द्वार
कहलाया—

कवि कुल कुमुद कलाधर,
गुरु कालिदास,
और वह तुलसीदास
तुमसे वण रस लेकर,
राम चरित मानस में—
डुबकी लगा गया
भक्ति सुधा पा गया
जगज्जननि,
देव गन्धर्वों पर
ऋषि मुनि सन्त भक्तो पर
जब जब विपत्ति पड़ी
तुमने किया है त्राण
उनके बचाये प्राण,
महाकाली वेष धर
मधु कैटभ सहारे,
तुम्ही महालक्ष्मी हो—
महिषासुर-तिमिर-हर
रवि शशि नक्षत्रो म
नूतन प्रकाश भर—
सष्टि सचालिका,
तुम महासरस्वती—
चण्ड मुण्ड घातिनी
धूम्राक्ष सहारिणी
रक्तबीज नाशिनी
शुभ मे निशुम के

प्राणा को विदारिणी
भयातक हारिणी,
जडता प्रविद्या का
मूल से उखाडकर,
पुष्पित प्रफुल्लित फलित
ज्ञान-तरु स्थापिका,
नव रग की यापिका
जिसमे भाव, गुण, वलि,
छदालकार के—
प्रगणित अरविन्द खिले,
जिनकी गन्ध-रज लेकर
कितने कवि अलिया के
स्वर गुजरित हुए,
प्रकट हुए गीत गान
नत्त नृत्य, नाटय, लास्य,
ताण्डव का अट्टहास
डिमिड्डिमिड्डमरू-ताल
अइउणादि वण जाल
आप्त वाक्य शब्द वाद
पद समूह, वाक्य व्यूह
आकाक्षा योग्यता,
सन्निधि सान्निध्य से
पूण वाक्याथ ज्ञान
वैदिक लौकिक विधान,
विश्वात्पादिके,

जननी जन्म भूमि का—
रक्षक बनाती हो।
भक्षक जो दैत्य-दनुज—
उनका नष्ट करने में
सक्षम बनाती हो,
तेरी ही गोद के पाले-पोसे —
राम-कृष्ण इतने महान हुए—
असंख्य जिनके भक्त हुए
मारा जिन्होंने था—
कुम्भकरण, रावण को—
कंस, शिशुपाल को।
तेरी ही कुक्षि में—
जन्म ले गौतम ने
जन्म ले गाँधी ने—
सत्य-दृढ नींव पर—
उठाया था अहिंसा-सौध,
प्रेम से प्रतिष्ठित कर
उसमें बसाया था—
सुन्दरी मानवता को,
जन्म-जरा-व्याधि मृत्यु—
भय से बचाया था।
तेरी उदर-दरी से—
प्रसूत सीता-सावित्री
जिनके सतीत्व से
पावन चरित्र से—
धारिणी पवित्र हुई।
धन्य क्षत्राणियाँ!

ग्रीष्मातप-तप्त धरा
उष्मा से झुलसती जब—
कृपण के हृदय सी वह—
रूक्ष-सूख जाती है,
तब तुम बन कर वर्षा,
कृषकों की अभिलाषा
खेतों की मूक भाषा
पढ लेती, समझ लेती
अनकही वेदना।

मेघावरण में ढाप
जड-चेतन शिशु-जगको
अपने पयोधर का
अमृत पिलाती हो।

कनक रत्न-मुक्ता के—
खिलौने दे जाती हो,
शरद के हास से,
वसन्त के विलास से,
विश्व को सजाती हो,
लोकपालिके,
अपने सपूतों को
तुष्ट कर पुष्ट कर
पर्यंक से अंक तक—
लिटा उठा हँसा खिला—
पौरुष शौर्य साहस धैर्य,
वीरता सिखाती हो।

जननी जन्म भूमि का—
रक्षक बनाती हो ।
भक्षक जो दैत्य-दनुज—
उनको नष्ट करने में
सक्षम बनाती हो,
तेरी ही गोद के पाले पोपे—
राम-कृष्ण-इतने सशक्त हुए—
असख्य जिनके भक्त हुए
मारा जिन्होंने था—
कुम्भकरण, रावण को—
कस, शिशुपाल को ।
तेरी ही कुक्षि से—
जन्म ले गौतम ने
जन्म ले गाधी ने—
सत्य-दढ नीव पर—
उठाया था अहिंसा सौध
प्रेम से प्रतिष्ठित कर
उसमें बसाया था—
सुन्दरी मानवता को,
जन्म अरा-व्याधि मृत्यु—
भय से बचाया था ।
तेरी उदर-दरी से—
प्रसूत सीता-सावित्री
जिनके सतीत्व से
पावन चरित्र से—
धारिणी पवित्र हुई ।
धन्य क्षत्राणियाँ,

वह अतीत-पाठी बने
वतमान दृष्टा बने
भविष्यत् निर्माता बने
साम उद्गाता बने ।
नई शक्ति,
नई भक्ति
नई अनुरक्ति दो
नूतन विज्ञान दो
नूतन अभिमान दा ।
गा गाकर तेरा गान,
करे आत्म बलिदान ।
चाहिए न भुक्ति लोक
चाहिए न मुक्ति लोक,
यही वरदान दे—
जन्म ले और मरे
मर कर फिर जन्म लें—
तेरे ही गभ से
तेरी ही गाद मे—
पले, बढे विज्ञ बनें,
स्वर्गाधिक गरिमामयी—
जननी जन्मभूमि पर
देश पर,
जाति पर
प्राण दें मोद में,
तेरी ही गोद में

वीर-वधू, वीर प्रसू
धीर वीर नारियाँ ।
धन्य वह पद्मिनी
जिसके पूत जौहर की
उज्ज्वल यश-गौहर की
गाथा अमर हुई ।

धन्य वह लक्ष्मीबाई
जिसने गौरांगों के—
दांतों को उखाडा था
वॉकर को पछाडा था,
धन्य वह चन्द्र गुप्त
जिसके पराक्रम से—
पराभूत सैल्यूकस
जामाता पद देकर
हेलेन को सौंप गया,
धन्य वे राजपूत—
राणाप्रताप, शिवा
जिन्होंने स्वतन्त्रता की
पुण्य बलि-वेदिका पर—
प्राणाहुति देना—
सहर्ष स्वीकारा था
रिपु को ललकारा था
परतन्त्रता डाकिनी को
डटकर धिक्कारा था
ममतामयि
नवयुग के बालक को
पुनः नई दृष्टि दी ।

वह अतीत-पाठी बने
वतमान द्रष्टा बने
भविष्यत निर्माता बने
साम उद्‌गाता बने ।
नई शक्ति,
नई भक्ति
नई अनुरक्ति दो
नूतन विज्ञान दो
नूतन अभिमान दो ।
गा गाकर तेरा गान,
करे आत्म बलिदान ।
चाहिए न भुक्ति लोक
चाहिए न मुक्ति लोक,
यही वरदान दे—
जन्म ले और मरे
मर कर फिर जन्म ले—
तेरे ही गर्भ से
तेरी ही गोद में—
पलें बढ़े, विज्ञ बनें,
स्वर्गाधिक गरिमामयी—
जननी जन्मभूमि पर
देश पर
जाति पर
प्राण दें मोद में,
तेरी ही गोद में,

कल की सुबह

—पोद्दार रामावतार अरुण

चमकीली है सुबह आज की, आसमान में
निश्चय कल की सुबह और चमकीली होगी।

बेचैनी की बाँहों में कल फूल खिलेंगे,
घुटन गमकती सासो की आवाज सुनेगी
कुण्ठाओं की टहनी हरी भरी होगी फिर,
आशा अपने हाथो से अब कुसुम चुनेगी

चटकीली है आज चहकती हुई चादनी
कल चदा की किरण और चटकीली होगी।

गेंदे नही, गुलाब खिलेंगे अब आठो पर,
गालो पर गुलाब की लाली छा जाएगी
गीली आखो पर उतरेंगे नीले सपने
सुख की हसती नीद प्यार छितरा जाएगी

भडकीली जो आज भावना भीतर वाली
कल की रग-तरग और भडकीली होगी।

जजीरें जिन्दगी तोड देंगी उलझन की,
बिछडे बिछडे प्राण मिलेंगे अब प्राणा `
कल पूछेगा नही कैफियत कोई गुस्सा—
भूले बिसरे हुए करोडा इसाना से

सपनीली जो आज सुनहली टटकी इच्छा,
कल तो अटकी चाह और सपनीली हागी !

खुल जाएँगे अब सबके दिल के दरवाजे,
आखे अपनी आखो को पहचान सकेंगी
अपनी धरती पर सबके सब अपने ही हैं
नई जिन्दगी सही बात को जान सकेंगी

जहरीली उतनी न आज युग की अँगडाई,
कल की महकी हवा नही जहरीली हागी !

धाखा खाएगी न राशनी आने वाली,
रात न आएगी लू को बरसाने वाली
मिट जाएँगी सारी बातें काली-काली,
जल जाएगी दु ख की काँटा वाली जाली

शर्मीली है खून-लगी यादो की आधी
शायद कल की प्रीत नही शर्मीली होगी !

चमकीली है सुबह आज की आसमान में
निश्चय कल की सुबह और चमकीली होगी !

राष्ट्र का मगलमय आह्वान

—देवराज दिनेश

ध्यान से सुने राष्ट्र सतान, राष्ट्र का मगलमय आह्वान ।
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान म नवयुवको के प्राण ।।

राष्ट्र पर घिरी आपदा देख, सजग हो युग के भामाशाह
दान मे दे अपना सवस्व और पूरी कर मन की चाह
राष्ट्र की रक्षा के हित आज, खोल दो अपना कोष कुबेर
नही तो पछताओगे मीत, हो गई अगर तनिक भी देर
समझ कर हमे निहत्था, प्रबल शत्रु ने हम पर किया प्रहार
किन्तु अपना तो यह आदश किसी का रखते नही उधार
हमे भी ब्याज सहित प्रत्युत्तर उनको देना है तत्काल
शीघ्र पहनानी होगी शिव का रिपु के नरमुण्डो की माल
राष्ट्र को आज चाहिए वीर, वीर भी हठी हमीर समान ।
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवको के प्राण ।।

राष्ट्र के कण कण में से आज उठ रही गर्वीली आवाज
वक्ष पर झेल प्रबल तूफान शत्रु पर हमें गिरानी गाज

देश की सीमाओं पर पागल कौए मचा रहे हैं शोर
अभी देगा उनको ललकार बली गोविन्दसिंह का बाज
किया था हमने जिससे नेह दिया था जिसको अपना प्यार
बना वह आस्तीन का साँप हमी पर आज कर रहा वार
समझ हमको उन्मत्त मयूर मगन मन दख नृत्य म लीन
किया आघात न उसका नात, साँप ह मारा के आहार
राष्ट्र चाहेगा जसा, वैसा ही हम अब देंगे बलिदान।
राष्ट्र का आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।

राष्ट्र को आज चाहिए देवि ककयी का अदम्य उत्साह
धुरी टूटे रण की, दे बाह पराजय को दे जय की राह
राष्ट्र को आज चाहिए गीता के गायक का वह उद्घोष
मोह तज हर अर्जुन के मानस पट पर लहराये आक्रोश
आधुनिक इन्द्र कर रहा आज राष्ट्रहित इन्द्रधनुष निर्माण
यही है धम बनें हम इन्द्र धनुष की प्रत्यचा के बाण
इन्द्र धनुष रूपी प्रबल एकता को सतरगी छवि को देख
शत्रु के माथे पर भी आज खिंच रही है चिन्ता की रेख
राष्ट्र को आज चाहिए एकलव्य से साधक निष्ठावान
राष्ट्र को आज चाहिए दान दान में नवयुवकों के प्राण ।।

राष्ट्र को आज चाहिए चन्द्रगुप्त की प्रबल सगठन शक्ति
राष्ट्र को आज चाहिए अपने प्रति राणा प्रताप की भक्ति
राष्ट्र को आज चाहिए रक्त, शत्रु का हो या अपना रक्त
राष्ट्र को आज चाहिए भक्त, भक्त भी भगतसिंह से भक्त
राष्ट्र को आज चाहिए फिर बादल जसे बालक रणधीर

13—1 PROD/ND/82

राष्ट्र की सुख-समृद्धि ने आयें, तोड़ रिपु कारा की प्राचीर
और बूढ़े सेनानी गोरा की वह गर्वभरी हुंकार
शत्रु के भूल जाय औसान, अगर दे मस्ती से ललकार
राष्ट्र का आज चाहिए फिर अपना अरहड़ टीपू सुल्तान
राष्ट्र का आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।

आज अनजाने में ही प्रबल शत्रु ने करके वज्र प्रहार
हमारे जनमानस की चेतनता के खोल दिये हैं द्वार
राष्ट्र हित इससे पहले कभी न जागी थी ऐसी अनुरक्ति
सगठित होकर रिपु से आज बात कर रही हमारी शक्ति
प्रतापी शक्तिसिंह भी देशद्रोह का जामा आज उतार
राष्ट्र की तूफानी लहरों में करता है गति का संचार
आज फिर नूतन हिन्दुस्तान लिख रहा है अपना इतिहास
राष्ट्र के पन्ने पन्ने पर अंकित अपना अदम्य विश्वास

चंदबरदाई के अन्तर से फूट रहे आज ज्योतिर्मय गान ।
राष्ट्र का आज चाहिए दान दान में नवयुवकों के प्राण ।।

देश यह वन्दनीय मेरा

—रामप्रकाश राकेश

देश यह वन्दनीय मेरा, धरा अभिनन्दनीय मेरी ।
नमन हर घाटी को मेरा, नमन इस माटी का मेरा ।

यहाँ होता नित स्वर्ण प्रभात, विहँस कर खिलें कली सुकुमार ।
अरुण किरणों से चूम कपाल, दिवाकर देता जिन्हें दुलार ।

प्रात में प्रहरी गाते गीत, शंख घण्टा की सुन झंकार ।
अजा गुरु ग्रंथ वेद का पाठ, कर मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वार ।

सभी का अल्ला ईश्वर एक, एक सब ही का है ईमान ।
यहाँ पर रहें एक ही साथ हमारी गीता और कुरान ।

ये मन्दिर पूजनीय मेरे, ये मस्जिद वन्दनीय मेरी ।
धरा अभिनन्दनीय मेरी ।।

यद्यपि भाषाएँ यहाँ अनेक, एक लेकिन उनका साहित्य ।
सूर तुलसी मीरा रसखान, कबीरा हिलमिल गाते नित्य ।

संस्कृति पगी प्रेम में यहाँ, सत्य का होता है उद्घोष ।
विषमता में समता है यहाँ, अमन का करते हम जयघोष ।

यहा पर काशी और काबा, यहा अपना प्यारा कश्मीर।
धरा का स्वग यहा हरिद्वार, बसी मथुरा यमुना के तीर।

हिमालय पूजनीय मेरा, ये गगा वन्दनीय मेरी।
धरा अभिनन्दनीय मेरी।।

कृपक ने किया यहा सकल्प, भीख का अन्न न खायेंगे।
पसीने मे सीचेंगे धरा, धरा से स्वण उगाएगे।

श्रमिक ने लिया आज व्रत यहा भिलाई में तप जायेंगे।
गरीबी से लड जायेंगे, देश को सबल बनायेंगे।

सिसकती मानवता को हम, विहँसता सन्देशा लाये।
घूमती जिन्दा लाशो को, नया जीवन लेकर आये।

श्रमिक यह पूजनीय मेरे, किसानी वन्दनीय मेरी।
धरा अभिनन्दनीय मेरी।।

अमन के रहें पुजारी यहा देश यह गाँधी गौतम का।
धरा यह तिलक गोखले की, ये भारत लाल बहादुर का।

यहां पर रहें साथ ही साथ आग की ज्वाला और पानी।
देवियां देती कुर्बानी, यहा जन्मी लक्ष्मी रानी।

देश यह आल्हा ऊदल का, देश यह गोरा बादल का।
ये धरती वीर पिथौरा की, देश यह बप्पारावल का।

ये राणा पूजनीय मेरा ये हाडी वन्दनीय मेरी।
धरा अभिनन्दनीय मेरी।।

न हम अपने भूले बलिदान, हमारा है इतिहास महान।
न सोया अर्जुन का गाडीव, न कुठित अपने तीर कमान।

देश की सीमा लक्ष्मण रेख, सती सीता का है यह देश ।
भस्म हो जायेगा रावण खुलेगा यहां कपट का वेश ।

न बचकर भाग सकेगा यहां जटायू की नजरों से चोर ।
क्रुद्ध यदि हुआ वीर हनुमान समझना शत्रु देश का ओर ।

वीर यह पूजनीय मेरे भवानी वन्दनीय मेरी ।
धरा अभिनन्दनीय मेरी ।।

किन्तु हम नहीं चाहते युद्ध क्योंकि मिट जाएगा संसार ।
मिटेंगे महल झोंपडी सभी मिटेगा मां बहिनों का प्यार ।

और मिट जायेगा इन्सान धरा हो जायेगी शमशान ।
बिलखती मानवता को देख, स्वयं रो जाएगा भगवान ।

इसलिए चाह रहे हम शान्ति, धरा को स्वर्ग बनाना है ।
अनेकों बाधाएं हो खडी हमें निर्माण रचाना है ।

देवता पूजनीय मेरे देवियां वन्दनीय मेरी ।
धरा अभिनन्दनीय मेरी ।

देश यह वन्दनीय मेरा, नमन हर घाटी का मेरा ।
नमन इस माटी को मेरा ।।

ऐक्य गीत

— जगदीश वाजपेयी

हिन्दू मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई और पारसी—
एक हाथ की पाच उगलियो के समान हैं ।
हम अनेक्ता मध्य एक्ता के विश्वासी,
हम विघटन के नही, सगठन के अभिलाषी,
केरल, बग, असम, उत्कल, कश्मीर हिमाचल—
एक गात के पथक-पथक अगा समान है । हिन्दू, मुस्लिम

सदियो से हम साथ जिये हैं, साथ मरे ह,
चित्र नत्य, सगीत काव्य के कोष भरे हैं,
हिन्दी, उर्दू बगला, तमिल, तेलुगु, कनड——
इन्द्रधनुष के अलग अलग रगो समान हैं । हिन्दू मुस्लिम

होली ईद, बडा दिन ओनम औ, बैशाखी,
हमने मिलकर साथ मनाई—दुनिया साखी
साथ मनाई मौज साथ ही दुख झेले हैं——
हम सब तरु की भिन्न डालिया के समान ह । हिन्दू, मुस्लिम

आगे बढता रहे राष्ट्र—यह ध्येय हमारा,
धम, प्रात, भाषा से बढकर भारत प्यारा,
कृषक, श्रमिक, व्यापारी औ सरकारी नौकर——
एक गगन के ग्रह नक्षत्रो के समान ह। हिन्दू, मुस्लिम

ऐक्य गीत

— जगदीश वाजपेयी

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई और पारसी—
एक हाथ की पाच उगलियो के समान है।
हम अनेकता मध्य एकता के विश्वासी,
हम विघटन के नही, सगठन के अभिलाषी,
केरल, वग, असम, उत्कल, कश्मीर हिमाचल—
एक गात के पथक पृथक अगो समान हैं। हिंदू, मुस्लिम

सदिया से हम साथ जिये है, साथ मरे है,
चित्र नृत्य, सगीत, काव्य के कोप भरे हैं,
हिन्दी, उर्दू बगला तमिल, तेलुगु कन्नड——
इन्द्रधनुष के अलग अलग रगो समान है। हिन्दू मुस्लिम

होली, ईद, बडा दिन, ओनम औ, बैशाखी,
हमने मिलकर साथ मनाई—दुनिया साखी
साथ मनाई मौज साथ ही दुख झेले है——
हम सब तरु की भिन्न डालियो के समान है। हिन्दू, मुस्लिम

आगे बढ़ता रहे राष्ट्र—यह ध्येय हमारा,
धर्म, प्रान्त, भाषा से बढ़कर भारत प्यारा,
कृषक, श्रमिक, व्यापारी औ सरकारी नौकर——
एक गगन के ग्रह नक्षत्रों के समान हैं। हिन्दू, मुस्लिम

देश का प्रहरी

—मेघराज 'मुकुल'

सिपाही खडा वह अडिग हिम शिखर पर,
उसे आज आशिष भरी भावना दो।
नदी से छलकती हँसी उसको भेजो
लहरती फसल की उसे अर्चना दो।।

महकती कली की मधुर आस उसके
चरण में उँडेलो फटेगी उदासी।
नये अंकुरों की उसे दो उमंगें
विजय गीत की मुस्कराहट जरा सी।।

तडित मेघ झुक कर उसे दे सहारा,
कि जिसने है मस्तक धरा का उभारा।
निशा प्रात सूरज हवा चाँद तारा,
उसे दे सहारा, निरंतर सहारा।।

गलत मत समझना कि वह है अकेला
करोड़ों हैं हम सब उसी एक पीछे।
उसी एक में हम अनेकों समाये
हमीं ने उसी के प्रबल प्राण साचे ।।

जहाँ बर्फ पड़ती, हवाएँ हैं चलती
जहाँ नित्य तूफान देते चुनौती
जहाँ गालियाँ भी हों बाछार होती
जहाँ जिन्दगी कष्ट सहकर न रोती—

वहाँ आज हिम्मत लगाती है पहरा,
वहाँ आज इज्जत विजय गीत गाये।
वहाँ मत वहाँ पर विवश आज कोई
जहाँ आज प्रहरी सदा मुस्कराये ।।

तू जिन्दा है तो

—शकर शैलेन्द्र

तू जिंदा है तो जिंदगी की जीत में यकीन कर
अगर कही है स्वग तो उतार ला जमीन पर

ये गम के और चार दिन, सितम के और चार दिन
ये दिन भी जायेंगे गुजर गुजर गए हजार दिन

कभी तो होगी इस चमन पे भी बहार की नजर
अगर कही है स्वग तो उतार ला जमीन पर

सुबह और शाम के रगे हुए गगन को चूमकर
तू सुन जमीन गा रही है, कब से झूम झूमकर

तू आ मेरा सिंगार कर तू आ मुझे हसीन कर
अगर कही है स्वग तो उतार ला जमीन पर

तू जिंदा ह तो जिंदगी की जीत मे यकीन कर
अगर कही है स्वग तो उतार ला जमीन पर

जागो भारतवासी

—गुलाब खंडेलवाल

तुम्हें पुकार रहा हिमगिरि से, मैं जय का विश्वासी
जागो हे युग युग के सोये, खोये भारतवासी ।

जागो हे चुपचाप चिता पर मरने के अभ्यासी
जागो हे जागरण विभा से डरने के अभ्यासी
जागो हे विश्वास शत्रु पर करने के अभ्यासी
जागो हे सब कुछ सह चुप्पी धरने के अभ्यासी
जागो हे छाई है जिनके मुख पर पीत उदासी
जागो हे जीवन सुख वंचित वीत राग संन्यासी
तुम्हें पुकार रहा हिमगिरि से, मैं जय का विश्वासी
जागो हे युग युग के सोये, खोये भारतवासी ।

तुम्हें जगाने को मैं अपनी छोड अमर छवि आया
अग्नि किरीट पहन सुमनो की नगरी से रवि आया
यौवन का संदेश लिये सुंदरता का कवि आया
उद्धत शिखरा पर ज्यो नभ से टूट प्रबल पवि आया

जनता के जीवन में आया म मधु स्वप्न विलासी
सिसक रही सुकुमार कल्पना वह चरणा की दासी
तुम्हे पुकार रहा हिमगिरि से, म जय का विश्वासी
जागो है युग युग के सोये, खोये भारतवासी ।

मेरे गीता म नूतन युग पाखे खोल रहा है
मेरी वाणी में जनता का जीवन बोल रहा ह
मेरे नयना मे भविष्य का मानव डोल रहा ह
मेरे कर पर विश्व विहग मा कर कल्लोल रहा है
मेरी कविता मे हँसती है नूतन ज्योति उपा सी
अँगडाई ले जाग रही धरणी नवपरिणीता सी
तुम्हे पुकार रहा हिमगिरि से, म जय का विश्वासी
जागो हे युग युग के सोये खोये भारतवासी ।

अरुण कली सा मुख नत ग्रीवा, श्याम अलक, भुज गोरे
बधन आज नही कज्जल नयनो के अरुणिम डोरे
आज हृदय में नव जीवन सागर ले रहा हिलोरें
नारी सहधर्मिनी आज फिर कान किसे झकझोरे ?
वह न पराजय कभी मिली जा तुम्हे विजय प्रतिभा सी
जीवन रण मे साथ तुम्हारे चलने की अभिलाषी
तुम्हे पुकार रहा हिमगिरि से म जय का विश्वासी
जागा हे युग युग के सोये, खोये भारतवासी ।

मानवता चल रही सम्मिलित आज बढा पग अपने
आज सत्य होते जाते ह कल के कोरे सपने

नुकता लो आकाश तुम्हारे पग चिन्हों से नपने
आज नहीं दूगा मैं तुमको रोने और कलपने
मेरी बाहें आज रही नव ससति को अकुना सी
तुम्हें पुकार रहा हिमगिरि से म जय का विश्वासी
जागो हे युग युग के सोये, जागे भारतवासी ।

जीवन और प्रगति

—श हृया

टूट चुकी हा जिसकी सब जजीरे, वह आजाद है
जहां सभी पथ आकर मिलते, वह बस्ती आबाद है

आर्थिक उन्नति जीवन और प्रगति का मूलाधार है
उत्तम अर्थव्यवस्था जनसत्ता का शुचि श्रृगार है
सबका सुखपूर्वक इस जग में जीने का अधिकार है
दरिद्रता से मुक्ति आज की सबसे बडी पुकार है
खोट वहा कुछ है समाज में, जहा मनुज लाचार है
समता ही सारे सामाजिक रोगो का उपचार है
मानवता का अर्पित करे जा, वह उन्नत सवाद ह
टूट चुकी हा जिसकी सब जजीरें, वह आजाद ह ।

कब तक बँधा रहेगा मानव कृत्रिम लोकाचार में
कब तक किरणें बद रहेंगी तम के कारागार में
कब तक आसू वहा करेंगे विना मोल बाजार में
कब तक फँसी रहेगी जीवन-नौका भव-मझधार में
नये प्रीति सबध जुडेंगे कैसे इस ससार में
कैसे होगे मूल्य समादृत जीवन के व्यवहार में
तेज कहा से फूटे मन में घिरा घोर अवसाद है
टूट चुकी हो जिसकी सब जजीरे, वह आजाद ह।

नये आदमी की तलाश में हम जंगल में आ गये
जगा रहे थे हम दुनिया को और स्वयं ही सो गये
हम निकले थे अमृत बाँटने किन्तु जहर खुद बो गये
पता नहीं कुछ अहंकार में हम क्या से क्या हो गये
हम न लौटकर आये अब तक गये शिविर में जा गये
मानवता का मुखमण्डल हम गम लहू से धो गये
गूँज रहा जो छन्द विगत जीवन का वह उन्माद है
टूट चुकी हों जिसकी सब जंजीरें वह आजाद है।

अणु युग की इस भागदौड़ में निष्क्रियता अभिशाप है
वही बढ़ेगा आगे जिसके तन में बल है ताप है
द्वन्द्व मुखर जीवन चलता रहता अपनी गति आप है
उसे नहीं है चिन्ता क्या है पुण्य और क्या पाप है
नये क्षितिज के अन्वेषक की एक अलग ही माप है
खान हवा की और खिड़कियाँ वह करता सलाप है
जिसका हृदय मुक्त है उसका भिन्न बोध आस्वाद है
टूट चुकी हों जिसकी सब जंजीरें वह आजाद है।

यह विडंबना, कहीं अतुल वैभव का तना वितान है
और कहीं पर भूख-प्यास से तड़प रहा इंसान है
अपने ही घर में मनुष्य कैसा लगता अनजान है
मनुज मनुज के बीच भयानक खाई है व्यवधान है
सुख समृद्धि के लिए देश कर रहा नया संधान है
मिले मुक्ति शोषण से—नव जनगण का यह आह्वान है
नयी चेतना यह युगपथ संस्कृति का नवल प्रसाद है
टूट चुकी हों जिसकी सब जंजीरें वह आजाद है।

जीवन में सातत्य और परिवतन का वरदान ले
पांवा में विद्युत् की गति, मन में प्रचड तूफान ले
आंखा में ले दीप्ति भविष्यत् की, पथ की पहचान ले
नव शक्ति, सजनात्मक प्रतिभा, रूपोद्भासित ज्ञान ले
औद्योगिक जीवन विकास के अतहीन अवदान ले
बढ चल मानव, नये छद, नव अलकार, नवगान ले
टकराये जो दिग् दिगन्त से, वह जनमुक्ति निनाद है
टट चुकी हो जिसकी सब जजीरें, वह आजाद है।

तुम्हें हास्य है जब लगते तुम अरि की गोली हैं आती ।
तुम्हें लास्य है जब सहते तुम अरि का वार बढ़ा छाती ।
प्रिय भाई, माई के प्यारे !   धीर-वीर सरक्षक पूत !
यह ला। प्राणों से भी बढ़कर तुम्हें मानते हम अभिभूत !

जवानो हो जाओ तैयार

—ब्रजेन्द्र गौड

बजी रणभेरी मत करो देरी,
जवानो हो जाओ तैयार
सुनो भारत मा की ललकार !

आज देश की धरती तुमसे माग रही बलिदान,
चेतावनी गगन देता है, खतरे में है शान,
पवन झकोरे लेकर आते हिम का हाहाकार,
जवानो हो जाओ तैयार !

सूय, चद्र, तारो की किरणें सहमी हुई खडी है,
ब्रह्मपुत्र गगा, जमुना, दुश्मन से घिरी पडी ह,
आज हिमालय के आँगन मे फूल बने अगार,
जवानो हा जाओ तैयार ।

भारत ने तो दिया विश्व को शाति का सदेश,
किन्तु विवश हो, आज सजाना पडा युद्ध का वेश,
महायज्ञ ह दे डालो, तन मन धन का उपहार,
जवानो हो जाओ तैयार !

जिम ग्राजादी के पौधे को सदा खून स सीचा,
ग्राज उसी की शाखाग्रो को ग्रत्याचारी ने खीचा,
उठा युद्ध का दानव, लेने मानव के ग्रधिकार,
जवानो हो जाओ तैयार !

बाधो सर पर कफन, पहन लो ग्रब केसरिया बाना,
ग्रागे चलो जवानो, पीछे चलने लगे जमाना,
वीरो, सदा चुनौती करना दुश्मन की स्वीकार,
जवाना हो जाग्रो तैयार !

ग्रान वाली सताना के लिए जान पर खेलो
नये नये निर्माणा की रक्षा का जिम्मा ले लो,
झेलो कष्ट हजार, प्यार का नष्ट न हो श्रृंगार
जवानो हो जाग्रो तैयार !

देश की धरती

—रामावतार त्यागी

मन समर्पित, तन समर्पित
और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ।
माँ, तुम्हारा ऋण बहुत है मैं अकिंचन
किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण
गान अर्पित, प्राण अर्पित
रक्त का कण-कण समर्पित।।
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ।
कर रहा आराधना मैं आज तेरी
एक विनती तो करो स्वीकार मेरी
भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी
शीश पर आशीष की छाया घनेरी

स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित
आयु का क्षण-क्षण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ!
तोडता हूँ मोह का बन्धन क्षमा दो
गाव मेरे, द्वार, घर, आगन क्षमा दो
देश का जय गान अधरो पर सजा है
देश का ध्वज हाथ मे केवल थमा दो
ये सुमन लो, यह चमन लो
नीड का तृण-तृण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ!

जागते रहना

—गिरिधर गोपाल

पहरुए जागते रहना !

वतन पर ग्राज काली ग्राधियां की रात छायी है
घटाएँ जो बमो को गोलियो को साथ लायी है
कि जिसकी हर नजर विष से बुझी है, हर हँसी धोखा,
मरण के देवता के सग हुई जिसकी सगाई है ।

पहरुए जागते रहना

पड़ा फिर सरहदो पर दुश्मना का ग्राज डेरा है
तुम्हारी भूमि को फिर ग्रजगरा ने ग्राज घेरा है,
तुम्हारे स्वप्न तक इसका न खूनी हाथ बढ जाये,
ग्रँधेरे मे छिपा देखो खड़ा बर्बर लुटेरा है ।

पहरुए जागते रहना !

कलो पर, कारखाना पर, फसल के मुख सलोने पर,
तुम्हारी मा बहन पर, प्यार पर शिशु के खिलौने पर,
तुम्हारे मदिरा पर, मस्जिदो पर, धमग्रथो पर,
नजर इसकी महावर पर, नजर इसकी दिठौने पर ।

पहरुए जागते रहना !

तुम्हारे ही भरोसे हमने यह कुटिया बनायी है,
तुम्हारे ही भरोसे हमने यह बगिया उगायी है,
तुम्हारे ही भरोसे शत्रु को ललकारते हैं हम,
तुम्ही पर आस पूरी कौम ने प्यारे लगायी है।
पहरुए जागते रहना।

स्वतन्त्रता का राजमुकुट हर शीश पर

--रमेशचन्द्र झा

धरती अपनी, समदरसी की साधना,
सकल्पो के सूरज का आकाश है !

*　　*　　*

चाद सितारे वासी अपने गाँव के,
अभ्यासी आजन्म धूप के, छाव क,
नील कुसुम के बीज बिछाते रेत में
विश्वासी जीवन का बिरवा खेत में
स्वतन्त्रता का राजमुकुट हर शीश पर
मन का राजसिहासन सबके पास है !
धरती अपनी समदरसी की साधना
सकल्पो के सूरज का आकाश है !

*　　*　　*

जन-जन के जीवन की जीवित कल्पना,
अड़सठ कोटि भगीरथ की आराधना
मानवता की मर्यादा जनतन्त्र है,
अनुशासन ही जीवन का गुरुमन्त्र है,
शूल फूल से भरे हमारे रास्ते—
लेकिन मंजिल पर अपना विश्वास है।
धरती अपनी, समदरसी की साधना,
संकल्पों के सूरज का आकाश है।

* * *

गंगा-यमुना के पावन परिवेश में
मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर के देश में,
सजती आती लोक-तन्त्र की आरती
सत्य, अहिंसा शांति समय के सारथी
जीवन करवट बदल रहा हर मोड़ पर,
आकुल होकर देख रहा इतिहास है।
धरती अपनी, समदरसी की साधना
संकल्पों के सूरज का आकाश है।

प्रयाण गीत

--प्रकाशवती

उठो, स्वतत्र देश के तरुण ग्ररुण,
मुहुत ग्रा गया, करो प्रयाण रे !
ग्रघोर ग्रधकार, सूझता न ग्रार पार है,
कि नाव तोलती उठा लहर लहर,
पुकारता कि वृद्ध कर्णधार है
ग्रधीर कठ स्वर कि डाड खे चला
जहा मिले पुलिन, गडे निशान रे !

समस्त यान चल चुके
न पथ में कही रूके,
नवीन चेतना—मशाल बालकर
प्रबुद्ध पाथ, पथ में तुम्ही थके ?
ग्रकूल काल सिधु के प्रवाह में
करो स्वदेश का नया बखान रे !

कगार सामने खडा,
अधीर चक्षु को गडा,
निहारता समस्त विश्व, सैनिको !
नही विराम बाट में तुम्हें पडा ,

प्रघोर अंधकार भ्रान्ति पार से
पुकारता तुम्हें नया विहान रे !

ओ नये विश्वास

— रामचद्र भारद्वाज

ओ नये विश्वास जागो
आज देखा किस तरह
नीले क्षितिज पर लालिमा छाई
चाद के नीले नयन में
किस तरह हल्की गुलाबी मुस्कराई
किस तरह पहली किरण की

ये नई अगडाइया ऐंठी
और देखा किस तरह
मादक सिन्दूरी आस्था की
नवल, उज्ज्वल डोर
उसकी भगिमाए
आज घर घर हर डगर पर
फिर नई मुद्रा बनाये मुक्त बैठी

भैरवी की धुन सुनाता
आज नन्दन वन विपिन कानन
और होता वे प्रियम्वद वाक्य
दुलारते मदालस मम की ठिठुरी हुई-सी प्यास को
नये अभियान के भगवान
मूछित कर रहे है आज
अभिनव बाण के सधान से
फिर मौन गगन उदास को
आज फिर निद्रालसा यह सष्टि जागी है
सघन सध्या की पलक सोई
गई फिर रात
प्रतीक्षित प्रात की अविराम
अतदर्ष्टि जागी है
काल के इन बाल विहगो के स्वरो की पोर से
अनगिन सुरो की कौंपले फूटी
ओ पितामह !
अब न शर शय्या सभालेगी तुम्हारा तेज
दुवह भार
क्योकि कितने ही पुनजन्मे जयद्रथ
दे रहे है अब चुनौती
इस कुटिल ससार के सहार को ललकार
बारम्बार
नव सुदशन चक्र
नारायण नया गाडीव

यह नया युग, यह नया जग
आत्मा उद्ग्रीव
अब मनुज के भाव रह सकते नही ह
दीन, अष्टावक्र, याचक, क्लीव
माह औ ज माध
औ धृतराष्ट्र ।
अब मेरी भुजाओ में
नया आकाश बध कर आ गया है
नई ग्रीवा नये मणिबध के मुख पर
सुवासित मेघ घिर कर छा गया है
मै नये आलोक की अभिव्यजना का
अन्यतम अध्याय लेकर बढ रहा हूँ
दिग्वधू तुम स्नेह की वर्षा करो
गिरि शिखर, नक्षत्र मडल
घाटिया दुगम वनस्थल
सष्टि के सीमा त
सागर के अतल तल
जब कभी हरसे
तनिक हरसा करो
ओ नये विश्वास जागो स्नेह की वर्षा करो ।

क्रांति का सदेश

—सत्यदेव नारायण अष्ठाना

समय अब क्राति का सदेश लेकर आ गया, देखो
'उठो अब नवजवानो' आज यह समझा गया, देखो
जगी है आज कण-कण में यहा के क्राति की ज्वाला
बढो, देखो, जरा विजया खडी ले हाथ में माला
रुधिर का भाल पर चन्दन किये, ले चाल तूफानी
बढा यह आ गया है काल, देखो, आज बलिदानी
तिमिर हो दूर, दीपक राग भारत गा उठा देखो
भरत का प्यार फिर से आज है मुस्का उठा, देखो।

रुको मत अब समय की माग केवल रक्त की धारा
बहाकर रक्त अपना तुम बचा लो देश यह प्यारा
समझना भूल होगा आज ऐटम एक बलिशाली
समझते हो नही, क्या है यही विजया महाकाली
यही पर वीर टीपू की कही तलवार है हसती

यही पर शेर की भी देख लो ललवार है हँसती
कुँग्रर या तेज फिर मे जाग है दिखला गया देखो
'उठो, अब नवजवानो" ग्राज यह समझा गया देखो ।

नहीं अब चाहता है हिन्द तुम झट बद हो जाग्रो
नहीं अब चाहता है शूलियो पर झूल तुम जाग्रो
नहीं अब चाहता है हिंद, ग्राँसू ही कहानी हो
नहीं अब चाहता है हिन्द बुजदिल जिंदगानी हो
यही अब चाहता है हिन्द, उनकी फाड दो ग्राँखें
चने जा ग्राज बैठे हैं पकड कर तोड दो पाखें
जयालिम का ग्रमर विद्रोह है सिखला गया देखो
समय अब क्रांति का सदेश लेकर ग्रा गया देखा।

उठो तुम, रोक दो तूफान की गति का बवडर को
बढो तुम सोख लो प्यासे लहर को ग्रौ समुदर को
ग्रगर है हो रहा बाधक प्रगति में ग्रासमा, तोडो
ग्रमत घट राह भटकाता, उसे तुम शीघ्र ही फोडो
यही है माग इस युग की सिसकते करुण भारत की
यहाँ के वीर की, रणधीर की ग्रौ तरुण भारत की
शहीदा की चिताग्रो का हृदय यह गा उठा देखो
"उठो, अब नवजवानो', ग्राज यह समझा गया देखो।

सहोगे ग्रौर कितना, सह चुके जो कुछ बहुत अब है
कहोगे ग्रौर कितना, कह चुके जो कुछ बहुत अब है
विनय का कोप तक तुमने किया खाली, नहीं बाकी
बचानी लाज है बाकी, बिलखती बदिनी मा की

15—1PROD/ND/82

सपूतो, वीर माता के, उठो, तलवार तो दे दो
भगत की याद में वीरो, जरा तलवार तो ले लो
जवाहर फिर विकट जजीर है झनका उठा, देखो
समय अब क्राति का सदेश नेहरु आ गया देखो।

जवानो, सोच लो यह आखिरी हुँकार बस होगा
इसी में देशद्रोही का महासहार बस होगा
महल के साथ ही बम खार नन्ही झोपडी होगी
समुन्दर-पार शासक की कहीं पर खोपडी होगी
विजय का ताज पहने फिर नया उत्सव आयेगा
प्रफुल्लित हो विजय का गीत भारतवर्ष गायेगा
सदेशा यह समय घर घर यहा पहुचा गया देखो
"उठो अब नवजवानो , आज यह समझा गया देखो

वह आग

—रमानाथ अवस्थी

जो आग जला दे भारत की ऊंचाई
वह आग न जलने देना मेरे भाई ।

तू पूरब का हो या पश्चिम का वासी
तेरे दिल में हो काबा, या हो काशी ।
तू ससारी होये, या हो सन्यासी ।
चाहे तू कुछ भी हो, पर भूल नही यह
तू सब कुछ पीछे पहले भारतवासी ।

जो आग जला दे, भारत की ऊंचाई
वह आग न जलने देना मेरे भाई ।

जिस धरती पर तू हँसता-रोता गाता
है जिससे तेरा जनम जनम का नाता
जो कोटि-कोटि भारत-पुत्रा की माता

जिसकी खुशियो के लिए हमारा जीवन
जाने कितने प्राणा के दिए जलाता।
कुछ अधियारे फिर उभरे लगत है
इसलिए, रोशनी ने आवाज लगाई।

जो आग लगा दे, भारत की ऊचाई
वह आग न जलने देना मेरे भाई।

तू महला में हा या हो मैदानो में
हो आसमान में या हो तहखानो में
पर तेरा भी हिस्सा है बलिदानो में
यदि तुम में धडक्न नही देश के दु ख की
तो तेरी गिनती होगी हैवानो में
मत भूल कि तेरे ज्ञान सूय ने ही तो
दुनिया के अधियारे को राह दिखाई।

जो आग लगा दे, भारत की ऊचाई
वह आग न जलने देना मेरे भाई।

तेरे पुरखो की जादू भरी कहानी
गौतम से लेकर गाधी तक की वाणी।
गगा यमुना का निमल निमल पानी
इन सब पर कोई आच न आने पाए।
सुन ले खेतो के राजा, घर की रानी
भारत का भाल, दिनो दिन जग में चमके
अर्पित है मेरी श्रद्धा और सचाई।

जो आग लगा द भारत की ऊचाई
वह आग न जलने देना मेरे भाई।

शहीद पर लिखो

—ज्ञानवती सक्सेना

तुम गजल लिखो कि गीत प्रीतिकर लिखो
एक पंक्ति तो कभी शहीद पर लिखो।
लौट नहीं पाये, लिखो गीत उन पर
देह प्राण वार गये राष्ट्र धुन पर
नाव कर गये किनार आप बह गये
आखिरी प्रणाम या सलाम कह गये
धूप में टिको कि वही छाँह में टिको
किंतु किसी टूट गई बाह में टिको।
थे जहां जहाँ भी अंधियारे रास्ते
खुद को जलाया रोशनी के वास्ते
नीड का जलाया है चमन के लिये
बाप को रुलाया है वतन के लिये
काँप रहे वृद्ध की थकान पर रुको
दीप नहीं जला उस मकान पर रुको।

ध्वज लहराया जै जै बोल कर गये
मात भूमि हेतु उम्र तोल कर गये
अर्थी का कांधा नही मिला कफन
आरती सजाते हुए हो गये हवन

चाहे जिस पष्ठ के सुलेख हो दिखो
किन्तु मा के नाम पर एक हो दिखो।

प्रीति राधिका की वे श्याम थे कभी
मेहदी रचाया हुआ नाम थे कभी
प्रश्न भरी जिन्दगी का हल थे कभी
वे भी किसी प्यार की गजल थे कभी

नेह ने कहा था कि अनुरक्ति पर बिको
देह ने कहा था कि देश भक्ति पर बिको।

प्रणति

—गोवर्द्धन प्रसाद 'सदय'

जिनमे स्वदेश का मान भरा—
आजादी का अभिमान भरा -
जो निर्भय पथ पर बढ आये—
जो महा प्रलय में मुसकाये—
जो अन्तिम दम तक रहे डटे—
दे दिये प्राण, पर नही हटे—
जो देश-राष्ट्र की वेदी पर—
देकर मस्तक हो गये अमर—

ये रक्त तिलक भारत-ललाम !
उनको मेरा पहला प्रणाम ! !

फिर वे जो आँधी बन भीषण
कर रहे आज दुश्मन से रण,
बाणो के पवि-सधान बने,
जो ज्वालामुख—हिमवान बने
है टूट रहे रिपु के गढ पर
बाधाओ के पर्वत चढकर,

जो न्याय-नीति को अर्जित हैं,
भारत के लिए समर्पित हैं,

कीर्तित जिनसे यह धरा धाम !
उन वीरों का मेरा प्रणाम !!

श्रद्धानत कवि का नमस्कार,
दुर्लभ है छंद प्रसून-हार,
इसको बस वे हो पाते हैं
जो चढे काल पर आते हैं,
हुंकृति से विश्व कँपाते हैं
पर्वत का दिल दहलाते हैं,
रण में त्रिपुरान्तक बने शर्व,
करते जा रिपु का गर्व खर्व,

जो अग्नि-पुत्र त्यागी, अकाम !
उनको अर्पित मेरा प्रणाम !!

भारत की जय

—वीरेन्द्र मिश्र

साझ सकारे चदा सूरज करते जिसकी आरती
उस मिट्टी में मन का सोना घोल दो।
ग्रह-नक्षत्रो ! भारत की जय बोल दो।

वह माली है, वह खुशबू ह, हम चमन
वह मदिर ह, वह मूरत है हम नमन
छाया ह माथे पर आशीर्वाद-सा
वह सस्कृतिया के मीठे सवाद-सा
उसकी देहरी अपना माथा टेक कर
हम उन्नत होते हैं उसको देख कर

ऋतुओ ! उसको नित नूतन परिधान दो।
झुलस रही ह धरती सावन दान दो।
सरल नही परिवतन में मन ढालना
हर पत्थर से भागीरथी निकालना

जिस मदिर-मसजिद गिरजे में बँद पडा इसान हो
जाओ उसमें किरन-किवारा खोल दो,।
कुकुम पत्नो ! भारत की जय बोल दो।

उसको करो प्रणाम, रगो में नीर है
झेलम की आखो वाला कश्मीर है
बजरे और शिकारे उसकी झील के
लगते वनजारे तारे कन्दील-से
किसी नारियल वन की गेय सुगध से
अतरीय के दूरागत मकरद से

फूटा करता नये गीत का अतरा
कुछ क्षण को दुख भूल विहसती है धरा
दो छवि-कमलो के अतर आवास में
कोई बादल घुमड रहा आकाश में

सजन की मगल-बला में धूम केतु क्या चाहता
बच्चो की पावन उत्सुकता तोल दो।
देशज मित्रो ! भारत की जय बोल दो।

हम अनेकता में भी ता ह एक ही
हर सकट में जीता सन्ा विवेक ही
कृति आकृति सस्कृति भाषा के वास्ते
बने हुए है मिलते-जुलते रास्ते
आस्थाओ की टकराहट से लाभ क्या ?
मजिल को हम देंगे भला जवाब क्या ?

हम टूटे ता टूटेगा यह देश भी
मैला होगा वैचारिक परिवेश भी
सजन रत हो आजादी के दिन जिया
श्रम कर्माग्रो ! रचनाकारो ! साथियो !
शाति और सस्कृति की जो बहती स्वाधीनता जाह्नवी
कोई रोके, बलिदानी रग घोल दो।
रक्त चरित्रो ! भारत की जय बाल दो।

प्रशस्ति-गीत

—स्नेहलता 'स्नेह'

जय जवान ! मुक्तियान ! मातृभूमि के विहान !!
जय जवान !

तुम जगे जगा जहान
जाग उठा आसमान ।
तुम बढ़े, उड़ा निशान,
गूंज चले मुक्ति गान ।।
नव सृजन सजे वितान
मातभूमि के विहान ।।
जय-जवान ।।

तुम चलो गगन चले,
साथ हर सपन चले ।।
देश में अमन पले
गोद में सुमन खिले ।।
मुस्कुरा उठे जहान !
मातभूमि के विहान ।
जय-जवान ।।

तुम घिरो तो घन घिरे
तुम घिरो तो मन फिरे ।।

तुम तपो तपे धरा,
हो विजय स्वयवरा ।।

तुम अजर, अमर निशान !
मातभूमि के विहान ।।
जय-जवान ।।

तुम प्रवल प्रबुद्ध हो,
समर-सिंह क्रुद्ध हो।

प्रलयकर रुद्र हो
ज्ञान धीर शुद्ध हो !

देश धर्म आन-बान,
मातृभूमि के विहान ।।
जय-जवान !

गूंज रही भारती
मां उतारे आरती !

तन मन धन वारती,
मा विकल पुकारती !!

गीता के आत्मज्ञान,
मातभूमि के विहान !
जय-जवान !!

ये भुजपत्र सम्मुख है

—रामनरेश पाठक

काल के अणुखड को कर दो समर्पित
यह नये इतिहास का अभिलेख,
ये भुजपत्र सम्मुख ह।
यह सृजन-वेला
जगी ह उन्मदाए
कही इनकी प्रतीक्षाए बुझ न जायें
बीज इनको दो।

जन विपची पर प्रवर्तित
साम-श्रम की ऋचाओ को
स्वर नवलतर दा
कही इनकी प्रतीक्षाए बुझ न जायें
हेतु इनको दा।

यह यजन-वेला
स्वेद कौशल, ईहाओ की अमृत-समिधा दो

जल में, अतल में, तल तले
ये वरण प्रस्तुत खडी ह सब सिद्धिया निधियाँ,
वरण इनको दा।
कही इनकी प्रतीक्षाए बुझ न जायें
वरण इनको दो
सीपियो के मुख भरो माती
उत्सवो को और पर्वो का
खिलो अपनी खुली थाती दो
कही इनकी प्रतीक्षाए बुझ न जायें
अधिकरण-नैमित्ति इनको दा।

यह हिरण वेला,
अल्पनाए उगें पथ रँगें कुकुम,
मादल पर जगें फि थाप,
हवायें ले उडें केसर मलयवलयित करें
कही इनकी प्रतीक्षाए बुझ न जायें
उपकरण, निष्पत्ति इनको दा।

यह अभी उपलब्धि-बेला,
श्वेत शतदल खिल रहे हैं महाशखो में
अर्घ्य अर्पित करो नूतन दीप्त सविता को
कही इनकी प्रतीक्षाए बुझ न जायें
शरण इनको दो।

काल के अणुखड को कर दा समर्पित
यह नये इतिहास का अभिलेख,
ये भुजपत्र सम्मुख ह।

गीत

—भारत भूषण

जब तक अंतिम बूंद रक्त की, जब तक अंतिम शस्त्र हाथ में—
मिट जाएँगे, लेकिन माँ के सिर का शुभ्र दुकूल न देंगे।

हम मिट मिट कर बनने वाले,
मर कर पुन जनमने वाले।
बरस अठारह छतरी जीवे
गाते हम जगनिक मतवाले।

जब तक साबत अंतिम चूडी, जब तक अंतिम माँग सिन्दूरी—
तिल तिल कट जाएँगे, लेकिन ब्रह्मपुत्र के कूल न देंगे!

मत सोचो सख्या में कम है
पुरखो के सदेह विक्रम है।
सवा लाख से एक लडाएँ
उन सिंहो के वशज हम है।

जब तक माँ की अंतिम लोरी अंतिम माखन भरी कटोरी—
देश प्रदेश प्रताप, पिनक का सूखा एक बबूल न देंगे!

याद हमें केसरिया बाना,
मृत्यु हमें भावर डलवाना।
माँ की कोख सिखा देती है
चक्रव्यूह भेदन कर जाना।

जब तक अंतिम माथे टीका, अंतिम कर धागा राखी का—
हिमगिरि तो क्या अपनी धरती की चुटकी भर धूल न देंगे ।।

जहाँ गव के गव झडे हैं,
उस धरती पर हुए बडे ह।
साक्षी है इतिहास युद्ध में
कितनी बार कबंध लडे है।

जब तक अंतिम लक्ष्मी घर में, अंतिम प्राणाहुति खप्पर में—
गिरिवन का क्या ताक रहे हो, मुरझाया भी फूल न देंगे।

16—1 PROD/ND/82.

प्रयाण गीत

—लक्ष्मी त्रिपाठी

तू जननी है, तू धात्री है तू जीवन तू प्राण है
तेरी चरण धूलि पर माता मेरा सब बलिदान है
तेरी चरण धूलि की महिमा मिली हमारे अगो को
हम निष्कटक सदा रखेंगे मा तेरे उत्सगो को
तेरा आगन तेरी गलिया हमको स्वग समान है।

सुदृढ वज्र की तरह देह है तेरे पुत्रो की माता
हमें नही ह भय सीमा पर कौन कहा से है आता
कौन ताक सकता है तुझको जब तक तन में प्राण है
तेरी चरण धूलि पर माता मेरा सब बलिदान है।

तेरी माटी के हम पुतले सब प्रताप है सब सागा
पीछे कौन हटा ह माता तूने जब जब सिर मागा
तेरे चरणो पर सिर देना ही सिर का अभिमान है।
तू जननी है, तू धात्री है, तू जीवन तू प्राण ह।

तेरे बेटे वीर, बेटियां तेरी पीछे क्योंकर हों
शोणदान की इस वेला में माता उत्सव घर घर हो
ड्योढ़ी-ड्योढ़ी तिलक आरती आगन आगन गान है
तेरी चरण धूलि पर माता मेरा सब बलिदान है।

यदि सीमा पर टिड्डी-दल बनकर फिर दुश्मन आये है
तेरे गरुड़ पुत्र भी माता उन्हें निगलने धाये है।
कद्रू के सौ विनता-सुत की शक्ति गये पहचान है।
तेरी चरण धूलि पर माता मेरा सब बलिदान है।

अब प्रलयंकर जाग उठे है, फिर ताडव नर्तन होगा
फिर महिषासुर का वध होगा, फिर भैरव गर्जन होगा!
रक्त बीज पर प्रभु की छाया भी अब मृत्यु समान है।
तू जननी है, तू धात्री है, तू जीवन तू प्राण है।

सबसे ऊँची आवाज

—राजेन्द्र प्रसाद सिंह

मेरे लिए
सबसे ऊँची आवाज—मेरे देश की,
सबसे गहरा मम—मेर देश का,
सबसे व्यापक दृष्टि—मेरे देश की,
सबसे तेज पुरुषार्थ—मेरे देश का,
जैसे सबसे बडा अहसान—मेरे पिता का ।

मेरे लिए
सब कुछ सार्थक है—मेरे ही देश में
वह तो नितान्त पागल है
जो सिद्ध करना चाहे कि सभी दावे निरर्थक हैं ।
मेरे लिए
जुमले सिर्फ दावे नही हैं—सबल हैं!
सबल आगामी सक्रियता के
और सक्रियता कराडो इन्सानो की—
मेरे साथ, सबके लिए ।

अपने ही देश में—
प्रवहमान काल की विश्वजनीन जल राशि में
प्रवेश करते हम
मानवता के अनुभव्य महासिंधुओं के संगम में
साथ-साथ स्नान करते होते हैं।
अपनी सभ्यता के सागरों और खाड़ियों में
डुबकियाँ लगाते हम—
तैरते हैं, अपनी संस्कृति की नदियों में
स्वदेश की ऊर्जाओं में तैरते हैं।
आवाज सम दृष्टि पुरुषार्थ और पूरे व्यक्तित्व के
पंचगव्य का, अपने आचमन से
आस्था का अमृत बना देती ओ माँ, ओ जन-जन की माँ।
राष्ट्र की संगमनी आत्मा, ओ माँ।
अमूर्त नहीं हो तुम-अनुभव से परे नहीं
क्योंकि सच है-यह असहृदय वर्तमान यदि हमारा है,
तो वह दुस्सह अतीत भी हमारा था और तुम—
तुम्हीं, ओ माँ। पूरे राष्ट्र की क्रान्तिकारी जिजीविषा थी—
मुकुट, सिंहासन और दमन चक्र के आयुधों से झड़ती हुई—
राख के पर्वताकार ढेर के नीचे, जीवित चिनगारी—
उन नंग धड़ंग लोगों के चूल्हों और दिलों की सुलगती आग,
जिनकी हकीकत रही—"नहिं विद्या, नहिं बाहु-बल, नहिं गेंठी
तुम वही जन जिजीविषा थी और हो और रहोगी।
राष्ट्र की संगमनी आत्मा जन-दुर्गा! ओ माँ!

जो स्तुत्य या अभियुक्त बनाकर सहसा
अपने घेरों में खड़े करने आए,
उन्हीं के विरुद का विषय है पुरस्कार या दण्ड,
किन्तु हमारे गौरव का विषय
दीनता या दर्प कभी नहीं, यातना से जीतता हुआ श्रम रहा ।
विरुदावली से हम बहुत दूर निकल चुके, बहुत दूर ।

मुड़कर जब देखता हूँ—यह राह
पत्थर-पटी, ऊबड़-खाबड़, कीच-सनी, धूल अटी,
यह राह लौट रही अपने गाँव
तो कितनी आस्थाओं के केंचुल उतार—
धीरे धीरे उगल रही है मुझे   और परिदृश्य पर—
उगी है एक सुरंग, मगर फटी जा रही है ।

दिमाग से निकल रहा यहाँ—तलवों से चढ़ा हुआ कदम
तेज-तेज साँसों से बहर रही—घुटनों तक उड़ पैठी धूल,
दर्द हर जोड़ से उछाल रहे—गिरने से खुबे हुए रोड़े
त्वचा के तनाव पर बिछी है —पत्थर पटी सड़क ही काई ।
चलने को कीच दौड़ने को धूल, सरकने को ऊबड़-खाबड़,
पाँव घसीटने को पत्थरों की पिच्छल राह—किसका गुनाह ?
दुरवस्था के प्रश्नाकुल चौक तक आते आते कैसे सुलझ गई—
पाँवों से उलझी यह गाँवों की राह ? —खुलकर गिरी है पीछे
और आगे है वही पहचानी पगडंडी, जो इस तक ले आई थी ।

आगे   और आगे, ओ माँ ।
गाँव नहीं, दर्पण तुम्हारा है फीका, धूलि धूसर,
उस औंधे दर्पण को मैं उठाऊँगा—मैं सबके साथ, हाथों हाथ,

ग्रामने-सामने एकटक, ग्राह्वान करूँगा—
जन चेतना के मत्र से 'देश' में 'काल' का ग्राह्वान,
ग्रौर तब उसमें देखूगा ग्रौर दिखाऊँगा, ग्रो मा। —
—कैसे तुम्हे मिटटी से चादी ग्रौर सोने मे ढाला गया ?
—कैसे जल-थल के दस्युग्रो के बीच रत्न पुज पर उछाला गया ?
—कसे पसीने से ग्रभिषेक करती भुजाएँ काट-काट सौपी गई ?
—कैसे राजपताका का सिंह गरजा, उछला ग्रौर तुम्हारा वाहन बन गया ?
—लोगो से कैसे मनवाया गया
कि घास चबाता निरीह महिष है तुम्हारा शत्रु—हतव्य
ग्रौर हिंस्र मास भोजी, रक्त शोषक स्वण केसरी
तुम्हारा वाहन है—चरण चारण चक्रवर्ती ?

देखूगा मै सबके साथ इतिहास का इतिहास—पूछूगा ग्रो मां।
— क्या तब भी तुम मौन थी ? ग्रब तक हो मौन ? ग्रागे भी मौन ?
या 'देश' में 'काल' के सुलगते हुए मौन में तुम्ही थी,
तुम्ही हो ग्रौर तुम्ही रहोगी, ग्रो मा। —
ग्रजेय जन जिजीविषा, प्रत्येक महाविस्फोट से पहले ?"

भारत की जय हो

—मोहनचन्द्र मटन

लोकतंत्र संकल्प सिद्ध हो,
भारत जा जग में प्रसिद्ध हो
आलोकित पथ से चलने का—
निज दृढ निश्चय हो।

खड-खड यह देश नही हो,
खडहर का अवशेष नही हो,
नही किसी को दीन-हीन—
होने का सशय हो।

रहे सुरक्षित देश हमारा
सब विधि उन्नत सजा-सवारा,
कही किसी को नही किसी का—
आपस में भय हो।

सस्कृतियो का सगम है यह,
धर्म-कर्म का उदगम है यह
विविध सभ्यता के रूपा मे —
शोभा छविमय हो ।

अपनी एक राष्ट्रभाषा हो
जिसमे अपनी परिभाषा हो,
अपने काम सकें कर जिसमें—
प्रगति असशय हो ।

हिमगिरि-सा ऊचा चरित्र हो
गगा सा जीवन पवित्र हो,
सागर-सा गभीर भाव ले—
छवि महिमामय हो ।
भारत की जय हो ।

मेरा देश

—मधुर शास्त्री

इस कल्याणी धरती पर,
यह मेरा देश मनोहर,
हूं इस पर प्राण निछावर।

तन पर इसके,
सूरज चमके,
मन में महके चांदनी
नस नस में इसकी—
रस बरसे,
अधरा गूंजे रागिनी।
ममता में मान सरोवर,
धाता का धीर धरोहर,
हूं इस पर प्यार निछावर।

इसके गांव,
स्वर्ग से सुन्दर,
नन्दन नगर महान हैं।

इमके वीर सुतों से—
धरती, हिमगिरि—
महिमावान् हैं ।
इसमें प्रताप है मवबर,
इसमें रहीम है रघुवर,
इस पर सब धम निछावर ।

चादी जैसी शुभ्र अहिंसा,
सत्य स्वरूप सुनहरा
भाल गगन से ऊचा,
पग के नीचे सागर गहरा ।
यह मानव का मन सुन्दर,
दानव के लिए भयकर,
इस पर सवस्व निछावर ।

अपने देशवासियो के नाम

—बजरग वर्मा

आओ,

हम सब अब
हिन्दुस्तानी ही रह जायें !

पहले एक साथ चलकर समन्दर में
हम अपनी अपनी जातियाँ धो आयें,
और,
तोड दें अपने अपने प्रान्तो की सीमाए

जिससे

बगाली, गुजराती, मराठी, मद्रासी आदि
हमारी सारी सज्ञाएँ मिट जायें

और

हम सब केवल हिदुस्तानी ही रह जायें !

हममें हिंदु मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई भी अब
कोई न रहे ।
हममें हर आदमी अपना धर्म
अब बस एक ही कहे ।
बस एक ही मंदिर हो हमारा
—यह देश,
चाहो तो उसे
मस्जिद कहो गिरजा या गुरुद्वारा,
जिसकी रक्षा में हम जियें या मर जायें ।

आओ
अब हम सब केवल हिंदुस्तानी ही रह जायें ।
पहले एक साथ चलकर समंदर में
हम अपनी अपनी जातियाँ धो आयें ।

देश

—केदारनाथ कोमल

मेरे अंदर एक
देश बसता है
जिंदगी से हारकर जब
उदास होता हूँ वह
प्यार देता है
दुलार देता है
अपनी बाँहों में
कसता है।
मेरे अंदर एक
पर्वत है जिसकी
चोटी नभ को
चूमती है
जिसकी नस-नस
अपनत्व के नशे में

बताती है
सदियो पुरानी होकर
अमर-नवीन
कहलाती है ।
मेरे अदर
स्कूल-कालेज असमतात
कल-कारखाने-खेत
नहरें-बाध-पुल है, जहा
श्रम के फूल खिलते है
और अडसठ करोड
लोग एक दूसरे के
गले मिलते ह ।

मेरे अदर
कश्मीर-ताज अजता एलोरा का
कुआरा रूप
झिलमिलाता है
हर नई रात सा
नया सूरजमुखी
खिलखिलाता है ।
एक देश बाहर है
एक देश मेरे अदर है
जो देश मेरे अदर है—
वही मेरा मदिर है ।

देश स्वाधीन रहे

—गोपीवल्लभ सहाय

देश स्वाधीन है स्वाधीन रहे।
कोई दुखी न कोई दीन रहे।
अंधेरी रात काट कर आये
गागनी बाट बाट कर आये,
इस तरह हम मौ में लीन रहे।
स्वतंत्रता सभी को प्यारी है
जान से भी अधिक दुलारी है,
सींचते खून से जमीन रहे।
फर्क केवल यही विचारा था,
वरना हम भी हथियार धारा थे।
पालते साँप आस्तीन रहे।
साधना प्रेम और मर्यादा—
यह सही रूप हमारा सादा
रंग जीवन में यही तीन रहे।

जय जय भारत भारती !

—इदरराज वैद 'अधीर'

जय जय भारत भारती !
कोटि-कोटि कठो से बोलें, जय भारत जय भारती !
जय जय भारत भारती !

उत्तर में हिमवान सुशाभित
दक्षिण में सागर आलोडित
जिसका है हर कण आलोकित
बारी-बारी आकर ऋतुएँ जिसको सदा सँवारती,
जय जय भारत भारती !

जिसका आँगन बडा सलाना
हरा भरा जिसका हर कोना
जिसकी धरती उगले साना
जिसके चप्पे चप्पे पर श्री वैभव को है वारती
जय जय भारत भारती !

हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख ईसाई
जैन, बौद्ध ह भाई भाइ
सबने है आवाज लगाई

वीर सपूत

—रवीन्द्र भारती

गगा बडी है हिमालय बडा है
तुम बडे हो या धरती बडी है

तुम सरहदा पर रात दिन
जल रहे मशाल हा
तुम इस मुल्क की आख हा—
हाथ हो पर हो

तुम सजग हो इसलिए देश का गुमान ह
तुम पर है नाज मुल्क को, तुम पर ही शान है

तुम जगे कि दिल में तिरगा फहर उठा
तुम उठे कि काल भी हुकार कर उठा
तुम चले कि आधिया का भाल झुक गया
तुम लडे कि दुश्मना का नाम मिट गया

तुम पर है नाज मुल्क को तुम पर ही शान ह
तुम सजग हो इसलिए देश का गुमान ह

कवि परिचय

कवि परिचय

1 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

आधुनिक हिन्दी के निर्माता जन्म 1850, निधन 1885, जन्म स्थान काशी। प्रमुख काव्य-कृतियां 'भक्ति सर्वस्व', 'कार्तिक स्नान', 'वैशाख महात्म्य', 'देवी छदम लीला', 'प्रात स्मरण मंगलपाठ', 'तन्मय लीला', 'दान लीला', 'रानी छदम लीला', 'प्रबोधिनी', 'स्वरूप चिन्तन' 'श्री पंचमी', 'श्री नाथ स्तुति', 'अपवर्ग अष्टक', 'अपवर्ग पंचक', प्रात स्मरण स्तोत्र, 'वैष्णव सर्वस्व' 'वल्लभीय सर्वस्व', 'तदीय सर्वस्व', 'भक्ति सूत्र वैजयन्ती' 'प्रेम मालिका' 'प्रेम सरोवर', 'प्रेमाश्रु वर्णन', 'प्रेम माधुरी' 'प्रेम तरंग', 'प्रेम प्रलाप', 'होली', 'मधु मुकुल', 'वर्षा विनोद' 'विनय प्रेम पचासा', 'फूलों का गुच्छा', 'प्रेम फुलवारी', 'कृष्ण चरित्र' आदि।

2 बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

भारतेन्दुकालीन प्रमुख कवि, जन्म 1855, निधन 1922 जन्म स्थान मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)। 'आनन्द कादम्बिनी', नामक ख्याति प्राप्त पत्र के सम्पादक, प्रमुख काव्य-कृतियां 'कजली कादम्बिनी', 'जीर्ण जनपद' 'आनन्द अरुणोदय', 'वर्षा बिन्दु' 'प्रयाग रामागमन' 'हार्दिक हर्षादर्श', 'मयंक महिमा' तथा 'आर्याभिनन्दन'। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कलकत्ता में सम्पन्न तीसरे अधिवेशन के सभापति।

3 प्रतापनारायण मिश्र

भारतेन्दुयुगीन प्रख्यात कवि और पत्रकार, जन्म 1856, निधन 1895, जन्म स्थान ग्राम बैजगांव (उन्नाव) उत्तर प्रदेश। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'प्रेम पुष्पावली 'मन की लहर', 'दंगल खण्ड', 'लोकोक्ति शतक', 'तृप्यन्ताम्', 'ब्राडला स्वागत', 'शैव सवस्व', 'शृंगार विलास', 'मानस विनोद', 'प्रताप संग्रह' तथा 'रसखान शतक'। हिन्दी में 'लावनी' तथा 'ख्याल' लिखने में अग्रणी।

4 नाथूराम शंकर शर्मा

द्विवेदी युग के श्रेष्ठतम कवि। जन्म 1859, निधन 1932, जन्म स्थान हरदुआगंज (अलीगढ़) उ० प्र०। प्रकाशित कृतियाँ 'अनुराग रत्न', शंकर सरोज', 'वायस विजय', 'गर्भरण्डा रहस्य', 'शंकर सर्वस्व' आदि।

5 श्रीधर पाठक

खड़ी बोली काव्य के आदि प्रणेता जन्म 1860, निधन 1929, जन्म स्थान जोंधरी (आगरा) उत्तर प्रदेश। प्रमुख काव्य-कृतियाँ जगत सचाई सार', 'कश्मीर सुषमा', 'भारत गीत', मनोविनोद', 'घन विनय', 'गुनवन्त हेमन्त', 'वनाष्टक' 'गोखले प्रशस्ति', 'गोपिका गीत', 'स्वर्गीय वीणा' तथा 'तिलस्माती मुंदरी', 'एकान्त वासी योगी' तथा 'श्रान्त पथिक' (अनूदित), हिन्दी साहित्य सम्मेलन के लखनऊ अधिवेशन के अध्यक्ष।

6 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

खड़ी बोली काव्य के प्रतिष्ठाता, जन्म - 1865, निधन 1947, जन्म स्थान निजामाबाद (आजमगढ़) उत्तर प्रदेश। प्रमुख काव्य-कृतियाँ 'प्रिय प्रवास', 'वैदेही बनवास', चुभते चौपदे' चोखे चौपदे', 'पद्य प्रसून', 'पद्य प्रमोद', 'रसिक रहस्य, 'प्रेमाम्बु वारिधि' 'प्रेम प्रपंच', 'प्रेमाम्बु प्रवाह',

'प्रेम पुष्पहार', 'उदबोधन', 'काव्योपवन', 'ऋतु मुकुर' कमवीर', 'रस कलश' आदि, अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 1923 में दिल्ली में सम्पन्न वार्षिक अधिवेशन के सभापति, साहित्य सम्मेलन की ओर से 'साहित्य वाचस्पति की सम्मानोपाधि से विभूषित, प्रिय प्रवास नामक कृति पर 'मगलाप्रसाद पुरस्कार' से सम्मानित।

7 सत्यदेव परिव्राजक

द्विवेदी-काल के प्रमुख सुधारवादी साहित्यकार। जन्म 1879, निधन 10 दिसम्बर 1961 जन्म-स्थान लुधियाना (पजाब)। प्रकाशित कृति 'अनुभूतियाँ'।

8 माधव शुक्ल

राष्ट्रीय जागरण के अनन्य उद्घोषक कवि। जन्म 1881, निधन 1943। जन्म स्थान इलाहाबाद। प्रकाशित कृतिया 'भारत गीतांजलि', 'राष्ट्रीय गान' और उठो हिन्द सन्तान' आदि।

9 गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'

द्विवेदी-काल के प्रमुख कवि एव साहित्यकार। जन्म 1881, निधन 1961। जन्म स्थान झालरा पाटन (राजस्थान)। प्रकाशित कृति 'मातृ-वन्दना'।

10 गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'

खड़ी बोली काव्य के उन्नायक कवियों में अग्रणी तथा 'सुकवि' के ख्यात नामा सम्पादक। जन्म 1883 निधन 1972 जन्म स्थान हड़हा (उन्नाव) उत्तर प्रदेश। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'प्रेम पचीसी' 'कृषक क्रन्दन 'राष्ट्रीय मन्त्र' राष्ट्रीय वीणा 'त्रिशूल तरग' 'कलामे त्रिशूल' 'सजीवनी' और करुणा कादम्बिनी। 'कवित्त' तथा 'सवैया' काव्य पद्धति के सिद्ध आचार्य।

राष्ट्रीय रचनाएं 'त्रिशूल' नाम से लिखा करते थे, अखिल भारतीय हिन्दी सम्मेलन की ओर से 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि से सम्मानित।

11 मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी'

खड़ी बोली के आदिकवियों में अन्य, जन्म 1884, निधन 1921, जन्म स्थान ग्राम गजपुर (गोरखपुर) उत्तर प्रदेश। प्रमुख काव्य-कृतियाँ प्रेम तथा 'विनोद'।

12 लोचनप्रसाद पाण्डेय

हिन्दी के उत्थान-काल के प्रमुख कवि। जन्म 4 फरवरी, 1886, निधन, 18 नवम्बर 1959, प्रकाशित कृतियाँ 'नीति कविता', 'पद्म पुष्पांजलि', वैदिक प्रार्थना' और 'कवित्व कुसुम माला' आदि।

13 मैथिलीशरण गुप्त

आधुनिक हिन्दी कविता के उन्नायकों में प्रमुख तथा 'राष्ट्रकवि' के गौरव से अभिषिक्त, जन्म 1886, निधन 1964, जन्म स्थान चिरगाँव (झाँसी) उत्तर प्रदेश। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'रंग में भंग', 'पद्य प्रबंध', 'जयद्रथ-वध', 'भारत भारती', शकुन्तला', तिलोत्तमा', 'पंचवटी', 'चन्द्रहास', 'पत्रावली' 'वैतालिक', 'किसान', अनघ' 'स्वदेश' 'संगीत', हिन्दू', 'शक्ति', 'सैरन्ध्री', 'वन वैभव' 'बकसंहार', विकट भट', 'गुरुकुल', 'झंकार', 'साकेत', 'यशोधरा', सिद्धराज' मंगल घट', 'नहुष', 'द्वापर', 'कुणाल गीत', 'काबा और कर्बला' विश्व वेदना', 'अजित', 'प्रदक्षिणा', पृथ्वी पुत्र', 'हिडिम्बा', 'अंजलि और अर्घ्य' आदि। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन से 'साहित्य वाचस्पति' सम्मानोपाधि तथा 'साकेत' नामक काव्य पर मंगलाप्रसाद पुरस्कार' से सम्मानित। 'पद्मभूषण' से अलंकृत।

14 माखनलाल चतुर्वेदी

राष्ट्रीय कवियां में सर्वाग्रणी जन्म 1888, निधन 1967 जन्म स्थान बाबई (मध्यप्रदेश)। प्रमुख काव्य कृतियां हिम किरीटिनी', 'हिम तरंगिनी, 'माता', 'वेणु ला गूंजे धरा', 'युग चरण', 'समपण' 'बीजुरी काजल ग्राज रही', आदि। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के हरिद्वार अधिवेशन के सभापति, 'हिम तरंगिनी' पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्रदान किया गया 'पदमभूषण से अलंकृत।

15 जयशंकर प्रसाद

छायावादी कवियां मे अग्रणी। जन्म 1889 निधन 1936, जन्म स्थान काशी। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'चित्राधार', कानन कुसुम, प्रेम पथिक', 'करुणालय', 'महाराणा का महत्व झरना' आसू तथा 'कामायनी। आपकी 'कामायनी' नामक प्रख्यात काव्य कृति पर 'मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्रदान किया गया था।

16 रामनरेश त्रिपाठी

राष्ट्रीय जागरण के कवियां मे अग्रयतम जन्म 1889 निधन 1962 जन्म स्थान कोहरीपुर (जौनपुर) उत्तर प्रदेश। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'मिलन, पथिक', 'स्वप्न' तथा 'मानसी'। लोकगीतो के सकलन के क्षेत्र मे अभिनन्दनीय काय तथा 'हिन्दी कविता कौमुदी के सम्पादक।

17 ठाकुर गोपालशरण सिंह

छायावाद युग के प्रमुख कवि जन्म 1891 निधन 1960 जन्म स्थान नई गढी (रीवा) मध्य प्रदेश। प्रमुख काव्य कृतियां 'कादम्बिनी', 'मानवी', 'सुमला', ज्योतिष्मती 'सचित' तथा आधुनिक कवि (भाग 4)।

18 चण्डीप्रसाद 'हृदयेश'

छायावाद युग के विशिष्ट साहित्यकार। जन्म 1891, निधन 1927 जन्म स्थान पीलीभीत (उत्तर प्रदेश)।

19 रामचन्द्र शुक्ल

छायावाद युग के कवि। जन्म स्थान देहरादून (उत्तर प्रदेश)। जन्म तिथि 7 मई 1894। निधन तिथि 2 अप्रेल 1976। इस सकलन में समाविष्ट आप की कविता आज भी प्रख्यात आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का समझी जाती है। यह भ्रम इसलिए उत्पन्न हुआ कि प्रख्यात साहित्यकार श्री रामनरेश त्रिपाठी ने अपनी कविता कौमुदी' (द्वितीय भाग) में इस रचना को समीक्षक शुक्ल जी के नाम से प्रकाशित कर दिया था। इसके उपरान्त इस कविता की उत्कृष्टता का सारा श्रेय इन्हें न मिलकर आचार्य शुक्ल को मिलने लगा।

20 जगदम्बा प्रसाद मिश्र 'हितैषी'

सनेही स्कूल के प्रमुख कवि। जन्म 1895, निधन 1957, जन्म स्थान गज मुरादाबाद (उन्नाव) (उत्तर प्रदेश)। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'मात गीता 'वकाली 'कल्लोलिनी' तथा 'दशन', आपने मूल फारसी से उमर खैयाम की रुबोइयात का हिन्दी अनुवाद भी किया था।

21 सियारामशरण गुप्त

राष्ट्रकवि मथिलीशरण गुप्त के छोटे भाई और प्रमुख राष्ट्रीय कवि। जन्म 1895 निधन 1963, जन्मस्थान चिरगाव (झासी)। प्रमुख काव्य कृतिया 'मौय विजय, 'अनाथ' 'दूर्वा दल', 'विपाद', आर्द्रा, 'आत्मोत्सग', मण्मयी' 'बापू' पथिक', उन्मुक्त' 'नकुल', 'दैनिकी', 'नोआखाली', 'जयहिन्द', 'गीता सवाद' आदि।

22 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

हिंदी के युगान्तरकारी कवि जन्म 1896, निधन 1961, जन्म स्थान महिषादल रियासत मेदिनीपुर (पूर्वी बंगाल)। पैतृक भूमि गढ़ाकोला (उन्नाव), उत्तर प्रदेश। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'परिमल', 'गीतिका', 'अनामिका', 'तुलसीदास', 'बेला', 'नये पत्ते', 'अणिमा', 'अर्चना', 'कुकुरमुत्ता' आदि।

23 श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'

झण्डा-गान के रचयिता जन्म 1896, निधन 1977, जन्म स्थान नरवल (कानपुर), उत्तर प्रदेश।

24 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

राष्ट्रीय काव्य धारा के विशिष्ट कवि, जन्म 1897, निधन 1906, जन्म स्थान भ्याना (शाजापुर) मध्य प्रदेश। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'कुंकुम', 'रश्मि रेखा', 'अपलक', 'क्वासि', 'विनोबा स्तवन', 'उर्मिला', 'हम विषपायी जनम के' तथा 'पदार्पण'।

25 उदयशंकर भट्ट

हिन्दी की वेदनावादी धारा के प्रमुखतम कवि तथा नाटककार, जन्म 1898, निधन 1966, जन्म स्थान इटावा (उत्तर प्रदेश) ननिहाल में, पैतृक भूमि कर्णवास (बुलन्दशहर)। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'तक्षशिला', 'राका', 'विसर्जन', 'मानसी', 'युगदीप', 'अमृत और विष', 'यथार्थ और कल्पना' आदि।

26 सुमित्रानन्दन पन्त

छायावादी काव्य के उन्नायक, जन्म 1900, निधन 1977, जन्म स्थान कौसानी (अल्मोड़ा), उत्तरप्रदेश। प्रमुख काव्य-कृतियाँ 'उच्छ्वास',

18—1PROD[ND]82

'पल्लव', 'वीणा', 'ग्रन्थि', 'गुंजन, 'युगान्त', 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'स्वर्ण धूलि' 'स्वर्ण किरण, 'उत्तरा', 'रजत शिखर', 'युगपथ', 'शिल्पी', 'चिदम्बरा', 'गीत अगीत' तथा 'कला और बूढ़ा चाँद' आदि। साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत तथा सम्मानित और अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'साहित्य वाचस्पति' उपाधि से विभूषित। चिदंबरा' पर भारतीय भाषाओं के सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार (वर्ष 1968 के लिए) से सम्मानित।

27 मनोरंजन प्रसाद सिंह

राष्ट्रीय कवि, जन्म 1900, निधन 1971, जन्म स्थान डुमराव, शाहाबाद (बिहार)। हिंदी के अतिरिक्त भोजपुरी में भी काव्य रचना, फिरंगिया' तथा कुंवर सिंह' कविताएँ राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के दिनों में अत्यंत लोकप्रिय फिरंगिया' गांधीजी को भी प्रिय।

28 मोहनलाल महतो 'वियोगी'

छायावाद-काल के प्रमुखतम कवि। जन्म 1902। जन्म स्थान पिंडवेची गया (बिहार) प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ 'निर्माल्य', 'एक तारा तथा 'आर्यावर्त'।

29 भगवती चरण वर्मा

छायावादोत्तर काल के अन्यतम कवि तथा उपन्यासकार। जन्म 1903, निधन 1981, जन्म स्थान शफीपुर (उन्नाव), उत्तरप्रदेश। प्रमुख काव्य कृतिया 'प्रेम संगीत', 'मधुकण', तथा मानव। राज्यसभा के मनोनीत सदस्य और अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'साहित्य वाचस्पति' उपाधि से अलंकृत।

30 सुभद्रा कुमारी चौहान

हिंदी की प्रमुख कवयित्री, जन्म 1904, निधन 1948, जन्म स्थान प्रयाग (उत्तर प्रदेश) का निहालपुर मोहल्ला। प्रमुख काव्य-कृतियां

झासी की रानी' 'सभा के खेल', 'मुकुल' तथा 'त्रिधारा'। 'मुकुल' भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'सेक्सरिया पुरस्कार' से पुरस्कृत।

31 वशीधर शुक्ल

राष्ट्रीय भावधारा के उन्नायक कवि। जन्म 1904, निधन 1980, जन्म स्थान लखीमपुर-खीरी (उत्तरप्रदेश)। प्रमुख काव्य-कृतिया 'राम मडैया', 'राजा की कोठी', 'गाव की दुनिया', 'किसान की दुनिया', 'चरवाहा', 'हरवाहा'। गांधी जी के अत्यन्त प्रिय भजन 'उठ जाग मुसाफिर भोर भई' के रचयिता।

32 छैलबिहारी दीक्षित 'कण्टक'

राष्ट्रीय जागरण-काल के कविया में प्रमुखतम। जन्म 9 अक्तूबर, 1905 जन्म स्थान छिपटी, इटावा। निधन 27 मई 1981। प्रमुख प्रकाशित कृति 'क्रान्ति की झकारें'।

33 सोहनलाल द्विवेदी

गाधीवादी काव्य धारा के कवियो मे अन्यतम। जन्म 1906, जन्म स्थान बिन्दकी (फतहपुर) उत्तर प्रदेश। प्रमुख काव्य-कृतियाँ 'भैरवी', 'वासवदत्ता', 'वासन्ती', 'कुणाल', 'जय भारत जय', 'पूजा गीत', 'युगाधार 'चित्रा 'विषपान' आदि। बाल साहित्य के निर्माण में भी अग्रणी काय।

34 डा० जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'

कवि नाटककार, पत्रकार समाज-सेवी तथा स्वतत्रता सेनानी, जन्म 1907, जन्म स्थान मध्यप्रदेश में ग्वालियर जिले का मुरादनगर। काव्य सग्रह 'समपण', 'जीवन-सगीत', 'नवयुग के गान', 'बलिपथ के गीत', 'भूमि

की अनुभूति', 'मुक्ति का पूव', 'स्वतन्त्रता की बलिवेदी' एव मत्युजय मानव' (खण्ड काव्य), वतमान पता जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द, शोध सस्थान तथा पुस्तकालय, नवीन भवन, दाल बाजार, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

35 केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'

छायावाद युग के कवियो में अन्यतम, जन्म 1907, निधन 1984, जन्म स्थान आरा (बिहार)। प्रमुख काव्य कृतिया 'कलेजे के टुकडे' ज्वाला', श्वेत नील' कलादिनी', कम्पन' 'सवत', 'कैकेयी', 'स्वर्णोदय', 'कर्ण', चिरस्पश', 'तप्तगह' ऋतम्बरा' तथा 'सगान्त' आदि। आपकी 'ज्वाला, नामक कविता ब्रिटिश नौकरशाही द्वारा क्रान्तिकारी घोषित कर दी गई थी 'ऋतम्बरा तथा 'बैठो मेरे पास' उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत।

36 महादेवी वर्मा

हिन्दी की रहस्यवादी धारा की उन्नायिका, जन्म 1907 जन्म स्थान फर्रुखाबाद (उत्तरप्रदेश)। प्रमुख काव्य कृतिया नीहार, 'रश्मि' 'नीरजा 'सान्ध्य गीत, दीपशिखा, 'यामा', तथा 'आधुनिक कवि—'भाग एक। अखिल भारतीयहिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से 'मगलाप्रसाद पुरस्कार और साहित्य वाचस्पति' की सम्मानोपाधि से विभूषित।

37 डा० हरिवशराय 'बच्चन'

छायावादोत्तर-काल के कवियो में अग्रणी जन्म 1907 जन्म स्थान प्रयाग। प्रमुख काव्य-कृतिया तेरा हार, 'मधुशाला', मधुबाला', 'मधु कलश' निशा निमन्त्रण' 'एकान्त सगीत' 'आकुल अन्तर', 'सतरगिनी' 'मिलन यामिनी', 'विकल विश्व, 'हलाहल', 'प्रणय-पत्रिका, 'बुद्ध और नाचघर, 'आरती और अगारे, चार खम्भे चौसठ खूटे, दो चटटाने

आदि। आपकी 'दो चट्टानें' नामक कृति पर साहित्य अकादेमी का पुरस्कार दिया गया था। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'साहित्य वाचस्पति उपाधि से विभूषित।

38 श्यामनारायण पाण्डेय

राष्ट्रीय विचार धारा के विशिष्ट कवि। जन्म 1907, जन्म स्थान आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश)। प्रमुख प्रकाशित कृतियां 'हल्दी घाटी', 'जौहर' 'आरती', 'तुमुल', 'जय हनुमान' तथा 'गोरा वध आदि। स्थायी पता मऊनाथभजन (आजमगढ़), उ० प्र०।

39 हरिकृष्ण 'प्रेमी'

हिन्दी की वेदनावादी काव्य धारा के अग्रयतम कवि, जन्म 1908 निधन 1974। जन्म स्थान गुना (ग्वालियर), मध्यप्रदेश। प्रमुख काव्य कृतियां 'आखा में', 'अनन्त के पथ पर स्वर्ण विहान' 'जादूगरनी, अग्नि गान', 'प्रतिमा 'रूप दर्शन तथा 'वन्दना के बोल' 'स्वर्ण विहान' नामक काव्य कृति ब्रिटिश नौकरशाही द्वारा जब्त कर ली गई थी।

40 रामधारीसिंह दिनकर'

राष्ट्रीय काव्य धारा के अनन्य उन्नायक। जन्म 1908, निधन 1974 जन्म स्थान सिमरिया घाट (मुंगेर) बिहार। प्रमुख काव्य-कृतियां रेणुका', 'हुंकार', 'रसवन्ती', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', सामधेनी 'उर्वशी, 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'हारे को हरिनाम' आदि। भागलपुर विश्वविद्यालय द्वारा डाक्टरेट की मानद उपाधि प्राप्त और बाद में इसी विश्वविद्यालय के कुलपति। 'उर्वशी' काव्य-कृति पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार', भारत सरकार के हिन्दी परामर्शदाता भी रहे।

41 पद्मकान्त मालवीय

हालावादी काव्य धारा के अनन्य उन्नायक तथा सम्पोषक । जन्म 1908, निधन 1981, जन्म स्थान प्रयाग । प्रमुख काव्य कृतियाँ 'त्रिवेणी', 'प्याला, प्रमपत्र', 'आत्म वेदना', 'आत्म विस्मृति', 'हार' 'कुजन' तथा 'पद्मकान्त मालवीय और उनका काव्य' ।

42 कमला चौधरी

जन्म 1908, निधन 1970, जन्म स्थान लखनऊ । प्रमुख काव्य कृतियाँ 'खैयाम का जाम', 'म गाधी बन जाऊँ', तथा 'चित्रो में लोरिया', आपकी 'आपन मरन जगत कै हासी' नामक हास्य व्यग्य की कविता पुस्तक भी प्रकाशित है ।

43 कलक्टरसिंह 'केसरी'

जन्म 1909, जन्म स्थान एकौना (शाहबाद) बिहार । प्रमुख काव्य कृतिया 'महाली', 'कदम्ब और 'आम-महुआ' ।

44 शिशुपाल सिह 'शिशु'

स्वातन्त्र्योत्तर-काल के प्रमुख राष्ट्रीय कवि, जन्म 1 सितम्बर 1911, निधन 1964, जन्म स्थान उदी (इटावा) । प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ 'परीक्षा', 'हल्दी घाटी की एक रात', 'अपने पथ पर', 'छोडो हिन्दुस्तान', 'दो चित्र' 'पूर्णिमा', 'नदी किनारे' 'तीन आहुतियाँ' आदि ।

45 आरसीप्रसाद सिंह

छायावादोत्तर-काल के प्रमुख कवि जन्म 1911, जन्म स्थान एरौत (दरभगा) बिहार । प्रमुख काव्य कृतियाँ 'आरसी, कलापी', प्रेमगीत', 'नन्ददास', 'आधी के पत्ते, 'सजीवनी', 'पाचजन्य', 'उदय',

'श्रारण्यक' श्रादि। वतमान पता मोहल्ला टिकिया टोली, देवी स्थान, पा० महेन्द्रू, पटना-6

46 भवानी प्रसाद तिवारी

रवीन्द्र की 'गीताजलि' के श्रनुगायक कवि, जन्म 1912, निधन 1977, जन्म स्थान सागर (म० प्र०)। प्रमुख काव्य कृतिया 'प्राण पूजा' राज्यसभा के 12 वप तक मनोनीत सदस्य रहे, सागर विश्वविद्यालय द्वारा डाक्टरेट की मानद उपाधि से विभूषित।

47, रामगोपाल 'रुद्र'

जन्म 1912, जन्म स्थान शाहपुर (पटना), बिहार। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'शिजिनी', 'मूच्छना 'हिम शिखर', द्राण', 'बाधिसत्व, वतमान पता बी 108 बुद्ध कालोनी, ईस्ट बोरिंग कैनाल रोड पटना-1

48 गोपालसिंह नेपाली

राष्ट्रीय भावधारा के प्रमुख गीतकार कवि, फिल्म-क्षत्र मे हिन्दी-काव्य के प्रतिष्ठाता जन्म 1913, निधन 1963 जन्म स्थान बेतिया (चम्पारन) बिहार। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'उमग पछी, 'नवीन रागिनी, 'नीलिमा', 'पचमी', तथा 'हिमालय ने पुकारा'।

49 नरेन्द्र शर्मा

छायावादोत्तर-काल के प्रमुख कवि। वर्षों तक श्राकाशवाणी से सबद्ध, जन्म 1913, जन्म स्थान ग्राम जहाँगीरपुर (बुलन्दशहर)। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'प्रभात फेरा', 'प्रवासी के गीत, पलाशवन' कामिनी, 'रक्त चन्दन', 'द्रोपदी', श्रादि। स्थायी पता 14 वा रास्ता, खार बम्बई 52

50 नर्मदा प्रसाद खरे

जन्म 1913, निधन 1975, जन्म स्थान जबलपुर (म०प्र०)। प्रमुख काव्य-कृतिया स्वर पाथेय', 'ज्योति गगा', 'मरण त्योहार के गायक' 'महक उठे शूल', 'नाम उजागर करा देश का', 'वासुरी, 'राष्ट्रपिता को रोते देखा' आदि।

51 बालकृष्ण राव

तेलुगु भाषी प्रमुख हिन्दी कवि। जन्म 1913, निधन 1975, जन्म स्थान प्रयाग। प्रमुख काव्य कृतिया 'कौमुदी, 'आभास', 'कवि और छवि 'रात बीती', हमारी राह' तथा 'अर्ध-सती', भारतीय प्रशासन सेवा के वरिष्ठ पद से त्यागपत्र देकर विशुद्ध साहित्य सेवा का व्रत लिया। आगरा तथा गोरखपुर विश्वविद्यालयो के कुलपति रहे।

52 भवानीप्रसाद मिश्र

आधुनिक कविता के सशक्त हस्ताक्षर। जन्म 1913, निधन 1985, जन्म स्थान टिगारिया ग्राम (होशगाबाद) म०प्र०। प्रमुख काव्य कृतिया 'गीत फरोश', चकित ह दुख अधेरी कविताएँ 'बुनी हुई रस्सी' खुशबू के शिलालेख, व्यक्तिगत' कालजयी' आदि साहित्य अकादेमी नई दिल्ली से 'बुनी हुई रस्सी पुरस्कृत म० प्र० शासन साहित्य परिषद और साहित्य कला परिषद दिल्ली द्वारा सम्मानित। वतमान पता गाधी स्मारक निधि राजघाट नई दिल्ली 110002

53 विद्यावती 'कोकिल'

जन्म 1914, जन्म स्थान हसनपुर (मुरादाबाद), उत्तरप्रदेश। प्रमुख काव्य कृतिया 'अकुरिता 'मा' सुहागिन, 'पुनर्मिलन' तथा 'आरती'। वतमान पता अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी।

54 रामेश्वर प्रसाद गुरु 'कुमार हृदय'

राष्ट्रीय नव जागरण के अन्यतम कवि और सुप्रसिद्ध वैयाकरण श्री कामता प्रसाद गुरु के द्वितीय पुत्र, जन्म तिथि 4 अप्रैल 1914 जन्म स्थान जबलपुर (मध्य प्रदेश)। एम० एस० सी० शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त अनेक वर्ष तक शिक्षक रहे। जबलपुर कारपोरेशन के मेयर भी रहे। कवि होने के साथ-साथ साहित्य की अन्य विधाओं में भी लिखते हैं। स्थायी पता 'पंचशील', 9, गुजराती कालोनी, वेरीवान, जबलपुर—2

55 शम्भुनाथ 'शेष'

हिन्दी में गजलों और रुबाइयों के प्रयोक्ता कवि। जन्म 1915, निधन 1958। जन्म स्थान फरीदकोट (पंजाब)। प्रमुख काव्य कृतियां 'उन्मीलिका', 'सुवेला', 'बाल मला' और 'अन्तर्लोक'। लम्बे समय तक सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय से सम्बद्ध रहे।

56 पदमसिंह शर्मा 'कमलेश'

प्रगतिवादी धारा के अन्यतम कवि, जन्म 1915, निधन 1974, जन्म स्थान बरी का नगला (मथुरा)। प्रमुख काव्य कृतियाँ मैं सुखी हूँ 'तू युवक है', 'दूब के आँसू', 'धरती पर उतरो', 'दिग्विजय' तथा 'एक युग बीत गया' हिन्दी में इण्टरव्यू शैली के प्रवर्तक।

57 रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

छायावादोत्तर-काल के प्रतिष्ठित कवियों में अग्रणी। जन्म 1915, जन्म स्थान किशनपुर (फतेहपुर) उत्तरप्रदेश। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'प्राथमिक', 'किरण वेला', 'करील', 'वर्षान्त के बादल', 'विराम चिह्न' और 'प्रत्यूष की भटकी किरण यायावरी'। वर्तमान पता पचपेडी, दक्षिण सिविल लाइन्स, जबलपुर (म० प्र०)।

58 तारा पाण्डे

छायावादोत्तर काल की उत्कृष्ट कवयित्री, जन्म 1915, जन्म स्थान दिल्ली। प्रमुख काव्य-कृतियां 'वेणुकी', 'शुकपिक', 'सीकर', 'रेखाएं', 'आभा', 'गोधूलि' 'अन्तरंगिणी', 'विपंची', 'काकली', 'भाव गंधा', 'गीतों के पंख' आदि। वर्तमान पता 'साकेत', नैनीताल (उत्तर प्रदेश)

59 गोपाल प्रसाद व्यास

हास्य रस के प्रमुख कवि। जन्म सन् 1915, जन्म स्थान सूरदास की निर्वाण स्थली पारसौली (मथुरा) में। प्रमुख कृतियां 'अजी सुनो', 'उनका पाकिस्तान', 'कदम कदम बढाए जा', 'आराम करो', 'रंग', 'जग और व्यंग्य', सलवार चली', 'पत्नी को परमेश्वर मानो' 'भाभी जी नमस्ते', 'तो मैं क्या जानूं, 'ससुराल चलो' तथा 'बूढ़ों ने किया कमाल यार'। अनेक वर्ष तक 'दैनिक हिन्दुस्तान' से सम्बद्ध रहने के उपरान्त अब सेवा निवृत्त। वर्तमान पता बी 52-गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली—110049

60 अशोकजी

हिन्दी पत्रकारों में अग्रणी, जन्म 1916, निधन 1979। जन्म स्थान वाराणसी (उ० प्र०)। बहुत दिन तक सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय से सम्बद्ध रहे और अन्तिम दिनों में 'स्वतन्त्र भारत' दैनिक (लखनऊ) का सम्पादन किया।

61 डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन'

प्रमुख प्रगतिशील कवि। जन्म 1916, जन्म स्थान, ग्राम झगरपुर (उन्नाव), उ० प्र०। प्रमुख काव्य कृतियां 'हिल्लोल', 'जीवन के गान', 'प्रलय सृजन', 'विश्वास बढता ही गया', 'पर आँखें नहीं भरीं' आदि। अनेक वर्ष तक नेपाल के भारतीय दूतावास में प्रेस एवं सांस्कृतिक सहचारी, 1958 में 'विश्वास बढ़ता ही गया' पर देव पुरस्कार तथा 1964 में 'पर आंखें नहीं भरीं' पर उत्तर प्रदेश सरकार के नवीन पुरस्कार से पुरस्कृत। 1974 में भारत सरकार

द्वारा पद्मश्री से अलंकृत। वर्तमान पता उपाध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ उत्तर प्रदेश।

62 क्षेमचन्द्र 'सुमन'

हिन्दी में सन्दर्भ-ग्रंथों के प्रकाशन के लिए ख्याति-लब्ध। जन्म 1916, जन्म स्थान बाबूगढ़ (मेरठ) (अब गाजियाबाद जनपद)। प्रमुख काव्य कृतियाँ 'मल्लिका', 'बन्दी के गान' तथा 'कारा'। लगभग 24 वर्ष तक साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली में कार्य करने के उपरान्त आजकल 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' नामक विशाल दस खण्डीय सन्दर्भग्रंथ के लेखन में व्यस्त। प्रथम खण्ड का प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी द्वारा तथा द्वितीय खण्ड का राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा विमोचन। वर्तमान पता 'अजय निवास', दिलशाद कालोनी, शाहदरा, दिल्ली-110032

63 रामप्रिय मिश्र 'लालधुआँ'

जन्म 5 जनवरी सन् 1916, जन्म स्थान आसनसोल (बिहार)। उग्र राष्ट्रवादी कवि। समाजवादी आन्दोलन से काफी दिन सम्बद्ध रहे। वर्तमान पता वाल्मीकि प्रेस, मिखना पहाड़ी, पटना।

64 सुमित्राकुमारी सिन्हा

हिन्दी की वर्तमान कवयित्रियों में अन्यतम। जन्म 1916, जन्म स्थान लखनऊ। प्रमुख काव्य-कृतियां 'विहाग', 'आशा पर्व', 'पंथिनी', 'आंगन के फूल', 'बोलो के देवता', 'प्रसारिका', अनेक वर्ष तक दिल्ली तथा लखनऊ के आकाशवाणी केन्द्रों से सम्बद्ध रही। वर्तमान पता एफ 12-क, रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ।

65 जानकी वल्लभ शास्त्री

छायावादोत्तर काल के अन्यतम गीतकार, जन्म 1916, जन्म स्थान मैगरा (गया) बिहार। प्रमुख काव्य कृतियां 'रूप अरूप', तीर-तरंग, 'मेघ गीत' 'शिप्रा', 'अवन्तिका', गाथा', 'राधा' संगम' आदि। पटना विश्व-

विद्यालय के विजिटिंग प्रोफेसर, साहित्य अकादेमी, नागरी प्रचारिणी सभा और बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् की अनेक समितियों के सम्मानित सदस्य। स्थायी पता निराला निकेतन, मुजफ्फरपुर (बिहार)।

66 गजानन माधव मुक्तिबोध

नये भाव-बोध के स्रष्टा कवि और साहित्यकार। जन्म 1917, निधन 1964, जन्म स्थान श्यापुर (ग्वालियर) मध्यप्रदेश। प्रमुख काव्य-कृतियां 'चांद का मुंह टेढ़ा है', 'तार सप्तक' में भी सहयोगी कवि।

67 चिरंजीत

जन्म 1917। जन्म स्थान ग्राम जुदियाला (अमृतसर)। प्रमुख काव्य कृतियां 'चिलमन' तथा 'मधु की रात और जिन्दगी', अनेक वर्षों तक आकाश वाणी से सम्बद्ध रहे ढोल की पोल' से प्रख्यात 'ढिंढारची' और इस उपलक्ष मे 'पद्मश्री' से विभूषित, वर्तमान पता डी 2 ई डी डी ए फ्लैटस, मुनीरका, नई दिल्ली 110067

68 श्रीकृष्णदास

जन्म 1917 निधन 1980, जन्म स्थान जौनपुर (उत्तरप्रदेश)। प्रगतिवादी विचार-धारा के संवाहक साहित्यकार।

69 शम्भुनाथ सिंह

जन्म 1917। जन्म स्थान ग्राम रावतवार (देवरिया)। उ० प्र० प्रमुख काव्य कृतियां छाया लोक', 'मन्वन्तर', 'उदयाचल, 'दिवा लोक', 'माध्यम मं, खण्डित सेतु' तथा 'समय की शिक्षा आदि। वर्तमान युग के गीतकारों में अग्रणी वर्तमान पता सी 14/160, बी 2, सोनिया, वाराणसी।

70 रामचन्द्र द्विवेदी 'प्रदीप'

सिने-जगत के प्रख्यात हिन्दी गीतकार। जन्म 1917, जन्म स्थान

बडनगर (मालवा) मध्यप्रदेश । प्रमुख काव्य कृति 'पूर्णिमा' । वतमान पता घोडव दर राड, विले पारले बम्बई ।

71 रामदयाल पाण्डेय

राष्ट्रीय भावधारा के प्रमुख कवि । जन्म 1917, जन्म स्थान शाहपुर पट्टी, भोजपुर (विहार) । प्रकाशित कृतिया 'गणदेवता', 'अशोक' आदि । वतमान पता निदेशक, विहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना ।

72 भरत व्यास

राष्ट्रीय कवि नाटककार तथा फिल्मी गीतकार जन्म 1917, राजस्थान के चुरू नगर मे वतमान पता भरत सदन, जुहू स्कीम, विले पारले (पश्चिम) वम्बई 400056

73 हसकुमार तिवारी

प्रगति वादी-युग के कवि जन्म 1918, निधन 1980 । जन्म स्थान पचकोट राज पुरुलिया (बगाल) । प्रमुख काव्य-कृतिया 'रिमझिम', नवीन' अनागत', आग पिये मोम की मूरत' आदि, वगला साहित्य ममज्ञ एव अध्येता साहित्यकार । अंतिम दिना विहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना के निदेशक भी रहे थे ।

74 सरस्वतीकुमार 'दीपक'

हिन्दी सिने क्षेत्र के प्रतिभाशाली कवि । जन्म 1918, जन्म स्थान नेयला (बुलन्दशहर) वतमान पता 34/580 अग्रवाल रोड, कुर्ला, बम्बई-60

75 गिरिजा कुमार माथुर

प्रयोगवादी भाव धारा के विशिष्ट कवि, जन्म 1919, जन्मस्थान अशोकनगर (मध्य प्रदेश) । प्रमुख काव्य-कृतिया 'मजीर, 'तार सप्तक', नाश और निर्माण, धूप के धान', 'शिला पख चमकीले' आदि

ग्राकाशवाणी के विभिन्न उत्तरदायित्वपूण पदो पर रहकर सेवा निवृत्त। वतमान पता बी 3/44, जनकपुरी, नयी दिल्ली—110058

76 प्रयागनारायण त्रिपाठी

जन्म 1919, जन्म स्थान रायपुर (रायबरेली), उ० प्र०। प्रमुख काव्य कृतिया 'तीसरा सप्तक' में कुछ कविताए सकलित, बहुत दिन तक भारत-सरकार की केंद्रीय सूचना सेवा से सम्बद्ध रहने के उपरान्त ग्रब सेवा-निवृत्त, वतमान पता माफत कुमारी शशि त्रिपाठी, हिन्दी ग्रधिकारी, युनाइटेड कमशियल बक, पालियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली—110001

77 निरकारदेव 'सेवक'

प्रगतिशील विचार धारा के प्रमुख कवि। जन्म 1919, जन्म स्थान बरेली (उत्तर प्रदेश)। प्रमुख काव्य-कृतिया 'कलरव', स्वास्तिक' चिनगारी', 'जन गीत' ग्रौर 'रिमझिम' ग्रादि। वतमान पता 185, सिविल लाइन्स, बरेली (उ० प्र०)।

78 बलबीरसिंह 'रग'

हिन्दी की गीतविधा के उन्नायक कवियो मे प्रमुख। जन्म 1919, निधन 8 जून 1984, जन्म स्थान नटीला नगला पो० कासगज (एटा) उत्तर प्रदेश। प्रमुख काव्य कृतिया 'प्रवेश गीत' 'साझ सकारे', 'सगम', 'रागरग तथा सिंहासन'।

79 मदनमोहन व्यास

जन्म तिथि 1 दिसम्बर 1919, निधन मई 1983 जन्म स्थान मुरादाबाद। प्रमुख काव्य-सकलन 'भाव तेरे शब्द मेरे' तथा 'झकार', स्थायी पता पचपेडा, कठघर, मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश)।

80 पोद्दार रामावतार 'अरुण'

वतमान पीढ़ी की गीत विधा के ऊर्जस्वित कवि । जन्म 1922, जन्म स्थान समस्तीपुर (दरभगा) बिहार । प्रमुख काव्य कृतिया 'विद्यापति', 'मूर श्याम , 'कोश', 'विदेह', 'कालिदास', 'आम्रपाली', 'अगीता', 'सगीता', 'अशोक पुत्र' 'विश्व मानव', 'वाणाम्बरी', 'महाभारती' आदि, राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री की सम्मानोपाधि से विभूषित तथा बिहार राज्य विधान परिषद के मनोनीत सदस्य, वतमान पता 22, गार्डिनर राड फ्लैट्स, पटना—800001

81 देवराज 'दिनेश'

हिन्दी की नई पीढी के सशक्त कवि । जन्म 1922, जन्म स्थान जाखल (पजाब) । प्रमुख काव्य कृतिया अन्तर्गीत', 'भारत माँ की लारी, 'जीवन और जवानी', पुरवैया के नूपुर', 'गध और पराग' आदि । वतमान पता 1/1, मालवीय नगर, नई दिल्ली ।

82 रामप्रकाश 'राकेश'

जन्म 1 अक्तूबर 1922 जन्म स्थान पिलौना (अलीगढ) । प्रमुख कृतिया 'देश यह वन्दनीय मेरा', 'आजादी का सन्देश', 'स्फुलिंग' और 'विश्वासी', वतमान पता सम्पादक 'दौराला मिल पत्रिका', दौराला (मेरठ)

83 डा० जगदीश वाजपेयी

जन्म माच 1922 । जन्म स्थान लखीमपुर खीरी, उत्तर प्रदेश । हिन्दी की सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओ म रचनाओ का प्रकाशन । सम्प्रति सनातन धम कालेज, मुजफ्फरनगर में हिन्दी विभागाध्यक्ष ।

84 मेघराज 'मुकुल'

हिन्दी और राजस्थानी भाषा के ओजस्वी कवि । जन्म 1923, जन्म स्थान बीकानेर (राजस्थान) । प्रमुख काव्य कृतिया 'सेनाणी', 'जन्म भूमि के गीत', 'लाडले गीत', 'अनुगूंज', 'उमग' आदि, वतमान पता 90, चिन्मय प्रकाशन, चौडा रास्ता, जयपुर (राजस्थान) ।

85 शकर शैलेन्द्र

फिल्म-क्षेत्र के लोकप्रिय गीतकार । जन्म 1923, निधन 1966, जन्म-स्थान रावलपिण्डी (पजाब) । लगभग 100 हिन्दी फिल्मों के गीतकार तथा अभिनेता ।

86 गुलाब खण्डेलवाल

जन्म 1923 जन्म-स्थान गया (विहार) । प्रमुख काव्य-कृतिया कविता', 'चाँदनी', कच और देवयानी तथा 'गाधी भारती' आदि, वतमान पता चौक, प्रतापगढ (उत्तर प्रदेश) ।

87 कन्हैया

जन्म 1923, प्रगतिवादी विचार धारा के उन्नायक एव सम्पोषक कवि तथा पत्रकार । जन्म-स्थान छपरा (विहार) । प्रमुख काव्य कृति अमर मत्यु', वतमान पता बगालीपाडा, लगर टाली, पटना—4

88 डा० एन० चन्द्रशेखरन नायर

केरल प्रदेश के विशिष्ट हिन्दी साहित्यकार । जन्म 29 दिसम्बर, 1923 जन्म-स्थान शास्ताम कोटटा (मध्य केरल) । प्रकाशित कृतिया 'हिमालय गरज रहा ह, तथा 'चिरजीवी' । वतमान पता हिन्दी *विभागाध्यक्ष, महात्मा गाधी कालेज, त्रिवेन्द्रम (केरल) ।*

89 ब्रजेन्द्र गौड

सिने क्षेत्र मे हिन्दी के प्रतिष्ठापक साहित्यकार। जन्म 1925 निधन 1980। जन्म स्थान लखनऊ (उत्तर प्रदेश)। प्रमुख सेवा हिन्दी की लगभग 200 फिल्मो मे सवाद कथा और गीत लिखे।

90 रामावतार त्यागी

जन्म 1925, निधन 1985, जन्म स्थान ककरावली (चन्दौसी), मुरादाबाद। प्रमुख काव्य कृतिया 'नया खून', 'सपने महक उठे' 'गुलाब और बबूल वन', 'मै दिल्ली हू' आदि, वतमान पता डी 65 गुलमोहर पाक नई दिल्ली।

91 गिरिधर गोपाल

जन्म 1925 जन्म स्थान इलाहाबाद (उ० प्र०)। प्रमुख काव्य-कृति "अग्निमा' वतमान पता सूचना केन्द्र, बनारसी बाग, लखनऊ।

92 रमेशचन्द्र झा

जन्म 1925, जन्म स्थान फुलवरिया (चम्पारन), विहार। अनेक काव्य कृतिया प्रकाशित, वतमान पता जिला परिषद प्रेस, मोतीहारी (पूव चम्पारन) विहार।

93 प्रकाशवती

विहार की प्रमुख हिन्दी कवयित्री। जन्म जनवरी, 1926, जन्म स्थान नाथ नगर (भागलपुर), विहार। वतमान पता सम्मेलन भवन, कदम कुआ पटना (विहार)।

94 रामचन्द्र भारद्वाज

राष्ट्रीय भावनाओ के कवि, जन्म वप 1926, जन्म-स्थान—नगवा, सीतामढ़ी (बिहार)। राज्य सभा के सदस्य, ससदीय साहित्य सस्कृति

सगम के सयोजक, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के सचालक मण्डल, बिहार ग्रन्थ अकादमी, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कार्यकारिणी तथा देवघर विद्यापीठ की प्रबन्ध समिति के सदस्य। प्रकाशित काव्य-कृतिया नाइन पायेम्स (अग्रेजी रूपान्तर के साथ नौ कविताए 13वी से 20वी शताब्दी तक की प्रतिनिधि जमन कविताओ के हिन्दी रूपान्तर का सकलन) भारद्वाज की कविताए (प्रेस में)। वतमान पता 1/बी०, सुनहरी बाग, नई दिल्ली।

95 सत्यदेवनारायण अष्ठाना

कवि तथा पत्रकार, जन्म 1926, ग्राम फात्माचक, शिवहर, सीतामढी (बिहार) मे। 1936 से 1947 तक 'बालक' (लहेरिया सराय), 'राष्ट्रवाणी' दैनिक, (पटना) तथा 'हिमालय', मासिक (पटना) आदि के सम्पादकीय विभाग में, सम्प्रति आकाशवाणी, पटना में आलेखक और सम्पादक के रूप मे कायरत, अबतक सात काव्य-पुस्तकें प्रकाशित, वतमान पता आकाशवाणी, पटना।

96 रमानाथ अवस्थी

हिन्दी के लोकप्रिय गीतकार, जन्म 1926, जन्म स्थान ग्राम-लालीपुर (फतेहपुर), उ० प्र०। प्रमुख काव्य-कृतिया 'सुमन सौरभ', 'आग और पराग', 'रात और शहनाई' तथा 'बन्द न करना द्वार' आदि, वतमान पता आकाशवाणी, नई दिल्ली।

97 ज्ञानवती सक्सेना

हिन्दी की कोकिल-कण्ठी कवयित्री। जन्म 1926, जन्म-स्थान बिजनौर (उत्तर प्रदेश)। प्रमुख काव्य कृतिया 'वनवासिनी सीता', 'वीणा के टूटे तार' तथा 'पल्लवा की ओट से' आदि। वतमान पता भरत गली, बरेली (उत्तर प्रदेश)।

98 गोवर्धन प्रसाद 'सदय'

जन्म 1927, जन्म स्थान गया (विहार)। प्रमुख काव्य कृतिया सन्धान' तथा 'मनुहार', वतमान पता उपनिदेशक, सूचना एव जन सम्पक विभाग, उत्तरी छोटानागपुर प्रमडल, विहार सरकार, हजारी वाग, विहार।

99 वीरेन्द्र मिश्र

आधुनिक भाव-वोध के सशक्त गीतकार और कवि, जन्म 1928, जन्म स्थान मुरैना (म० प्र०)। प्रमुख काव्य-कृतिया 'गीतम', 'लेखनी वेला 'अविराम चल मधुवती', 'झुलसा है छायानगर धूप में' तथा धरती गीताम्वरा आदि, वतमान पता कृष्ण कुज, दादा भाई नौरोजी राड, क्रास 3, वम्वई 46

100 स्नेहलता 'स्नेह'

जन्म 1929, जन्म स्थान लखनऊ। प्रमुख काव्य कृतिया 'रजनी गन्धा', तथा क्षितिज के पार', वतमान पता वताशे वाली गली, अमीना वाद, लखनऊ।

101 रामनरेश पाठक

जन्म 1929, जन्म स्थान केतकी (गया), विहार। प्रमुख काव्य कृतिया 'अनामा, 'क्वार की साझ' आदि। वतमान पता अधीक्षक, श्रम विभाग, बिहार सरकार, हजारीवाग, विहार।

102 भारत भूषण

जन्म 1929, जन्म स्थान मेरठ मुख काव्य कृति 'सागर के सीप, वतमान पता 84, ब्रह्मपुरी, मेर (उ० प्र०)।

103 लक्ष्मी त्रिपाठी

जन्म 1930, जन्म-स्थान लखीमपुर खीरी (उ० प्र०)। भारत सरकार के सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय के प्रकाशन विभाग म सम्पादक।

104 राजेन्द्र प्रसाद सिंह

राष्टीय चेतना के कवि तथा उपन्यासकार, जन्म 12 जुलाई 1930 ईसवी का विहार के मुजफ्फरपुर जिले के देरई गाव में। प्रकाशित काव्य-सकलन (1) भूमिका (2) मादिनी (3) दिग्वधू (4) सजीवन कहा (5) उजली कसौटी (6) डायरी के जन्म दिन, हचिनसन (लदन) द्वारा प्रकाशित 20 देशो के समकालीन कविता के सकलन 'मैनी पीपुल मैनी वायसिस' में सम्मिलित एकमात्र हिन्दी के कवि। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा पुरस्कृत।

105 मोहनचन्द्र भटन

जन्म सन 1930, अल्मोडा (उत्तर प्रदेश) में, शिक्षा नैनीताल और वरेली बी० ए०, साहित्यरत्न पिछले तीन दशकों से निरतर काव्य-साधना में रत। देशभर की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविताए प्रकाशित। सप्रति भारत सरकार के प्रकाशन विभाग में सम्पादन काय।

106 मधुर शास्त्री

जन्म 1930, जन्म स्थान बरौठा (अलीगढ)। प्रमुख काव्य-कृतिया 'आधी के पाव और घुघुरू', वतमान पता कमर्शियल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दरियागज, नई दिल्ली 110002

107 डा० बजरग वर्मा

जन्म 1930 जन्म स्थान छपरा (विहार) प्रमुख काव्य-कृतिया 'परछाइया की भीड मे', 'रुनझुन नूपुर बाल' आदि, वतमान पता बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना-4

108 केदारनाथ 'कोमल'

जन्म 1931 पजाब के सगरूर जिले के मलेरकाटला में, शिक्षा एम० ए० (इतिहास हिन्दी आनस,) पजाब विश्वविद्यालय से। कवि तथा बाल साहित्य के

लेखक, काव्य कृतियाँ (1) चौराहे पर (2) कोहरे से निकलते हुए (3) हम सूरज के बच्चे (बाल कविताए) (4) अनोखा न्याय (विदेशी लोक कथाए) लगभग 30 सकलना में कविताए शामिल अग्रेजी के अलावा दस भारतीय भाषाओ में कविताओ का अनुवाद, वतमान पता अनुभाग अधिकारी विश्व विद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली ।

109 डॉ० श्यामसिंह शशि

जन्म 1935, जन्म स्थान हरिद्वार के समीप बहादुरपुर ग्राम, जिला सहारनपुर (उ० प्र०)। प्रतिष्ठित नृवैज्ञानिक तथा सवेदनशील कवि। प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओ तथा विभिन्न शोधपरक अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओ मे साहित्यिक तथा अनुसधानात्मक रचनाए प्रकाशित। हिन्दी तथा अग्रेजी मे पचास से अधिक पुस्तकें प्रकाशित, मुख्य काव्य कृतिया *'लहू के फूल' 'शिलानगर में' (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत) 'एक दधीचि* और यायावरी' तथा 'युद्ध के स्वर प्रेम की लय' स्थायी पता 'अनुसन्धान' डी 51 विवेक विहार दिल्ली 110032

110 गोपीवल्लभ सहाय

जन्म 23 नवम्बर सन 1937 जन्म स्थान पटना। रचनाओ का सभी पत्र पत्रिकाओ में प्रकाशन। सम्प्रति पुलिस मुख्यालय पटना मे 'पुलिस पत्रिका' के सम्पादक, वतमान पता 14/8, गदनी बाग, पटना 2

111 डा० इन्दरराज बैद 'अधीर'

जन्म 25 मई सन् 1941 जन्म स्थान मद्रास (तमिलनाडु)। प्रकाशित कृति 'राष्ट्र मगल'। सम्प्रति आकाशवाणी के मद्रास केन्द्र में हिन्दी-कार्यक्रम के निष्पादक। स्थायी पता 1-बी, बडिवेलपुरम मद्रास 33

112 रवीन्द्र भारती

जन्म 1951, उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले म, दो कविता-सग्रह प्रकाशित, स्वतन्त्र लेखन, वतमान पता उपाध्याय लेन, पश्चिमी लाहानी पुर पटना-3

H 1 Prod/ND/82—3 000—15 10 85—GIPG